Neo Star

अयांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

4

लेखिकाएँ
डॉ० गीता रानी
एम० ए० (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट
पी-एच० डी०

शोभा जैन
(एम.एड.)

Vardhman Books International Pvt. Ltd.
info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Branch Office : Plot No. 16, Sector 10-C, IInd floor,
Vasundhara, Delhi/NCR—201012
Info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com
Toll Free No. 1800-121-9968

© प्रकाशक :

सभी अधिकार प्रकाशकाधीन हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में समाहित संपूर्ण पाठ्य-सामग्री के किसी भी भाग का मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी विधि से संग्रहण, प्रसारण अथवा प्रकाशन पूर्णतया वर्जित है।

यद्यपि इस पुस्तक को लेखन/संपादन/प्रूफ रीडिंग, तथा चित्रांकन की दृष्टि से त्रुटिरहित रखने तथा पाठ्य-सामग्री को शुद्ध रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथापि भूलवश कोई त्रुटि, मशीनी या यांत्रिकी, रह गई हो तो इसके लिए प्रकाशक, लेखक और मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। पुस्तक के सुधार हेतु प्राप्त सुझावों के लिए प्रकाशक/लेखक आभारी रहेंगे। त्रुटियों का परिमार्जन एवं प्राप्त विचारों और सुझावों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा।

संपादक मंडल : वर्धमान बुक्स संपादक मंडल
टाइप सेटिंग एवं चित्रांकन वर्धमान बुक्स
मुद्रक वर्धमान प्रिंट लाइन

रजिस्टर्ड ऑफिस : प्लॉट नं. 2, गोहलमपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज-II, दिल्ली रोड, मेरठ (एन.सी.आर.)-250002

आमुख

प्रस्तुत हिंदी पाठमाला **अयांश** बालकों के मानसिक विकास की प्रक्रिया को रचनात्मक रूप से विविध स्तरों पर अग्रसर करने में एक महत्वपूर्ण शृंखला है।

इसे पूर्णतया संशोधित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020)' के अनुरूप पाठ्यक्रम पर आधारित किया गया है। पाठमाला में विविध विधाओं जैसे- कविता, एकांकी, कहानी संस्करण, पत्र, जीवनी, डायरी, चित्रकथा, लोककथा आदि का समावेश किया गया है। साथ ही 21st Century Skills के सभी निर्देशीत बिन्दु समाहित है।

ज्ञानवर्धन के साथ-साथ रोचकता और चित्रात्मकता इन पुस्तकों को अभिप्रायः पूर्ण बनाते हैं। भाषा की बारीकियों को सहज रूप से समझाने के उद्देश्य से व्याकरण को सहज रूप में समाहित किया गया है।

भाषा के सभी कौशलों जैसे– 'पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना, आदि का विकास हो सके, इस उद्देश्य को इस पाठमाला की रचना के दौरान विशेष लक्ष्य में रखा गया है।

पुस्तक बालकों में चिंतन-मनन की क्षमता को निश्चित ही विकसित करेगी। साथ ही उनकी अनुभूति क्षमता भी गहन हो सकेगी।

स्वयं ही संवेदना की आंदोलित भावभूमि हमारे दावों का समर्थन करेगी। आदरणीय अध्यापक बंधुओं और विद्वत्जनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

—लेखिकाएँ व प्रकाशक

विषय-सूची

1. प्रेम हमारा धर्म बने (कविता) 5
2. सच्ची पढ़ाई (दैनिक प्रसंग) 10
   - खेल नकल का (चित्रकथा) 16
3. द्रौपदी की भूल (दैनिक प्रसंग) 19
4. हिमालय (कविता) 27
5. अब्दुल कलाम की कलम से (आत्मकथा) 31
6. अहिंसा की शक्ति (निबंध) 39
7. पेड़ का दर्द (कविता) 46
8. सावन का एक दिन (दैनिक प्रसंग) 52

   एक पत्र (पत्र) पठन हेतु 58
9. मैंने हँसना सीखा है (कविता) 60
   - आओ झूलें (चित्रकथा) 66
10. इस हाथ ले, उस हाथ दे! (कहानी) 68
11. न्यूटन की गाथा (कविता) 79

    मूँगफली (लेख) पठन हेतु 85
12. विश्व गुरु - भारत (कहानी) 87

    काश! समझते मम्मी-पापा (कविता) पठन हेतु 93
13. दोहे व पद (दैनिक प्रसंग) 95
14. बहादुर योद्धा : भीम (कहानी) 100
    - दया की देवी (चित्रकथा) 107

    प्रश्न पत्र-I 109

    प्रश्न पत्र-II 111

1 प्रेम हमारा धर्म बने

दूसरों के साथ सज्जनता का व्यवहार करने वाले ही सच्चे मानव कहलाने के अधिकारी हैं–

अध्यापन संकेत

- बच्चों को प्रेम व त्याग का महत्व समझाएँ तथा बताएँ कि उन्हें लड़ाई तथा झगड़े से दूर रहना चाहिए।

(कविता)

- प्रस्तुत कविता में जीवन को उच्च ध्येय की ओर मोड़ने का संकल्प किया गया है।

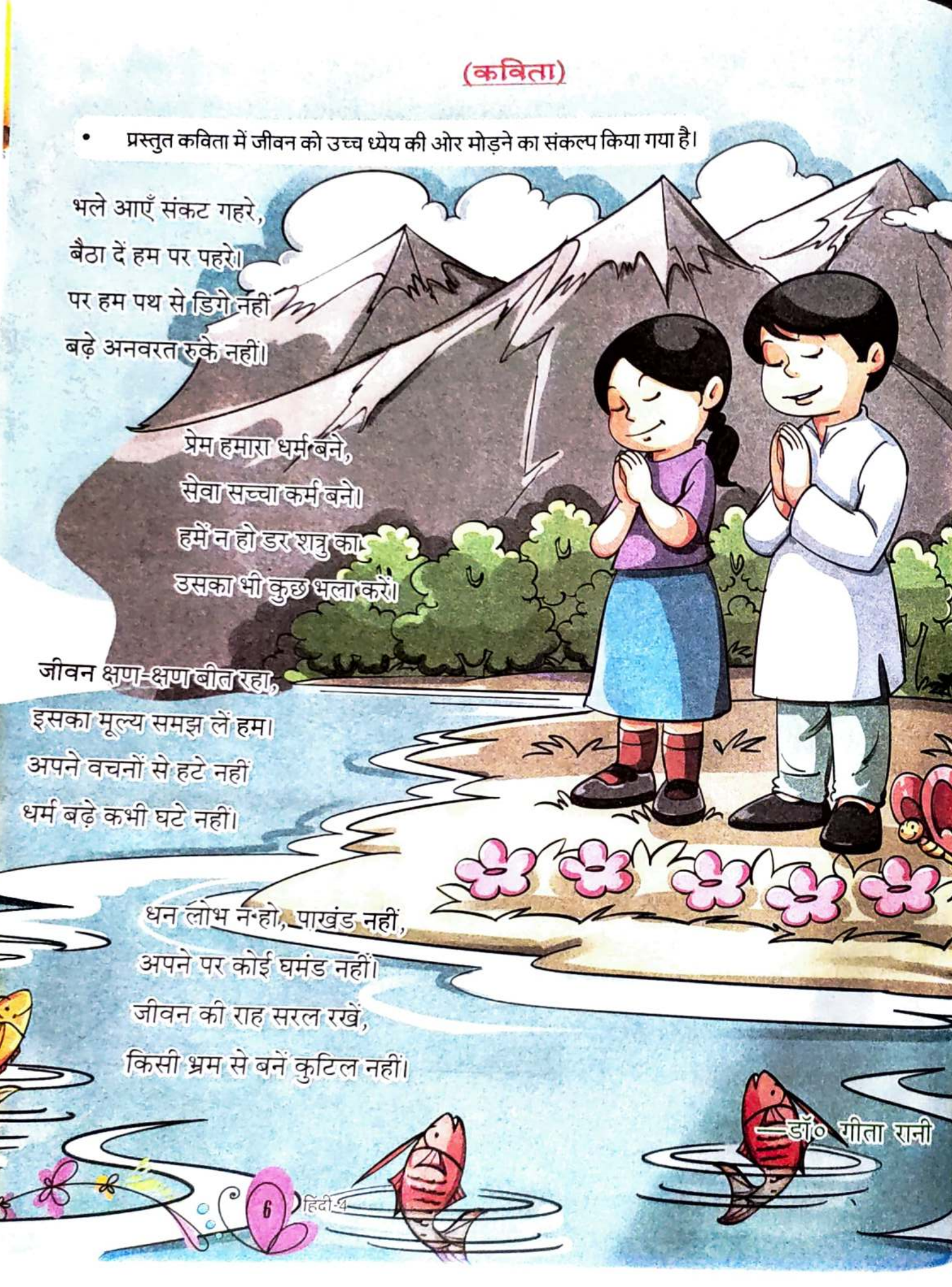

भले आएँ संकट गहरे,
बैठा दें हम पर पहरे।
पर हम पथ से डिगे नहीं
बढ़े अनवरत रुके नहीं।

प्रेम हमारा धर्म बने,
सेवा सच्चा कर्म बने।
हमें न हो डर शत्रु का
उसका भी कुछ भला करें।

जीवन क्षण-क्षण बीत रहा,
इसका मूल्य समझ लें हम।
अपने वचनों से हटे नहीं
धर्म बढ़े कभी घटे नहीं।

धन लोभ न हो, पाखंड नहीं,
अपने पर कोई घमंड नहीं।
जीवन की राह सरल रखें,
किसी भ्रम से बनें कुटिल नहीं।

—डॉ० गीता रानी

शब्द-अर्थ

संकट - मुसीबत; अनवरत - लगातार; पाखंड - दिखावटी व्यवहार; घमंड - गर्व; भ्रम - धोखा; कुटिल - दुष्ट।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) हमें बढ़ते रहना चाहिए–

(i) कभी-कभी ( ) (ii) अनवरत ( )

(ख) हमारे जीवन में नहीं होना चाहिए–

(i) घमंड और पाखंड ( ) (ii) प्रेम और सत्य ( )

(ग) अपने वचनों से–

(i) हट जाना चाहिए ( ) (ii) नहीं हटना चाहिए ( )

(घ) हमें नहीं बनना है–

(i) सरल ( ) (ii) कुटिल ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

प्रेम हमारा .....।

..... कर्म बनें।

हमें न डर हो .....।

..... भला करें।

3. सत्य कथनों के आगे ✓ तथा असत्य कथनों के आगे ✗ लगाओ–

(क) हमें संकटों के सामने डरना नहीं चाहिए। ( )

(ख) हमें शत्रु का भला नहीं करना चाहिए। ( )

(ग) हमें प्रेम को अपना धर्म बनाना चाहिए। ( )

(घ) हमें अपने वचनों से हट जाना चाहिए। ( )

(ङ) हमें अपने ऊपर घमंड नहीं करना चाहिए। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) यहाँ किसे धर्म और किसे कर्म बनाने की प्रार्थना की गई?

.....

.....

(ख) हमें किस बात का मूल्य समझना है?

.....

.....

(ग) हमें किस पर घमंड नहीं करना चाहिए?

.....

.....

(घ) शत्रु के प्रति हमारा क्या भाव होना चाहिए?

.....

.....

1. संज्ञा या **सर्वनाम** शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं।

दिए गए शब्दों में से विशेषण शब्दों को छाँटकर उन पर गोला (◯) बनाओ–

(क)	गहरा	संकट	(ख)	कठोर	पहरा
(ग)	दृढ़	निश्चय	(घ)	पक्के	वचन
(ङ)	कोरा	पाखंड			

2. तुक मिलाओ–

(क)	गहरे /	.....	(ख)	पाखंड /	.....
(ग)	धर्म /	.....	(घ)	हटे /	.....

3. दिए गए शब्दों का वर्ण विच्छेद करो–

(क) जीवन ''ज्'+'ई'+'व्'+'अ'+'न्'+'अ'' (ख) अनवरत .....

(ग) कुटिल ..... (घ) सरल .....

(ङ) सच्चा .....

4. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल करो–

(क) धर्म	(i) मरण
(ख) शत्रु	(ii) अधर्म
(ग) जीवन	(iii) कठिन
(घ) मूल्य	(iv) मित्र
(ङ) सरल	(v) अमूल्य

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- **आप भी प्रतिदिन ईश्वर से कुछ प्रार्थना करते होंगे। रटी-रटाई रोज एक सी प्रार्थना के बजाय अपने मन के सच्चे भाव शब्दों में प्रकट करते हुए एक प्रार्थना लिखो–**

हे भगवान .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- **कोई प्रार्थना गीत कक्षा में गाकर सुनाओ।**
- **आपके विद्यालय में कौन सी प्रार्थना प्रतिदिन होती है, बताओ।**

2 सच्ची पढ़ाई

ज्ञान का प्रकाश मन के अंधेरे को दूर करता है।

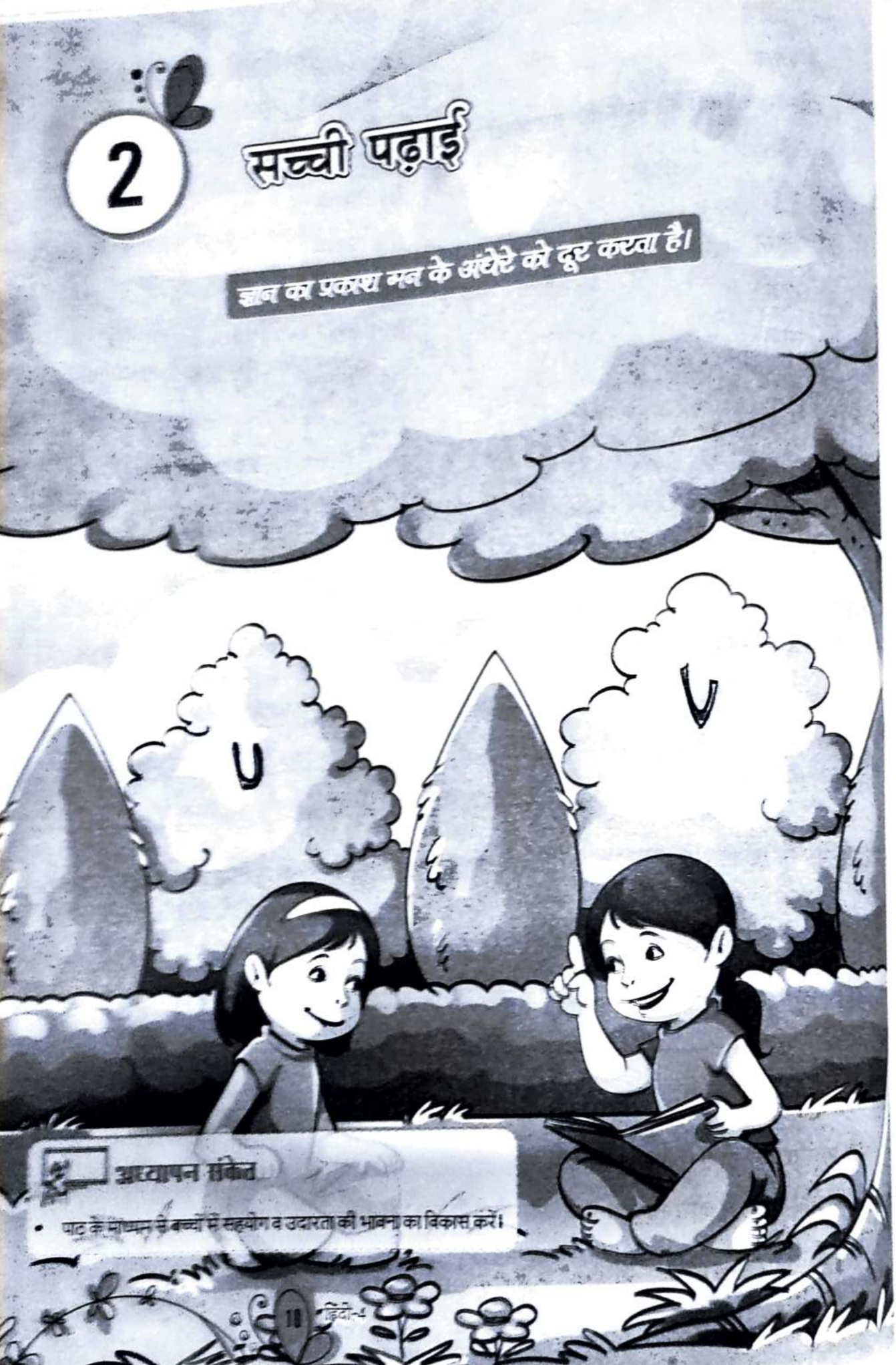

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से बच्चों में सहयोग व उदारता की भावना का विकास करें।

(दैनिक प्रसंग)

- विद्यालय में जाकर पुस्तकें पढ़ना ही सच्ची पढ़ाई नहीं है वरन् मैत्री, सहयोग, सहायता और प्रेम भाव को सीखना भी पढ़ाई ही है।

नमिता कक्षा की सबसे होशियार लड़की थी। कोई भी प्रश्न अध्यापक पूछें, तुरंत जवाब हाजिर। अभी और बच्चे सोच-विचार कर ही रहे होते तब तक नमिता उत्तर दे भी देती।

ठीक इसके विपरीत इंदु से जब भी कुछ पूछा जाता तो वह घबरा जाती और अपनी आँखें नीची करके खड़ी हो जाती। कभी-कभी तो उसे जोरों से डाँट भी पड़ती, तब इंदु रोने लगती। नमिता को यह देखकर अच्छा नहीं लगता जबकि कुछ अन्य बच्चे इंदु को धीमी आवाज में 'बुद्धूराम', 'फिसड्डी' कहकर उसकी हँसी भी उड़ाते।

एक दिन आधी छुट्टी के समय नमिता ने देखा कि इंदु उदास और अकेली विद्यालय के लॉन की बेंच पर बैठी है। उसका टिफिन भी उसके पास बंद पड़ा था।

"तुमने लंच क्यों नहीं किया?" नमिता ने पूछा

"मन नहीं था।" इंदु ने धीमे से कहा।

"नहीं-नहीं, तुम्हारी मम्मी कितने प्यार से तुम्हारे लिए लंच बनाकर देती है। यदि तुम उसे नहीं खाओगी तो उन्हें दुख होगा और तुम भी कमजोरी अनुभव करोगी।"

"मम्मी के प्यार को तो मैं जानती हूँ पर कक्षा में जब बच्चे मेरी हँसी उड़ाते हैं तो मेरा मन दुखी हैं।" इंदु रुआँसी सी बोली।

"वे बहुत गलत करते हैं पर तुम फिक्र न करो, मैं तुम्हारी सहायता करूँगी....." नमिता ने कह

"सच, तब तो मेरी सारी मुश्किलें हल हो जाएँगी और जब कक्षा की सबसे होशियार लड़की मे बन जाएगी तो और बच्चों की हिम्मत ही नहीं होगी मुझे कमजोर समझने की।"

"नहीं, नहीं मैं कोई होशियार नहीं हूँ, हाँ, ध्यान देकर पढ़ने से कुछ प्रश्नों का जल्दी उत्तर दे तुम भी ऐसा कर पाओगी।" नमिता ने कहा।

"सचमुच तुम तो परियों जैसी हो गुणवान और दयालु....." इंदु बोली। "देखो सच्ची पढ़ाई वही जिसमें हम दूसरों को भी आगे बढ़ाएँ...मैंने पढ़ाई की किताबों के अलावा भी और अच्छी-अच्छी बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं, उन सभी में दूसरों की सहायता व प्यार से मिल-जुलकर रहने की शिक्षा दी गई है।

"सचमुच पढ़ने का शौक निराला है....." इंदु ने कहा।

"हाँ, आजकल बच्चे मोबाइल पर गेम आदि खेलकर दिल बहलाते हैं। इससे उनके दिमाग का सही विकास नहीं होता और उन्हें अच्छे विचार भी नहीं मिलते।" नमिता ने कहा।

"ठीक है मैं भी अब खूब पुस्तकें पढ़ूँगी। पर आओ, हम दोनों पहले मिलकर लंच करते हैं।"

"ठीक है" नमिता ने कहा और दोनों टिफिन खोलकर खाने लगीं।

शब्द-अर्थ

जवाब - उत्तर; हाजिर - उपस्थित; विपरीत - उल्टा; हिम्मत - ताकत; दयालु - दया दिखाने व
रुआँसी - रोने जैसी; फिक्र - चिंता; गुणवान - योग्य।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) इंदु से जब प्रश्न पूछा जाता तो वह

(i) शरमा जाती ( ) (ii) घबरा जाती ( )

(ख) बच्चे इंदु को कहते थे

(i) फिसड्डी ( ) (ii) सयानी ( )

(ग) नमिता ने इंदु

(i) की सहायता करने का वायदा किया ( ) (ii) से नाराजगी जाहिर की ( )

(घ) इंदु ने नमिता को कहा

(i) चालाक ( ) (ii) दयालु ( )

2. किसने कहा–

(क) "तुमने लंच क्यों नहीं किया?" .....

(ख) "तब तो मेरी सारी मुश्किलें हल हो जाएँगी।" .....

(ग) "मैं कोई होशियार नहीं हूँ।" .....

(घ) "सचमुच पढ़ने का शौक निराला है।" .....

3. सत्य कथनों के आगे ✓ तथा असत्य कथनों के आगे ✗ लगाओ–

(क) अध्यापक के प्रश्न पूछने पर सबसे पहले जवाब इंदु देती। ( )

(ख) इंदु ने अपना लंच कर लिया था। ( )

(ग) नमिता ने इंदु की सहायता करने का वायदा किया। ( )

(घ) पढ़ने का शौक बहुत निराला है। ( )

(ङ) मोबाइल पर गेम खेलने से दिमाग का विकास तीव्र हो जाता है। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कक्षा की सबसे होशियार लड़की कौन थी?

.....

.....

(ख) नमिता को क्या देखकर अच्छा नहीं लगता था?

.....

.....

(ग) नमिता ने इंदु से क्या वायदा किया?

.....

.....

(घ) सच्ची पढ़ाई के बारे में नमिता के क्या विचार थे?

.....

.....

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल करो–

(क) दयालु	(i) अवगुणी
(ख) गुणवान	(ii) सही
(ग) गलत	(iii) कमजोर
(घ) हिम्मती	(iv) निर्दयी

2. बहुवचन लिखो–

(क) पुस्तक –	(ख) बच्चा – .....
(ग) गलती –	(घ) वस्तु – .....
(ङ) कमजोरी –	(च) खूबी – .....

3. अर्थ लिखकर अंतर बताओ–

(क) समान –	(ख) दिशा – .....
सामान –	दशा – .....
(ग) कल –	(घ) कली – .....
काल –	किला – .....

4. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी सही कीजिए–

(क) हौसियार – ..... (ख) पूसतक – .....

(ग) विदयालअ – ..... (घ) कम्मजौरी – .....

(ङ) गुनवान – ..... (च) सच्चमुच – .....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- **आप पढ़ाई में कैसे हैं? क्या आपको भी पढ़ाई में कोई दिक्कत आती है? यदि हाँ, तब आप किससे सहायता लेते हैं? बताओ।**
- **अपने किसी ऐसे मित्र के बारे में एक अनुच्छेद लिखो, जिसे आप आदर्श समझते हो।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

खेल नकल का

(चित्रकथा)

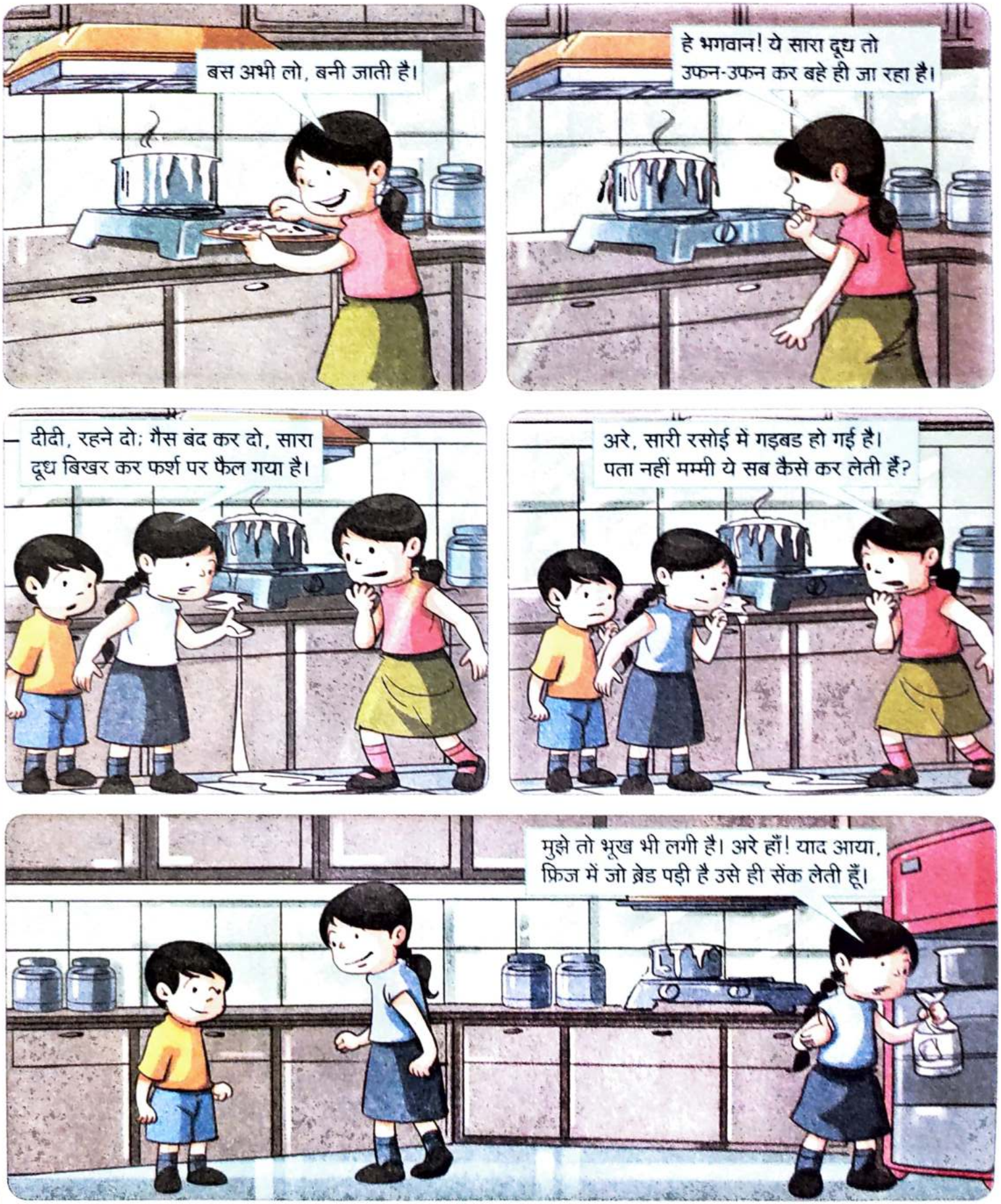
बस अभी लो, बनी जाती है।
हे भगवान! ये सारा दूध तो उफन-उफन कर बहे ही जा रहा है।
दीदी, रहने दो; गैस बंद कर दो, सारा दूध बिखर कर फर्श पर फैल गया है।
अरे, सारी रसोई में गड़बड हो गई है। पता नहीं मम्मी ये सब कैसे कर लेती हैं?
मुझे तो भूख भी लगी है। अरे हाँ! याद आया, फ्रिज में जो ब्रेड पड़ी है उसे ही सेंक लेती हूँ।

दीदी ये क्या, ये तो तवे से चिपककर काला हो गया।

छोड़ो ये सब। भागो, माँ पड़ोस से वापिस आ रही हैं।

चलो-चलो, कहीं छुप जाते हैं।

हे भगवान! ये रसोई का क्या हाल बना दिया?

गलती हो गई माँ, हम जरा आपकी नकल कर के मन बहलाना चाह रहे थे।

3 द्रौपदी की भूल

एक कड़वे वचन के कारण एक महायुद्ध हुआ था, क्या आप जानते हैं?

अध्यापन संकेत

- विद्यार्थियों को महाभारत की कथा संक्षेप में सुनाकर वाणी के महत्व पर चर्चा करें।

(दैनिक प्रसंग)

- पांडवों ने एक अद्‌भुत महल बनवाया जिसके उद्‌घाटन में सभी राजाओं और सुप्रसिद्‌ध व्यक्तियों को बुलाया। उसी अवसर की यह एक घटना है।

युधिष्ठिर – *(हाथ जोड़े)* आइए महाराज! आपका स्वागत है।

एक राजा – वाह! क्या सुंदर भवन है, देखकर मन प्रसन्न हो गया।

अर्जुन – आइए, महाराज विराजिए।

दूसरा राजा – आपने वास्तव में बड़ा भव्य भवन बनाया है और साज-सज्जा के तो कहने ही क्या?

सेवक – *(जलपान की सामग्री लिए)* कृपया लीजिए राजन।

राजा – धन्यवाद।

(सुराहियों में से अंगूरों का मीठा रस परोसती सजी-धजी युवतियाँ)

युवती – राजन, यह शर्बत लीजिए– आशा है आपको पसंद आएगा।

राजा – ठीक है, पर पहले जरा जीभर कर इस महल की सुंदरता तो देख लें।

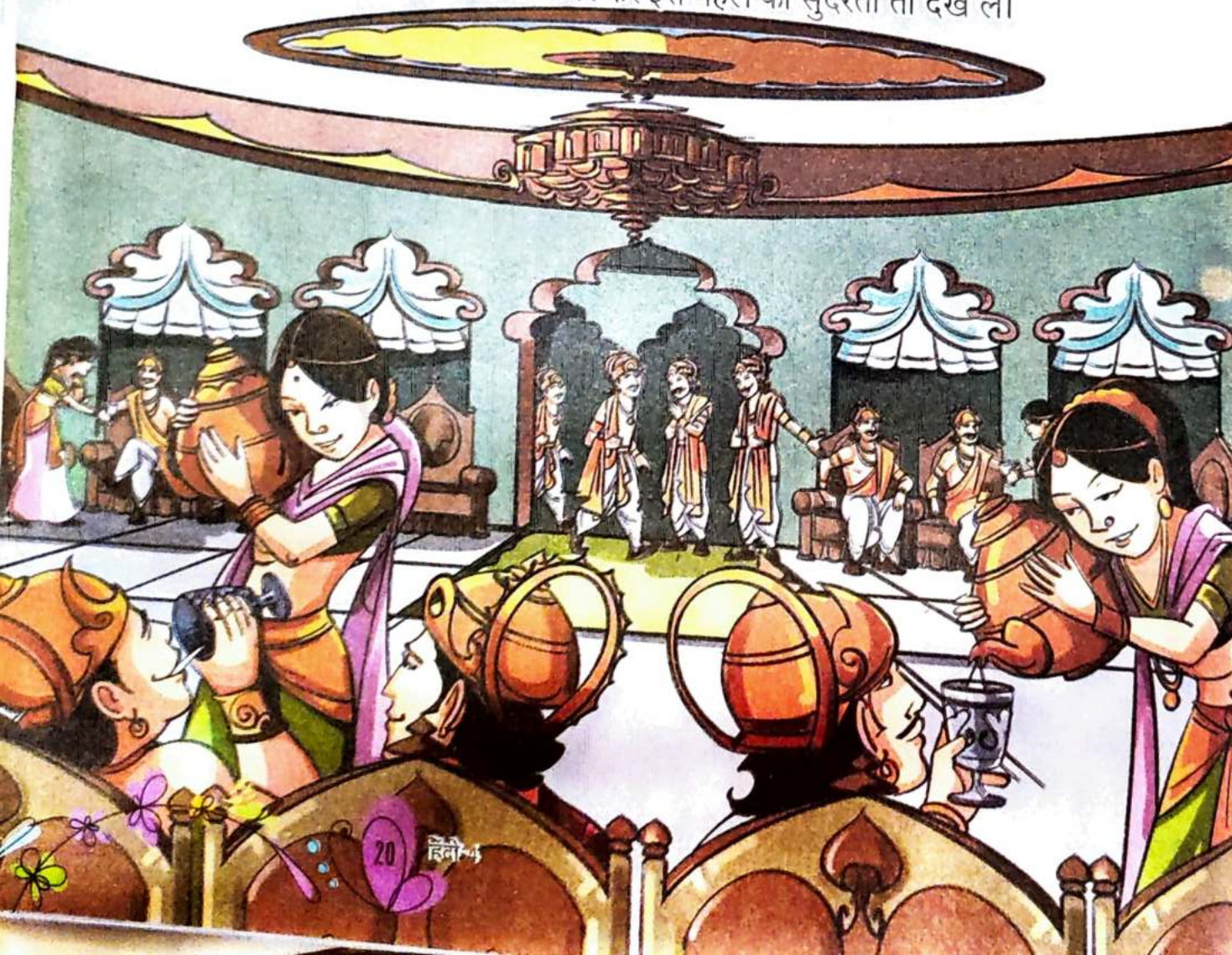

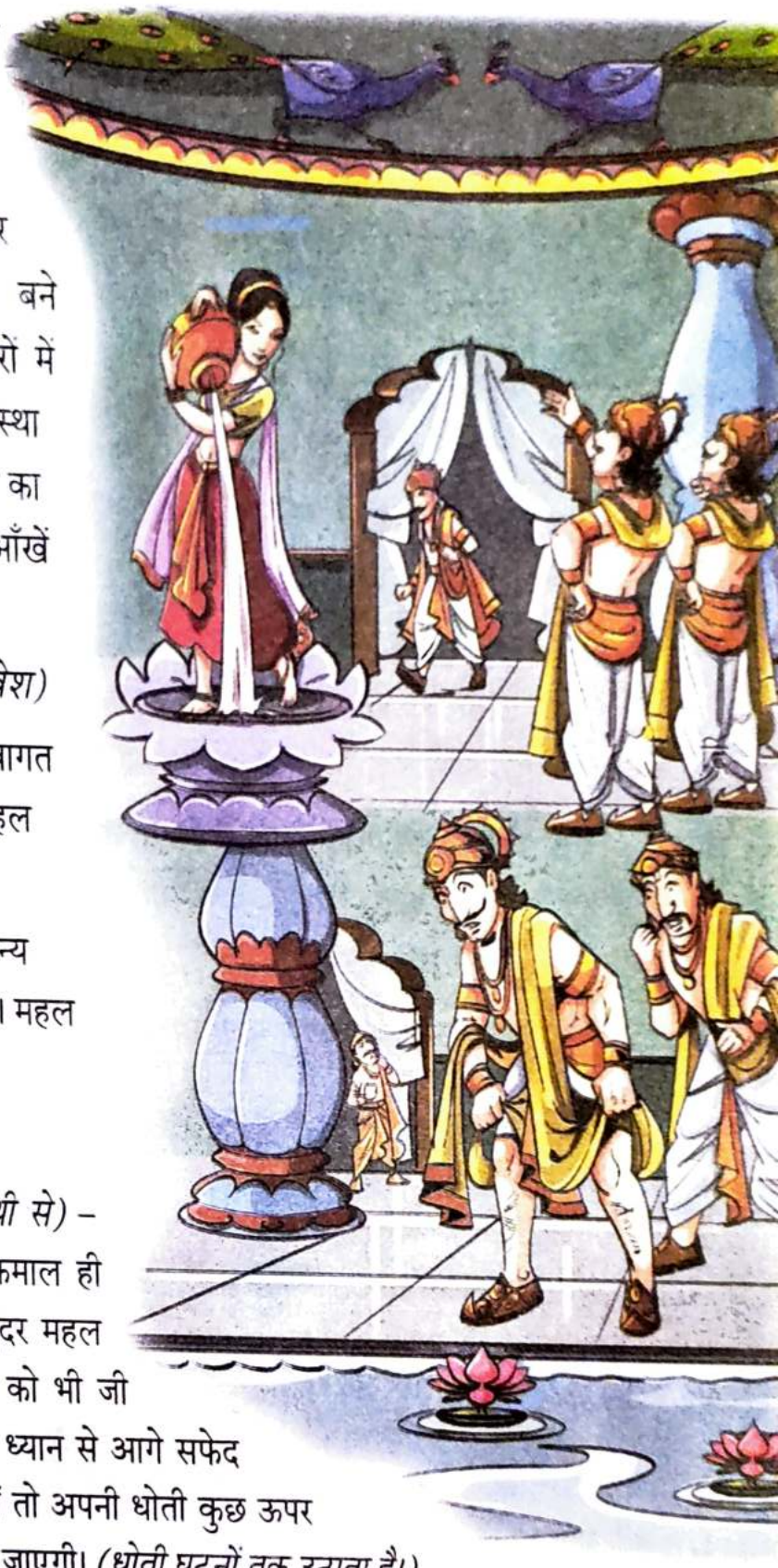

एक राजा (दूसरे राजा से) – वाह, क्या कारीगरी की गई है दरवाजों पर, छत पर बने मोर कितने सजीव हैं और बाहर संगमरमर के बने पशु-पक्षी और फव्वारों में प्रकाश की व्यवस्था कितनी सुंदर हैं। महल का वैभव देखकर आँखें चकाचौंध हो रही हैं।

(तभी दुर्योधन का प्रवेश)

कृष्ण – आइए महाराज, स्वागत है। चलिए आपको महल दिखाएँ।

दुर्योधन – महाराज, आप अन्य अतिथियों को देखिए। महल मैं स्वयं देख लूँगा।

कृष्ण – जैसे आपकी इच्छा।

(दुर्योधन अपने साथी से) – इन पांडवों ने तो कमाल ही कर दिया। इतना सुंदर महल कि पलक झपकाने को भी जी नहीं चाहता। देखो, ध्यान से आगे सफेद फर्श पर पानी है। मैं तो अपनी धोती कुछ ऊपर कर लूँ नहीं तो भीग जाएगी। *(धोती घुटनों तक उठाता है।)*

एक सेवक (दूसरे सेवक से) – महाराज दुर्योधन को पता नहीं कि वहाँ पानी नहीं है कुछ ऐसी कारीगरी की गई है कि पानी दिखाई पड़ता है।

(परकोटे से देखकर द्रोपदी हँसी उड़ाते हुए।)

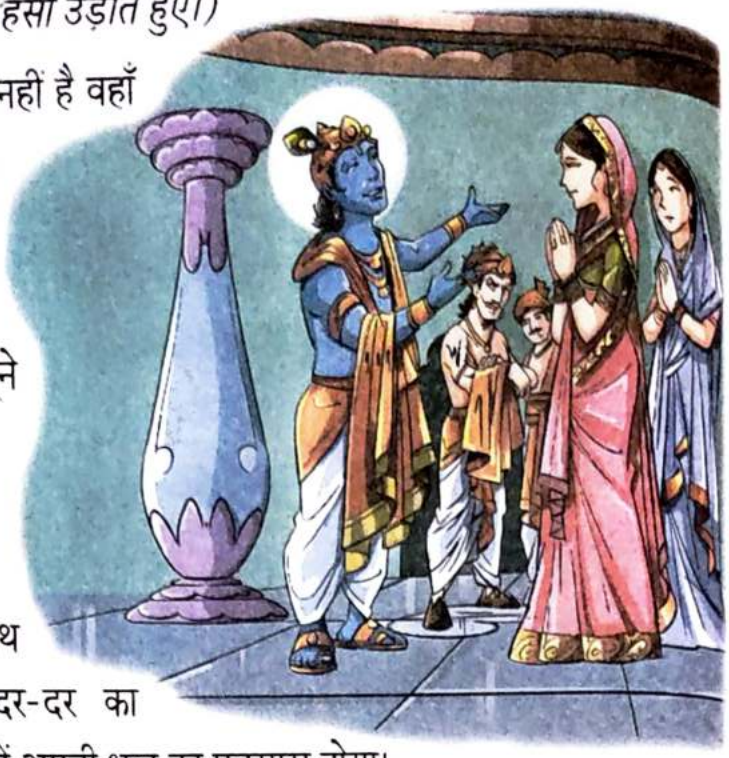

द्रौपदी – देखो ना सखी, जहाँ पानी नहीं है वहाँ भी, इसे पानी दिखता है। आखिर अंधे का बेटा अंधा। *(हँसती है)*

दुर्योधन – *(चिल्लाकर)* क्या कहा तूने 'अंधे का बेटा अंधा'। बहुत घमंड है न तुझे अपनी शानो-शौकत और पतियों पर। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं तुम्हें दर-दर का भिखारी बना दूँगा। तब तुम्हें अपनी भूल का एहसास होगा।

कृष्ण – द्रौपदी तुमने यह ठीक नहीं किया। कभी किसी का उपहास नहीं करना चाहिए। दुर्योधन अपना बदला लिए बिना मानेगा नहीं। तुमने गलत बोलकर अपने सुख-सौभाग्य पर संकट बुला लिया।

(इसी बात पर बाद में महाभारत का युद्ध हुआ जिसमें लाखों लोग मारे गए।)

शब्द–अर्थ

वास्तव - सचमुच; भव्य - शानदार; व्यवस्था - प्रबंध; उपहास - मजाक उड़ाना; सौभाग्य - खुशकिस्मती; एहसास - अनुभव; सजीव - जीते-जागते; शपथ - प्रण; अतिथि - मेहमान।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) अर्जुन ने अतिथि से कहा

(i) बैठ जाओ ( ) (ii) महाराज विराजिए ( )

(ख) अतिथि भवन की

(i) प्रशंसा कर रहे थे ( ) (ii) निंदा कर रहे थे

(ग) द्रौपदी ने दुर्योधन को वचन कहे ( )

(i) कटु ( ) (ii) मधुर

(घ) कृष्ण ने द्रौपदी का ध्यान ( )

(i) उसकी सखियों की ओर दिलाया ( ) (ii) उसकी गलती की ओर दिलाया ( )

2. किसने कहा–

(क) "चलिए आपको महल दिखाएँ।" .....

(ख) "मैं तुम्हें दर-दर का भिखारी बना दूँगा।" .....

(ग) "आखिर अंधे का बेटा अंधा।" .....

(घ) "छत पर बने मोर कितने सजीव हैं!" .....

3. सत्य कथनों के आगे ✓ तथा असत्य कथनों के आगे ✗ लगाओ–

(क) कौरवों ने एक बहुत सुंदर महल बनाया था।

(ख) सजी-धजी युवतियाँ सुराहियों में से अंगूरों का मीठा रस परोस रहीं थी। ( )

(ग) महल का वैभव देखकर सभी की आँखें चकाचौंध हो रहीं थीं। ( )

(घ) दुर्योधन को महल में भूमि के स्थान पर पानी दिखाई दिया। ( )

(ङ) द्रौपदी ने दुर्योधन का उपहास करते हुए कहा, "अंधे का पुत्र अंधा।" ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) युवतियाँ अतिथियों को क्या पीने का निवेदन कर रहीं थीं?

.....

.....

(ख) दुर्योधन ने अपनी धोती घुटनों तक ऊपर क्यों उठा ली?

.....

.....

(ग) द्रौपदी ने दुर्योधन का क्या कहकर उपहास किया?

.....

.....

(घ) कृष्ण ने द्रौपदी को क्या समझाया?

.....

.....

भाषा की बात

1. पढ़ो और समझो–

(क) भवन, सदन, इमारत।

(ख) उपहास, मजाक, खिल्ली।

(ग) भव्य, आलीशान, शानदार।

(घ) शपथ, कसम, प्रण।

2. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग व स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं। दिए गए शब्दों को उचित शीर्षक के नीचे रखो–

सुराही, युवती, भवन, अंधा, सेवक, सामग्री, सौभाग्य
युद्ध, धोती, सुंदरता, प्रकाश, कारीगरी

स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–

(क) सुंदर	(i) छोटा
(ख) प्रसन्न	(ii) निराशा
(ग) बड़ा	(iii) बदसूरत
(घ) आशा	(iv) निर्जीव
(ङ) सजीव	(v) अप्रसन्न

4. **निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–**

(क) राजा – ....राजाओं..........
(ख) पांडव – ....
(ग) व्यक्ति – ....
(घ) महल – ....
(ङ) सेवक – ....
(च) युवती – ....
(छ) अतिथि – ....
(ज) घुटना – ....
(झ) कारीगर – ....
(ञ) भिखारी – ....

5. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–**

(क) सुंदर भवन देखकर मन प्रसन्न हो गई।
....

(ख) देखो ध्यान से आगे फर्श सफेद पर पानी हैं।
....

(ग) कुछ ऐसा कारीगरी की गया हैं कि पानी दिखाई देती है।
....

(घ) मैंने शपथ लेता हूँ कि मैंने तुम्हें दर-दर का भिखारी बना देगा।
....

(ङ) महाभारत का युद्ध में लाखों लोग मारा गए।
....

6. **अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) दर-दर का भिखारी – ....
....

(ख) शपथ लेना – ....
....

(ग) आँखें चकाचौंध होना – ....
....

(घ) पलक झपकाना – ....
....

कुछ करने के लिए

- कुछ बच्चे प्रायः किसी शारीरिक कमजोरी से ग्रस्त व्यक्ति का उपहास करते हैं, यह अत्यंत अनुचित है। यदि आप किसी को ऐसा करते देखें तो उसे तुरंत रोकें।

  महाभारत के पात्रों के नाम पता करके लिखो

  ....

  ....

  ....

  ....

  ....

- कागज पर रेखाओं द्वारा एक घर का चित्र बनाओ और उसमें लिखो कि कहाँ क्या है जैसे–

  बैठक बॉलकनी रसोई

  विश्राम गृह स्नान गृह लॉन

  पढ़ने का कमरा आदि।

4 हिमालय

प्रकृति के द्वारा हमें बहुत से उपहार दिए गए हैं। क्या आप उनका ध्यान रखते हैं?

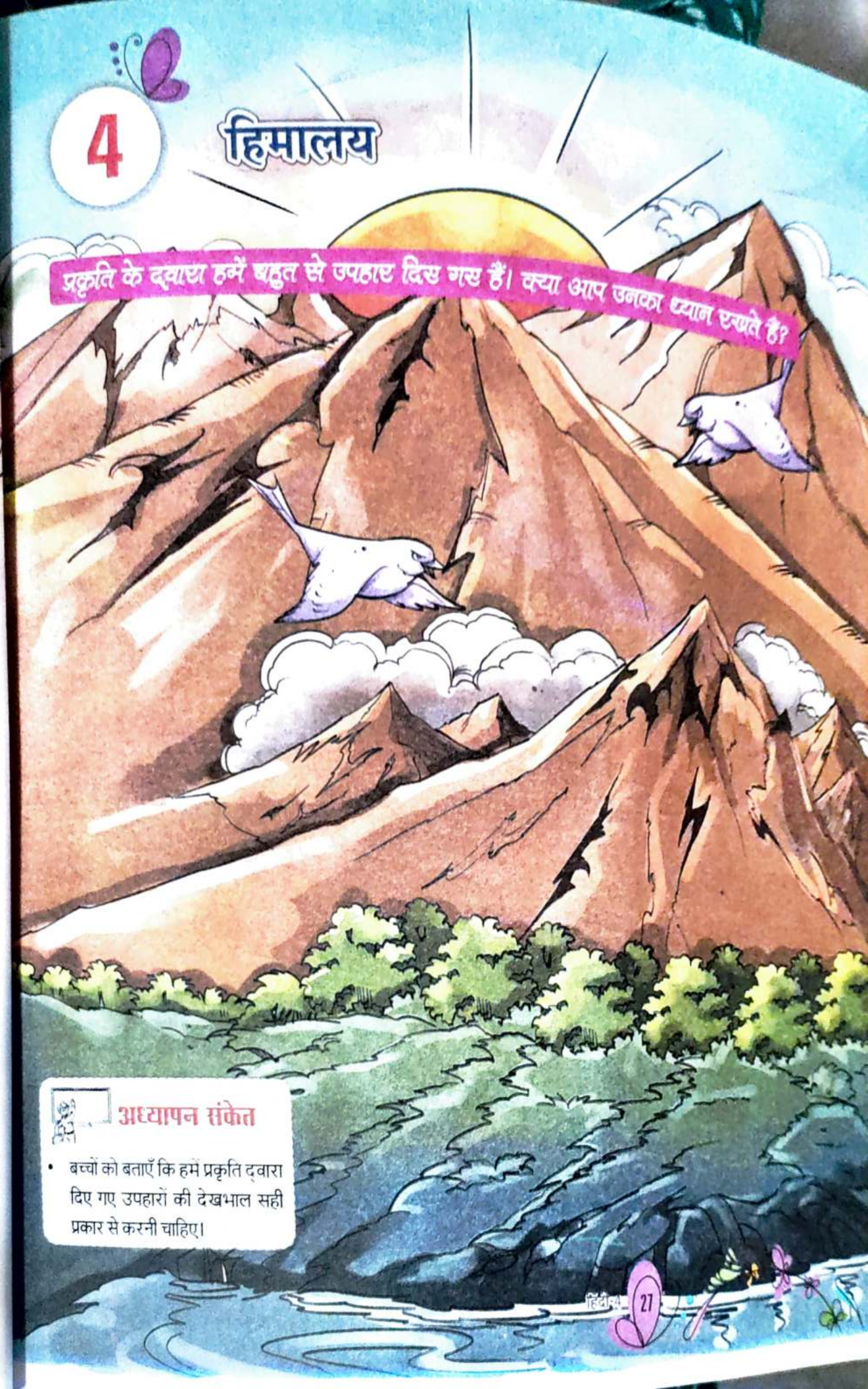

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि हमें प्रकृति द्वारा दिए गए उपहारों की देखभाल सही प्रकार से करनी चाहिए।

(कविता)

- प्रकृति की प्रत्येक वस्तु हमें कोई-न-कोई सीख अवश्य देती है जैसा इस कविता के द्वारा समझाया गया है।

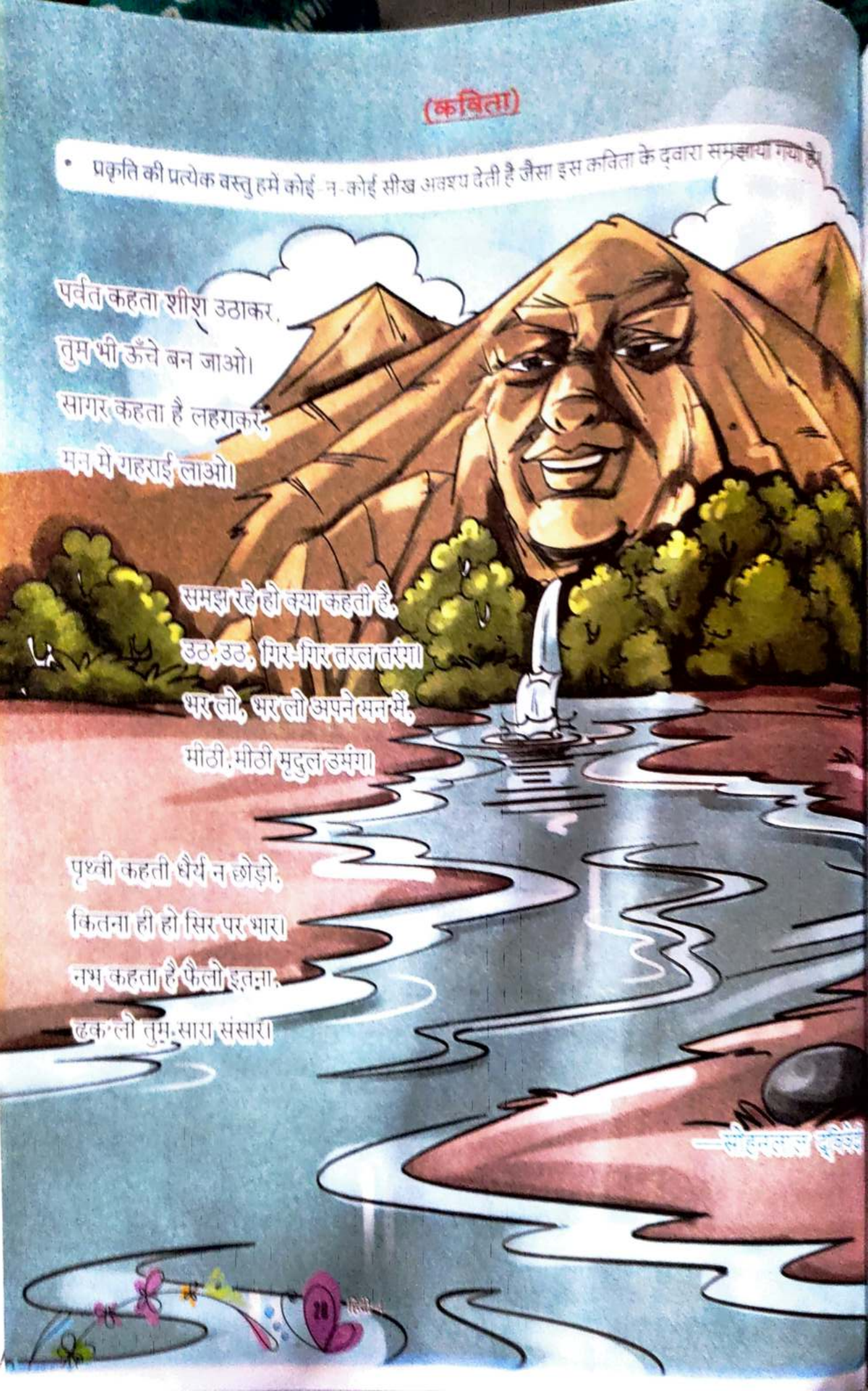

शब्द-अर्थ पर्वत - पहाड़; शीश - सिर; सागर - समुद्र; तरल - द्रव; तरंग - लहर; मृदुल - कोमल; पृथ्वी - धरा; धैर्य - धीरज; भार - वजन; नभ - आकाश; संसार - जग।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) हमें शीश उठाने के लिए कहता है–

(i) पर्वत ( ) (ii) समुद्र ( )

(ख) धैर्य न छोड़ने के लिए कहती है–

(i) वायु ( ) (ii) पृथ्वी ( )

(ग) नभ किसको ढकने के लिए कहता है?

(i) संसार को ( ) (ii) सागर को ( )

2. **कविता की पंक्तियाँ पूरी करो–**

पर्वत कहता ....,

.... बन जाओ।

सागर कहता ....,

.... गहराई लाओ।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) पर्वत हमें क्या सीख देता है?

....

....

(ख) सागर क्या कहता है?

....

....

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–

(क) ऊँचा	(i) उथला
(ख) गहरा	(ii) खट्टी
(ग) उठना	(iii) नीचा
(घ) मीठी	(iv) गिरना

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो–

(क) पर्वत – ....

(ख) सागर – ....

(ग) पृथ्वी – ....

(घ) नभ – ....

(ङ) संसार – ....

3. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) सागर – .....

(ख) तरंग – .....

(ग) उमंग – .....

(घ) धैर्य – .....

(ङ) भार – .....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।
- आप प्रकृति से क्या सीखते हैं? बताओ।

5 अब्दुल कलाम की कलम से

(आत्मकथा)

- अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति रहे हैं, उनका प्रारंभिक जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण रहा है, यहाँ वे अपने बारे में आपको कुछ महत्वपूर्ण बातें बता रहे हैं।

"मैं यह बहुत गर्व के साथ तो नहीं कह सकता कि मेरा जीवन किसी के लिए आदर्श बन सकता है, लेकिन जिस तरह मेरी नियति ने आकार ग्रहण किया, उससे किसी गरीब बच्चे को सांत्वना अवश्य मिलेगी, जो किसी छोटी सुविधाहीन सामाजिक स्थिति में जी रहा हो। शायद मेरी कहानी उसे निराशा की भावना से मुक्त करने में सहायक हो।"

बच्चो! 15 अक्टूबर 1931, में मेरा जन्म हुआ था तमिलनाडु के रामेश्वरम् में। मेरे गाँव का नाम था- धनुषकोडी। मेरे पिता का नाम– जैनुलाब्दीन और माता का नाम आशीम्मा था। मेरा पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। मेरे पिता नावें बनाते थे और मछुआरों को किराए पर देते थे। हम एक संयुक्त परिवार में रहते थे और घर का गुज़ारा बड़ी मुश्किल से ही हो पाता था। मेरे पिता जी की लगन, उनके ऊँचे विचारों और उनकी कर्मठता ने मुझे प्रारंभ से ही अत्यधिक प्रभावित किया और अपने व्यक्तित्व में ये गुण मैंने आत्मसात् भी किए।

अपनी माँ के बारे में क्या कहूँ। उनके प्रेम त्याग, और विश्वास ने मुझे सदैव शक्ति दी है। उनके प्रति अपनी इन भावनाओं को मैंने अपनी एक कविता में पिरो दिया है, जो मेरी पुस्तक 'विंग्स ऑफ फ़ायर' के प्रथम पृष्ठ पर ही मुद्रित है।

"जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय, आस्था तथ सकारात्मकता, इन तीनों शक्तियों को भली-भाँति समझ लेना चाहिए।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ मेरे शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने मुझसे कही थी। पाँच वर्ष की आयु में मैंने 'पंचाय प्राथमिक विद्यालय, रामेश्वरम्' से अपनी शिक्षा-दीक्षा आरंभ की। कई बार ऐसी आर्थिक कठिनाइ भी सामने आईं कि मुझे समाचार-पत्र बेचने का काम भी करना पड़ा। 1958 ई० में मैंने 'मद्रा

5 अब्दुल कलाम की कलम से

अध्यापन संकेत

- बच्चों को डॉ अब्दुल कलाम के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए कहें।

(आत्मकथा)

- अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति रहे हैं, उनका प्रारंभिक जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण रहा है, यहाँ वे अपने बारे में आपको कुछ महत्वपूर्ण बातें बता रहे हैं।

"मैं यह बहुत गर्व के साथ तो नहीं कह सकता कि मेरा जीवन किसी के लिए आदर्श बन सकता है, लेकिन जिस तरह मेरी नियति ने आकार ग्रहण किया, उससे किसी गरीब बच्चे को सांत्वना अवश्य मिलेगी, जो किसी छोटी सुविधाहीन सामाजिक स्थिति में जी रहा हो। शायद मेरी कहानी उसे निराशा की भावना से मुक्त करने में सहायक हो।"

बच्चो! 15 अक्टूबर 1931, में मेरा जन्म हुआ था तमिलनाडु के रामेश्वरम् में। मेरे गाँव का नाम था- धनुषकोडी। मेरे पिता का नाम- जैनुलाब्दीन और माता का नाम आशीम्मा था। मेरा पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। मेरे पिता नावें बनाते थे और मछुआरों को किराए पर देते थे। हम एक संयुक्त परिवार में रहते थे और घर का गुज़ारा बड़ी मुश्किल से ही हो पाता था। मेरे पिता जी की लगन, उनके ऊँचे विचारों और उनकी कर्मठता ने मुझे प्रारंभ से ही अत्यधिक प्रभावित किया और अपने व्यक्तित्व में ये गुण मैंने आत्मसात् भी किए।

अपनी माँ के बारे में क्या कहूँ। उनके प्रेम त्याग, और विश्वास ने मुझे सदैव शक्ति दी है। उनके प्रति अपनी इन भावनाओं को मैंने अपनी एक कविता में पिरो दिया है, जो मेरी पुस्तक 'विंग्स ऑफ फ़ायर' के प्रथम पृष्ठ पर ही मुद्रित है।

"जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय, आस्था तथा सकारात्मकता, इन तीनों शक्तियों को भली-भाँति समझ लेना चाहिए।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ मेरे शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने मुझसे कही थी। पाँच वर्ष की आयु में मैंने 'पंचायत प्राथमिक विद्यालय, रामेश्वरम्' से अपनी शिक्षा-दीक्षा आरंभ की। कई बार ऐसी आर्थिक कठिनाइयाँ भी सामने आईं कि मुझे समाचार-पत्र बेचने का काम भी करना पड़ा। 1958 ई० में मैंने 'मद्रास

इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की पढ़ाई पूरी की। मुझे भौतिकी से बहुत प्रेम था और मैं एक पायलट बनना चाहता था, लड़ाकू विमान उड़ाना चाहता था। मैंने उसकी परीक्षा भी पास की, परंतु उन्हें आठ व्यक्तियों को ही चुनना था। मैंने उनमें नौंवा स्थान प्राप्त किया था। यहीं से मैंने अपनी दिशा बदल ली। जब तक आप अपना सौ प्रतिशत योगदान नहीं देते हैं। तब तक आप सफल नहीं हो सकते हैं और आपके द्वारा दिया गया सौ प्रतिशत योगदान आपको कभी असफल नहीं होने देगा।

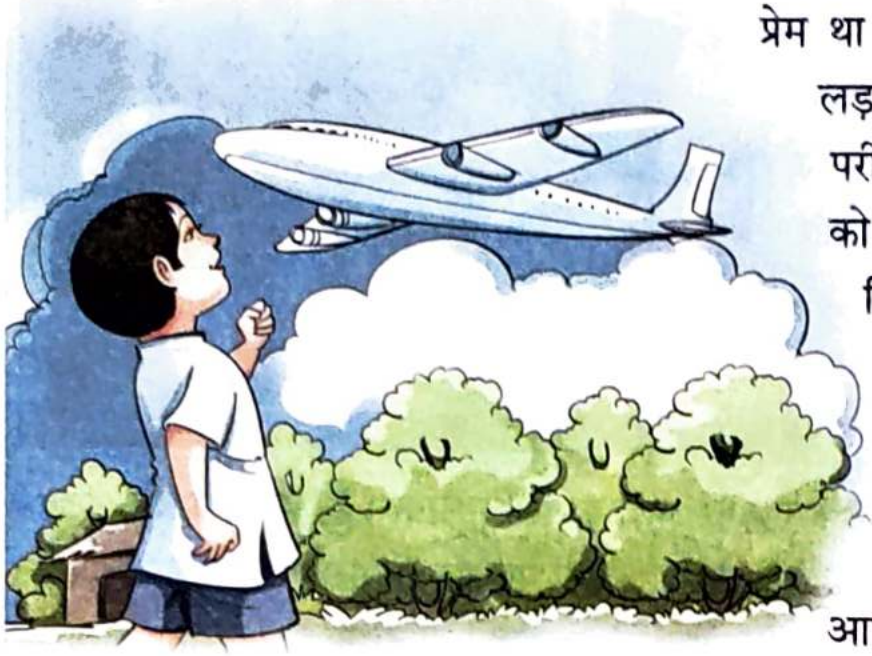

1962 ई० में मैं 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' से जुड़ा और मैंने परियोजना महानिदेशक का पद सँभाला। भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपास्त्र (एस० वी० एल० तृतीय) बनाया। 'पृथ्वी' और 'अग्नि' जैसे प्रक्षेपास्त्र स्वदेशी तकनीक से बनाए। अपने देश को 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब' का सदस्य बनवाने का जो स्वप्न मैंने देखा था, वह पूर्ण हुआ। पोखरण में परमाणु परीक्षण करके भारत ने परमाणु-शक्तिसंपन्न राष्ट्रों में अपनी जगह बनाई।

अपने देश को सर्वशक्तिसंपन्न बनाने का मेरा सपना पूरा हुआ।

सपने वे नहीं होते, जो आप नींद में देखते हैं। सपने तो वे होते हैं, जो आपको नींद ही नहीं आने देते।

समय के साथ मेरी जिम्मेदारियाँ बढ़ीं। पहले 'भारतीय रक्षा मंत्रालय' में मुझे वैज्ञानिक–सलाहकार बनाया गया, फिर वर्ष 2002 में देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने का मुझे सौभाग्य प्राप्त

हुआ। मैं राजनीति से अधिक देर तक बँधकर नहीं रह सकता था। अत: वर्ष 2007 में अपने कार्यकाल के समाप्त होते ही मैंने दोबारा राष्ट्रपति न बनने का निर्णय लिया। मैंने सदैव भारत को विश्व में अग्रणी बनाने का स्वप्न देखा था और इसके लिए मैं सदैव दृढ़-प्रतिज्ञ भी रहा। आपको पता होना चाहिए कि आत्मसम्मान हमेशा आत्मनिर्भरता के साथ जुड़ा होता है।

मैं भारत को हमेशा आत्मनिर्भर देखने का इच्छुक रहा हूँ। आज हम शक्तिसंपन्न हैं, तो लोग हमें गीदड़-भभकियाँ देकर डरा नहीं सकते। हमारी ठोस उपलब्धियाँ ही हमारी पहचान हैं। इसलिए जो हमें चाहिए, उसके लिए प्रतीक्षा मत करो, संघर्ष करो, क्योंकि प्रतीक्षा करने वालों को तो उतना ही हिस्सा मिलता है, जितना हिस्सा, संघर्ष करने वाले छोड़ देते हैं। अगर आप पढ़ाई करने में कमज़ोर हो अथवा लोग ऐसा समझते हो, तो भी हार न मानो, हर तरह से प्रयास करो। यह भी संभव है कि किसी अन्य क्षेत्र में लगने योग्य बेहतरीन दिमाग तुम्हारे पास हो।

एक अच्छी किताब सौ अच्छे दोस्तों के बराबर होती है।

मैं भी आपके लिए, अपनी पीढ़ियों के लिए ऐसी किताबें लिखना चाहता था, जो हमेशा के लिए प्रेरणादायक बन सकें। मैंने इसके लिए प्रयास भी किया और अनेक पुस्तकें लिखीं, जैसे- 'इंडिया 2020 : ए विज़न फॉर द न्यू मिलेनियम' 'माइ जर्नी', 'इग्नाटिड माइडंस– अनलीशिंगदद पॉवर विदिन इंडिया', 'विंग्स ऑफ फायर'आदि। अपने देश भारत में मुझे बहुत मान-सम्मान मिला है। मुझे 'भारत रत्न', 'पद्म विभूषण, 'पद्म भूषण' जैसे कई सम्मान प्रदान किए गए। अनेकों विश्वविद्यालयों ने मुझे 'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि दी।

बच्चो। संगीत में मुझे विशेष रुचि है। मुझे कर्नाटक भक्ति संगीत सुनना बहुत अच्छा लगता है। कभी-कभी 'वेन्नई' वाद्य बजाता हूँ। बचपन से ही अपने देश की मिली-जुली संस्कृति से मुझे बहुत प्रेम रहा है। मैंने 'गीता' का अध्ययन-मनन पूरे मनोयोग से किया है। बच्चों से अपने विचारों का आदान-प्रदान करना मुझे सदैव भाता रहा है। मैं सभी भारतीयों से यही कहना चाहता हूँ कि आत्मविश्वास और कर्मठता हमारी सफलता को जड़ से मिटाने के लिए परमावश्यक औषधियाँ हैं।

जय हिंद।

27 जुलाई 2015 को शिलांग में डॉक्टर अब्दुल कलाम का निधन हो गया। उस समय वह 'भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग' में एक व्याख्यान दे रहे थे। इस कर्मयोगी की मृत्यु भी काम करते हुए ही हुई। वे लगभग 84 वर्ष के थे।

शब्द-अर्थ

सांत्वना - दिलासा; भौतिकी - फिज़िक्स; सलाहकार - सलाह देने वाला; गीदड़-भभकी - झूठ-मूठ डराना; मनोयोग - मन लगाकर; औषधियाँ - दवाइयाँ; आत्मसात् - अपनाना; प्रक्षेपास्त्र - मिसाइल; अग्रणी - आगे; प्रयास - प्रयत्न; परमावश्यक - बहुत ज़रुरी; व्याख्यान - भाषण।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) कलाम जी अपनी कहानी सुना रहे हैं ताकि–

(i) कोई अमीर बन सके ( )

(ii) कोई गरीब बच्चा निराशा से बाहर निकले ( )

(ख) कलाम जी के पिताजी बनाते थे–

(i) नावें ( ) (ii) धनुष ( )

(ग) कलाम पहले बनना चाहते थे–

(i) सैनिक ( ) (ii) पायलट ( )

(घ) एक अच्छी किताब को बताया गया है–

(i) सौ अच्छे दोस्तों के बराबर ( ) (ii) दो दोस्तों के बराबर ( )

2. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–

(क) आत्मसम्मान हमेशा ..... से जुड़ा होता है। (धन से / आत्मनिर्भरता)

(ख) सपने तो वे होते हैं जो आपको ..... ही आने नहीं देते। (चैन / नींद)

(ग) वर्ष ..... में कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति बनें। (2010 / 2002)

(घ) कलाम की सहायता से ..... व ..... जैसे प्रक्षेपास्त्र बने। (पृथ्वी, अग्नि/ जल, वायु)

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य कथनों के सामने ✗ लगाओ–

(क) अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। ( )

(ख) कलाम के पिताजी के प्रेम, त्याग और विश्वास ने उन्हें सदैव ही शक्ति दी थी। ( )

(ग) कलाम ने पायलट की परीक्षा में दसवाँ स्थान प्राप्त किया था। ( )

(घ) वर्ष 2002 में कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति बने। ( )

(ङ) 27 अगस्त 2016 को शिलांग में डॉक्टर कलाम का निधन हो गया। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कलाम का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

.....

.....

(ख) शिक्षक सोलोमन ने कलाम को क्या बात कही थी?

.....

.....

(ग) कलाम के अनुसार हम किस दशा में सफल हो सकते हैं?

.....

.....

(घ) हमें जो चाहिए क्या उसे पाने के लिए हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए?

.....

.....

1. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–

(क) स्थिति – ..... (ख) भावना – .....

(ग) मुश्किल – ..... (घ) कविता – .....

(ङ) परीक्षा – ..... (च) सपना – .....

(छ) जिम्मेदारी – ..... (ज) उपलब्धि – .....

(झ) पुस्तक – ..... (ञ) औषधि – .....

2. 'आत्म' उपसर्ग लगाकर शब्द बना है, आत्मसम्मान। इसी प्रकार 'आत्म' उपसर्ग जोड़कर लिखो–

(क) आत्म + निर्भरता – .....

(ख) आत्म + विश्वास – .....

(ग) आत्म + हत्या – .....

(घ) आत्म + ग्लानि – .....

(ङ) आत्म + बोध – .....

3. 'हीन' प्रत्यय जोड़कर शब्द बना है सुविधाहीन। इसी प्रकार 'हीन' प्रत्यय जोड़कर लिखो–

(क) शक्ति + हीन – .....

(ख) तेज + हीन – .....

(ग) बल + हीन – .....

(घ) सिद्धांत + हीन – .....

(ङ) धन + हीन – .....

4. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

(क) समाजिक – ..... (ख) नीराशा – .....

(ग) परांरभ – ..... (घ) अनूकूल – .....

(ङ) अन्तरिक्श – ..... (च) सदसय – .....

(छ) राज्जनिति – ..... (ज) यौगय – .....

(झ) रूचि – ..... (ञ) करमठता – .....

5. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाओ–

(क) सांत्वना – .....

(ख) प्रयास – .....

(ग) मनोयोग – .....

(घ) व्याख्यान – .....

कुछ करने के लिए

- **इस पाठ से आपको जो प्रेरणा मिली है, उसका वर्णन करो।**

.....

.....

.....

.....

.....

- **आप बड़े होकर क्या बनने का सपना देखते हैं, लिखो।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- **भारत के किन्हीं पाँच राष्ट्रपतियों के चित्र एकत्र करके यहाँ चिपकाओ। चित्रों के नीचे उनके नाम भी लिखो–**

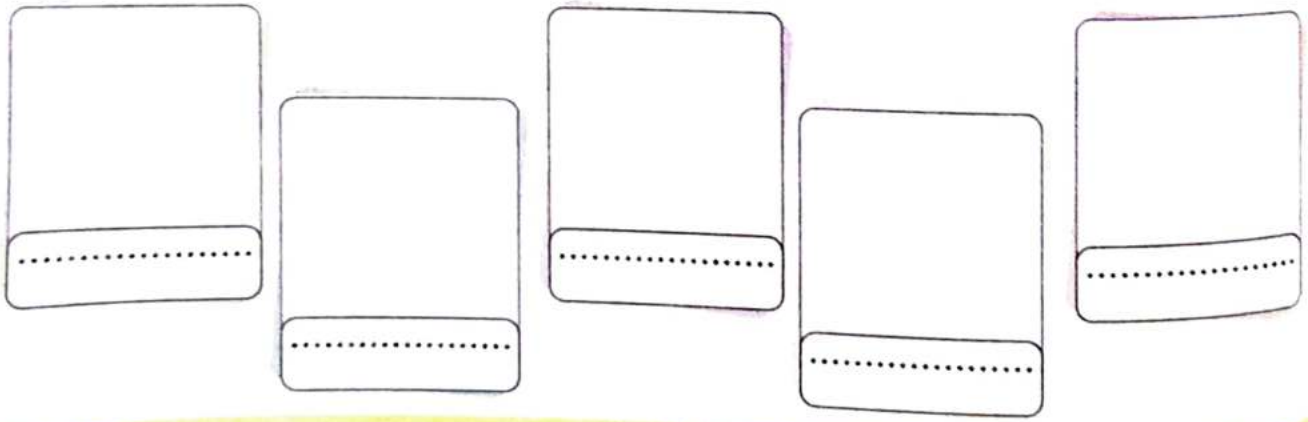

6 अहिंसा की शक्ति

मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

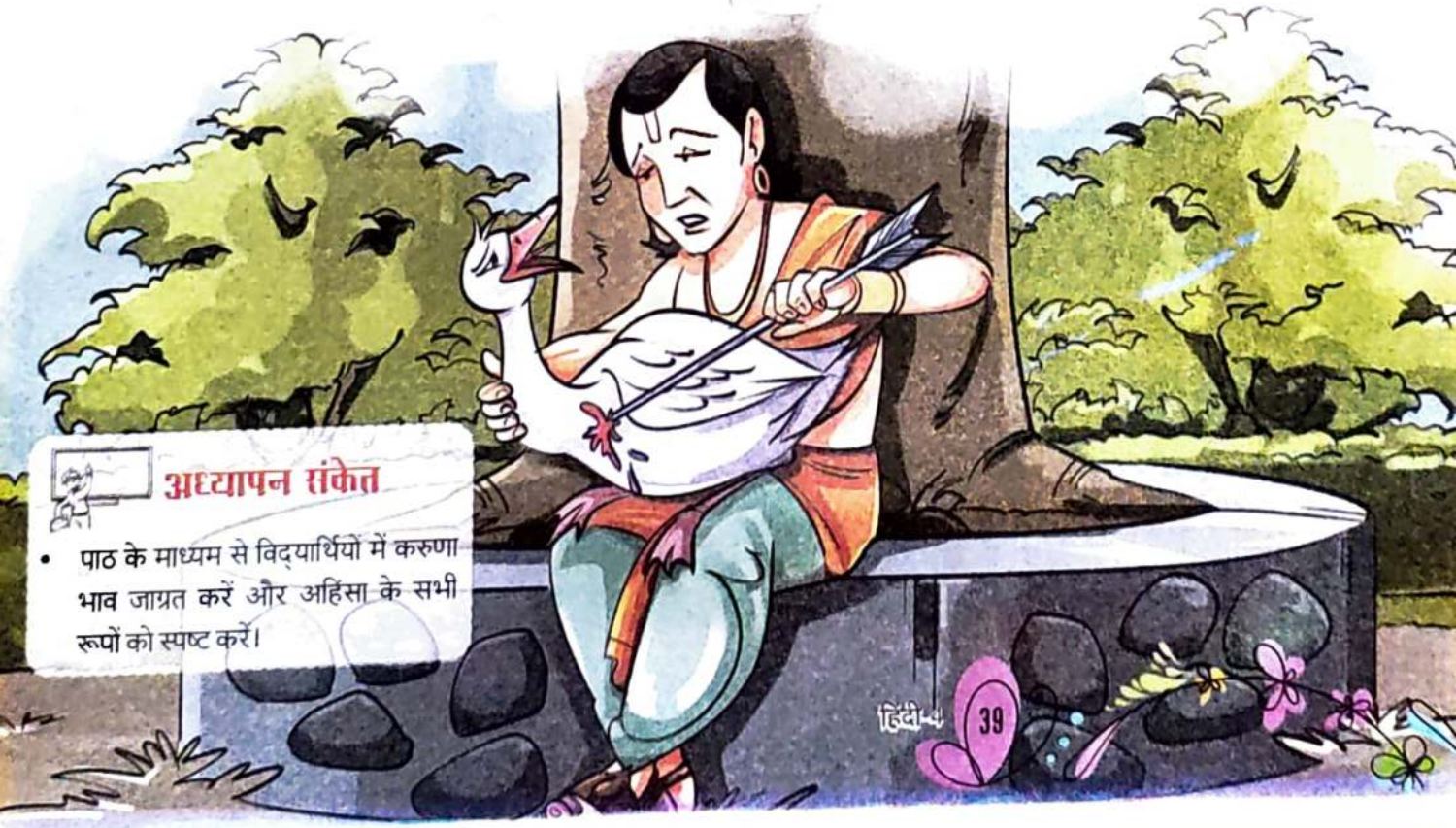

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों में करुणा भाव जाग्रत करें और अहिंसा के सभी रूपों को स्पष्ट करें।

(निबंध)

- अहिंसा एक ऐसा महामंत्र है, जिसकी सहायता से हमारे देश को आजादी मिली। अहिंसा क्या है, इसे इस पाठ में स्पष्ट किया गया है

आपने 'अहिंसा' शब्द तो सुना ही होगा। इसका अर्थ है, मन-वचन-कर्म से किसी भी जीवित प्राणी को कष्ट न पहुँचाना, किसी को न सताना, न मारना।

आज हमें चारों ओर अशांति, दुख व पीड़ा दिखाई देती है, इसका मूल कारण है– अहिंसा का पालन न करना। प्राय: अनेक मनुष्य गलत ढंग से यह सोचते हैं कि उन्हें लाभ हो, उनका नाम हो, उन्हें आराम मिले, दूसरों को भले ही दुख, पीड़ा व परेशानी होती हो तो उनकी बला से।

इसलिए कई मनुष्य अनेक जानवरों जैसे– बकरों, मुर्गों, मछलियों आदि को मारकर भोजन के रूप में प्रयोग कर लेते हैं। ऐसा करते हुए उन्हें उन बेजुबान प्राणियों पर जरा भी दया नहीं आती। प्रत्येक प्राणी दुख से घबराता है। और तो और वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने तो यह भी सिद्ध करके दिखा दिया था कि पेड़-पौधे भी दुख-सुख का अनुभव करते हैं।

आपने देखा होगा कि बैलों और घोड़ों आदि पर बोझा लादकर कई बार उनके मालिक चाबुक मारते हैं। यह बड़ी क्रूरता है। कुछ बच्चे भी गाएँ तथा कुत्तों को पत्थर मारते हैं, यह हिंसा भाव है।

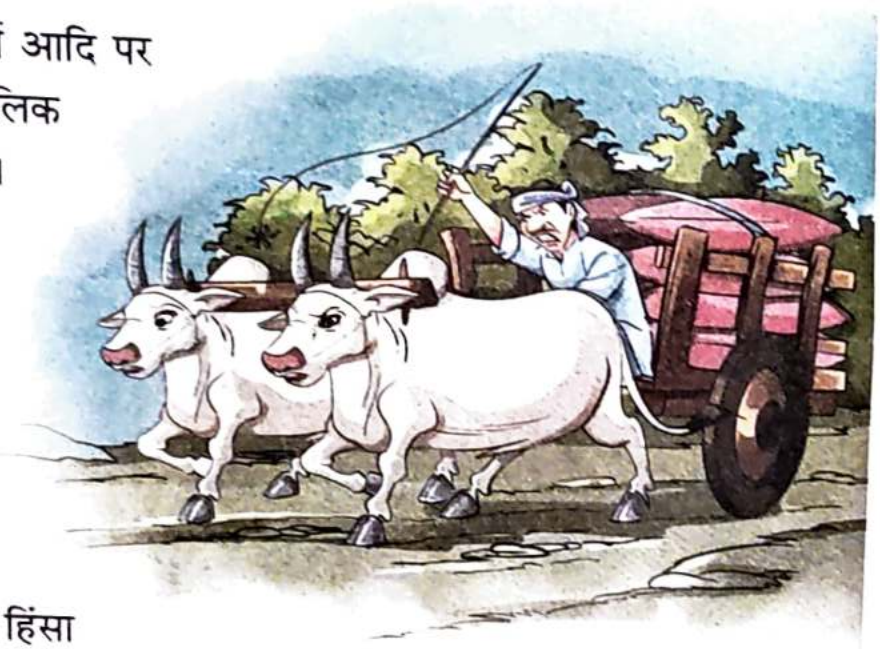

हमें हर प्राणी के प्रति मैत्री व सद्भावना रखनी चाहिए। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व महात्मा बुद्ध ने अहिंसा के भाव को बड़ा बल दिया।

केवल शरीरों को पीड़ा पहुँचाना ही हिंसा नहीं है वरन् किसी का अपमान करना, निंदा करना, मन को दुखाना, नीचा दिखाना, उसे डाँटना, डराना आदि भी हिंसा ही है।

सभी प्रेम चाहते हैं और सम्मान सबको अति प्यारा होता है इसलिए जब भी किसी के साथ संपर्क हो, हमें मधुर और शिष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

हम देखते हैं कि लोग छोटी-बड़ी वस्तुओं के लिए झगड़ते हैं। कचहरियों में आपसी लड़ाई-झगड़ों के कारण सालों मुकदमें चलते हैं। वास्तव में अहिंसा की राह पर चलकर इन झगड़ों से बचा जा सकता है।

कभी-कभी दो देश भी आपस में युद्ध करते हैं। युद्ध में जन-धन की अपार हानि होती है। युद्ध में प्रयोग किए जाने वाले हथियारों की बजाय प्रेम और अहिंसा की शक्ति व साधन का सदुपयोग किया जाए तो लाखों लोगों का कल्याण हो सकता है। खुशी की बात है कि हमारा देश शांतिप्रिय है। यह इस बात के लिए कभी राजी नहीं होगा कि किसी दूसरे देश की भूमि हड़प ली जाए। हाँ, कुछ अन्य देश इस पर प्राय: हमला कर चुके हैं पर अपनी सुरक्षा के लिए मजबूर होकर भारत को भी युद्ध करना पड़ा। किंतु हमारे मूल में अहिंसा की भावना है।

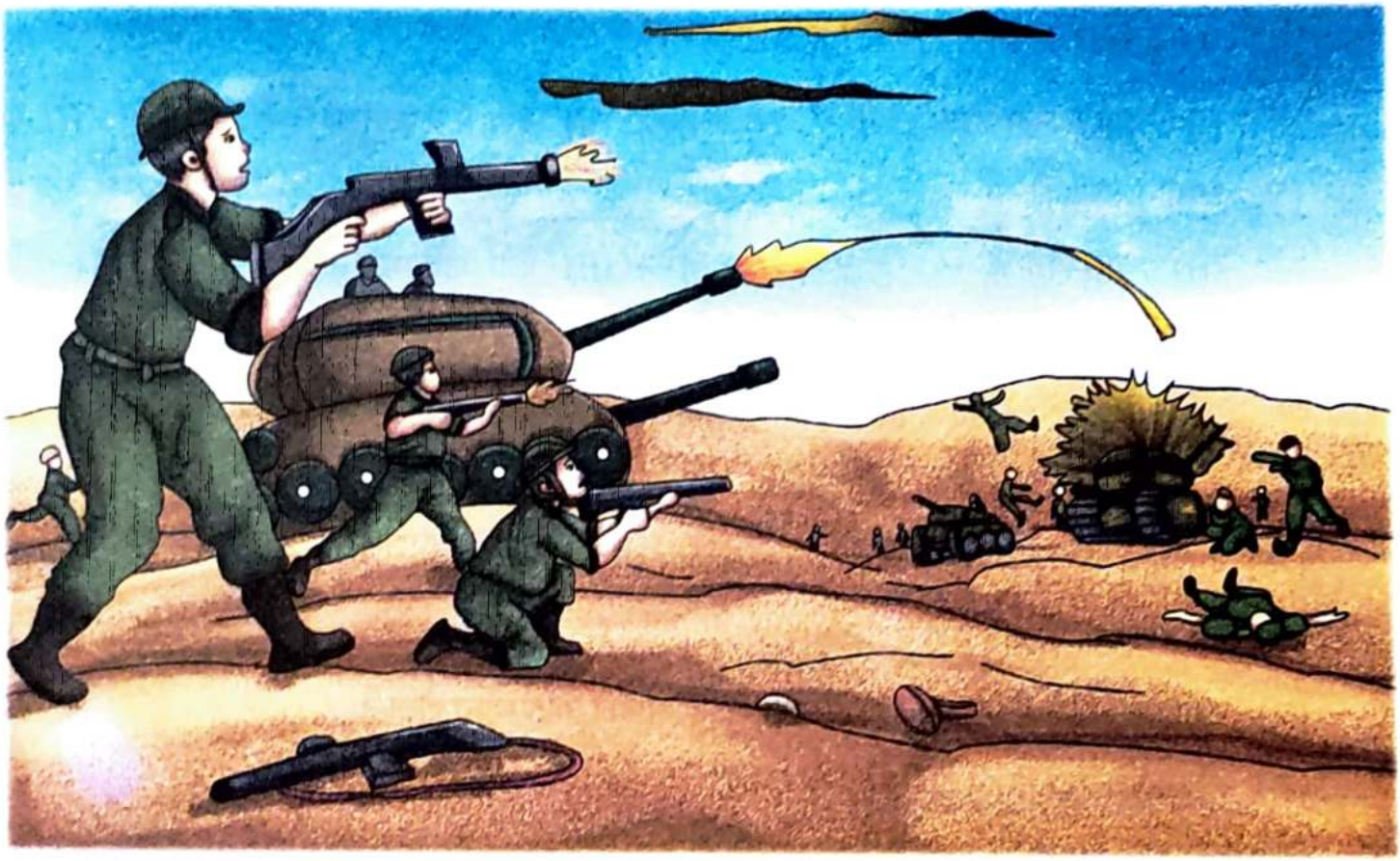

जीवन को सुंदर बनाने के लिए अहिंसा का मूलमंत्र बड़ा सार्थक है। हमें भी यदि महानता की सीढ़ियों पर चढ़ना है तो अहिंसा के पथ को ही अपनाना होगा।

शब्द-अर्थ

बेजुबान - गूँगे; क्रूरता- दयाहीन होकर अत्याचार करना; युद्ध - लड़ाई; सार्थक - अर्थपूर्ण; सुरक्षा - हिफाज़त; शिष्ट - आदरपूर्ण।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) अहिंसा का अर्थ है–

(i) बापू जी की पूजा करना ( ) (ii) किसी को भी दुख न देना ( )

(ख) जानवरों को मारना–

(i) क्रूरता है ( ) (ii) आवश्यक है ( )

(ग) प्रत्येक प्राणी–

(i) दुख से नहीं डरता ( ) (ii) दुख से घबराता है ( )

(घ) सम्मान सभी को–

(i) प्यारा होता है ( ) (ii) देना आवश्यक नहीं ( )

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

सद्भावना, मूलमंत्र, दुख-सुख, सम्मान, अशांति

(क) आज हमें चारों ओर ..... , दुख व पीड़ा दिखाई देती है।

(ख) पेड़-पौधे भी ..... का अनुभव करते हैं।

(ग) हमें हर प्राणी के प्रति मैत्री व ..... रखनी चाहिए।

(घ) सभी प्रेम चाहते हैं और ..... सबको अति प्यारा होता है।

(ङ) जीवन को सुंदर बनाने के लिए अहिंसा का ..... बड़ा सार्थक है।

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य कथनों के सामने ✗ लगाओ–

(क) केवल शरीर को पीड़ा पहुँचाना ही हिंसा है। ( )

(ख) युद्ध में जन-धन की अपार हानि होती है। ( )

(ग) हमारा देश युद्धप्रिय है। ( )

(घ) महात्मा बुद्ध ने अहिंसा के भाव पर बल दिया है। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) अहिंसा किन-किन रूपों में होती है?

.....

.....

(ख) हिंसा किन-किन रूपों में होती है?

.....

.....

(ग) झगड़ों से किस प्रकार बचा जा सकता है?

.....

.....

(घ) जानवरों पर उनके कुछ मालिक कैसा अत्याचार करते हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. विलोम शब्दों को मिलाओ–

(क) अहिंसा	(i) दयालुता
(ख) क्रूरता	(ii) अशांति
(ग) मैत्री	(iii) सम्मान
(घ) शांति	(iv) शत्रुता
(ङ) अपमान	(v) हिंसा

2. शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाओ–

(क) नहीं चाहिए लादना घोड़ों पर वजन अधिक।

.....

(ख) हैं चाहते सभी प्यार।

.....

(ग) दिया बल पर अहिंसा बापू जी ने।

.....

(घ) पड़ा करना युद्ध सुरक्षा भारत के को लिए।

.....

(ङ) चाहिए करना प्रयोग भाषा शिष्ट का।

.....

3. अनेक शब्दों के लिए दिए गए शब्द से मिलाओ–

(क) अत्याचार करने वाला	(i) हिंसक
(ख) हिंसा करने वाला	(ii) शांतिप्रिय
(ग) शांति पसंद करने वाला	(iii) झगड़ालू
(घ) बैर रखने वाला	(iv) प्रेमी
(ङ) प्रेम रखने वाला	(v) बैरी
(च) झगड़ा करने वाला	(vi) अत्याचारी

4. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–

(क) परेशानी – ..... (ख) पौधा – .....

(ग) गाय – ..... (घ) सद्भावना – .....

(ङ) भाषा – ..... (च) वस्तु – .....

(छ) मुकदमा – ..... (ज) हथियार – .....

5. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) अहिंसा – .....

(ख) अनुभव – .....

(ग) सद्भावना – .....

(घ) अपमान – .....

(ङ) शांतिप्रिय – .....

कुछ करने के लिए

- दिए गए शब्दजाल से पाँच महापुरुषों के नाम ढूँढ़कर लिखो–

.....

.....

.....

.....

.....

म	गु	रु	ना	न	क
हा	चै	त	न	य	ई
त	म	हा	प्र	भु	सा
मा	बु	द्	ध	श	म
ट	र	ल	व	स	सी
म	हा	वी	र	म	ह

- महात्मा बुद्ध की जीवनी पढ़ो और उनकी पाँच शिक्षाएँ लिखो–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- यदि आप किसी जानवर पर किसी को अत्याचार करते देखें तो उसे रोकें और समझाएँ कि ऐसा करना अपराध है और ऐसा करने पर उसे सजा भी हो सकती है।

7 पेड़ का दर्द

पेड़ मनुष्य के सच्चे साथी हैं, हर रूप में वे मनुष्य के काम आते हैं

अध्यापन संकेत

- कविता के माध्यम से बच्चों को वृक्षों के महत्व के बारे में बताएँ।

(कविता)

- फर्नीचर निर्माण के लिए आजकल वृक्षों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। इससे पेड़ों का जीवन संकट में पड़ गया है। हरियाली दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। इस कविता में पेड़ों की दुखद स्थिति को व्यक्त किया गया है—

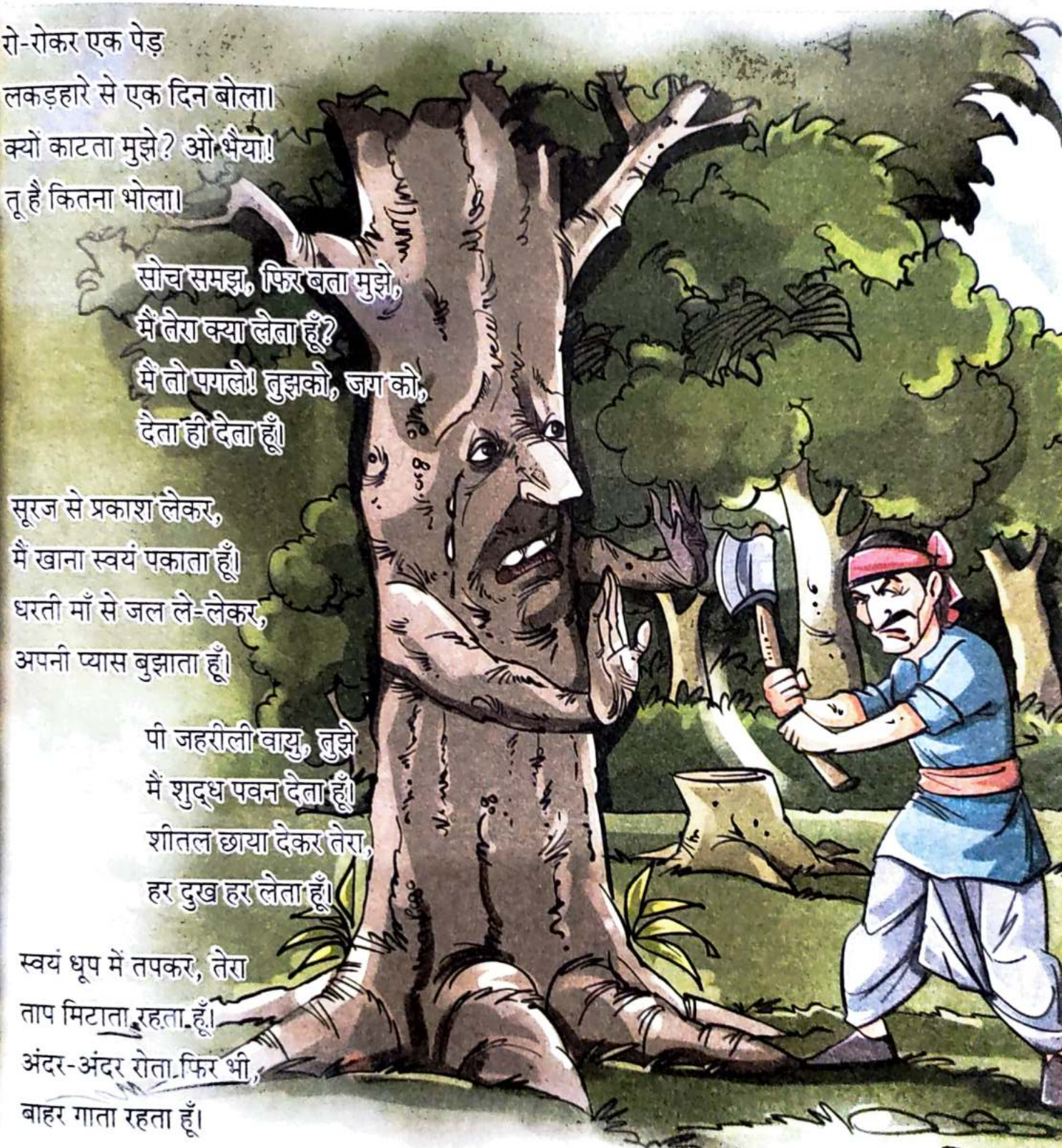

रो-रोकर एक पेड़
लकड़हारे से एक दिन बोला।
क्यों काटता मुझे? ओ भैया!
तू है कितना भोला।

सोच समझ, फिर बता मुझे,
मैं तेरा क्या लेता हूँ?
मैं तो पगले! तुझको, जग को,
देता ही देता हूँ।

सूरज से प्रकाश लेकर,
मैं खाना स्वयं पकाता हूँ।
धरती माँ से जल ले-लेकर,
अपनी प्यास बुझाता हूँ।

पी जहरीली वायु, तुझे
मैं शुद्ध पवन देता हूँ।
शीतल छाया देकर तेरा,
हर दुख हर लेता हूँ।

स्वयं धूप में तपकर, तेरा
ताप मिटाता रहता हूँ।
अंदर-अंदर रोता फिर भी,
बाहर गाता रहता हूँ।

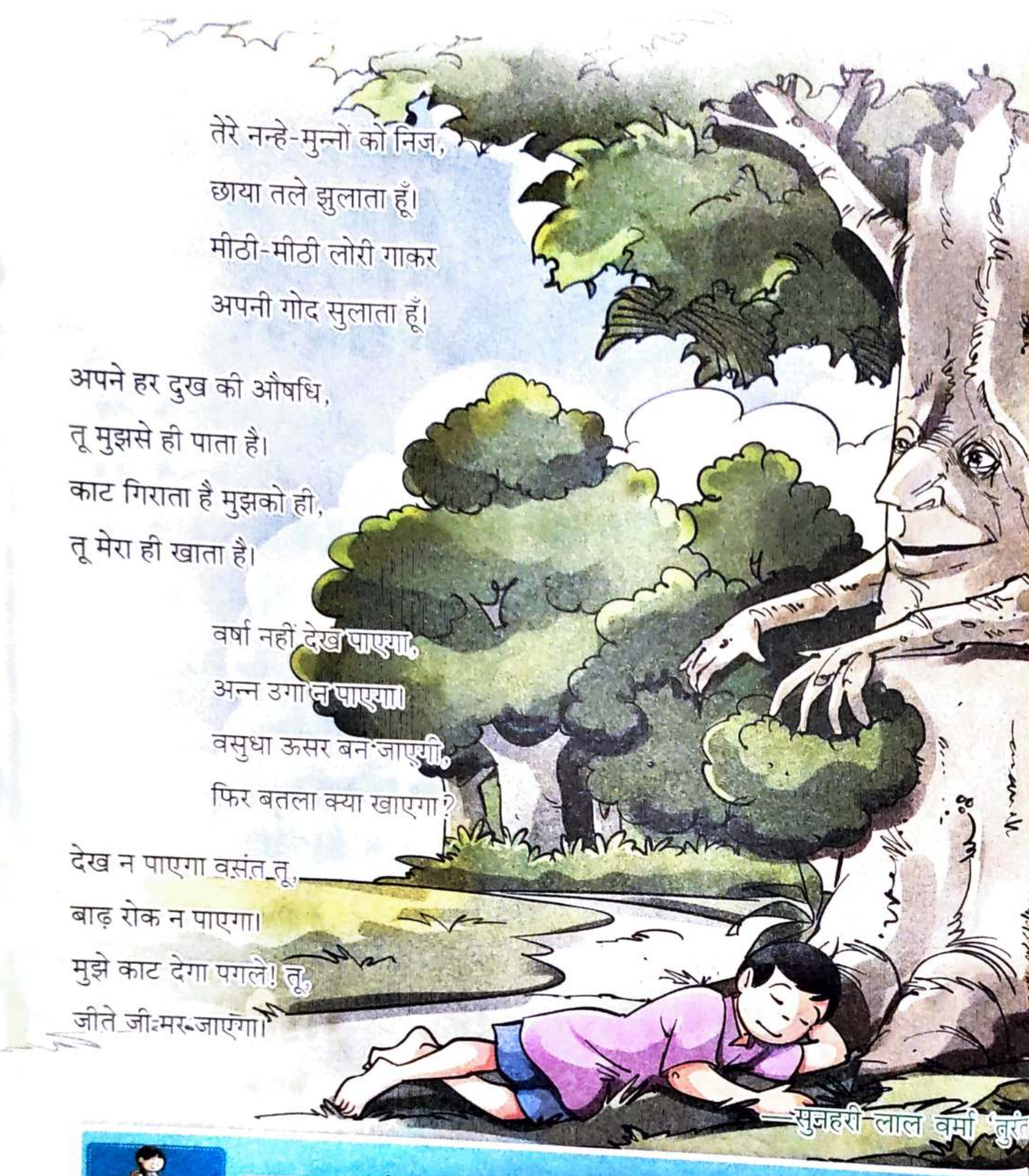

तेरे नन्हे-मुन्नों को निज,
छाया तले झुलाता हूँ।
मीठी-मीठी लोरी गाकर
अपनी गोद सुलाता हूँ।

अपने हर दुख की औषधि,
तू मुझसे ही पाता है।
काट गिराता है मुझको ही,
तू मेरा ही खाता है।

वर्षा नहीं देख पाएगा,
अन्न उगा न पाएगा।
वसुधा ऊसर बन जाएगी,
फिर बतला क्या खाएगा?

देख न पाएगा वसंत तू,
बाढ़ रोक न पाएगा।
मुझे काट देगा पगले! तू,
जीते जी मर जाएगा।

—सुनहरी लाल वर्मा 'तुरंत'

शब्द-अर्थ

लकड़हारा - लकड़ी काटने वाला; प्रकाश- रोशनी; ताप - गर्मी; औषधि - दवाई; वसुधा - धरती; जग - संसार; शुद्ध - साफ़; तले - नीचे; अन्न- अनाज़; ऊसर - बंजर।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) पेड़ ने लकड़हारे से कहा–

(i) मुझे जल दे ( ) (ii) मुझे मत काट ( )

(ख) पेड़ मनुष्य को–

(i) बस देता ही देता है ( ) (ii) बहुत कुछ लेता भी है ( )

(ग) मनुष्य ने यदि पेड़ काटने ऐसे ही जारी रखे तो मनुष्य–

(i) वसंत न देख पाएगा ( ) (ii) पतझड़ न देख पाएगा ( )

(घ) मनुष्य पेड़ों से लाभ उठाकर–

(i) पेड़ों को धन्यवाद देता है ( ) (ii) पेड़ों को काट गिराता है ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

अपने हर दुख .....

..... पाता है।

काट गिराता है .....

..... खाता है।

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य कथनों के सामने ✗ लगाओ–

(क) पेड़ लकड़हारे से हँस-हँस कर बोल रहा था। ( )

(ख) पेड़ जगत को देता ही देता है। ( )

(ग) पेड़ मनुष्य के बच्चों को लोरी गाकर सुलाता है। ( )

(घ) मनुष्य अपने हर दुख की औषधि पेड़ों से पाता है। ( )

(ङ) पेड़ों को काट देने से पृथ्वी उपजाऊ बन जाएगी। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) पेड़ प्रकाश और भोजन किससे लेता है?

.....

.....

(ख) जहरीली वायु पीने के बावजूद पेड़ क्या देता है?

....

....

(ग) पेड़ काट देने से क्या-क्या संकट आएँगे?

....

....

(घ) पेड़ के मन की अंदर ही अंदर क्या दशा होती है पर बाहर वह क्या प्रकट करता है?

....

....

भाषा की बात

1. **सुमेल करो–**

(क) विषैला	(i) उजाला
(ख) शीतल	(ii) दवा
(ग) औषधि	(iii) ठंडा
(घ) प्रकाश	(iv) जहरीला

2. **दो शब्दों के जोड़े को शब्द युग्म कहते हैं। कविता में आए शब्द युग्मों को ढूँढ़कर लिखो–**

(क)	....रो....	....रोकर....	(ख)	....	....
(ग)	....	....	(घ)	....	....
(ङ)	....	....	(च)	....	....

3. **वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो–**

(क) उपयोग में आने वाला – ....

(ख) प्रार्थना करने वाला – ....

(ग) निवेदन करने वाला – ....

(घ) हँसते रहने वाला – ....

(ङ) नेत्रों से हीन – ....

4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो–

(क) सूरज – ....

(ख) जग – ....

(ग) पेड़ – ....

(घ) धरती – ....

(ङ) वायु – ....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- **'पेड़ों की उपयोगिता' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8 सावन का एक दिन

हर मौसम का अपना अलग ही आनंद है, इसलिए इसका मजा उठाना चाहिए।

अध्यापन संकेत

- मौसम पर चर्चा करते हुए बरसात के मौसम के बारे में बच्चों के अनुभव पूछें।

(दैनिक प्रसंग)

- सावन के महीने में बूँदाबाँदी प्रायः होती है तो कभी तेज बरसात भी। बरसात के मौसम का मजा बच्चे कैसे लेते हैं? यही इस पाठ में बताया गया है—

बरसात हो रही थी छम-छमा छम-छम। नेहा घर के दरवाजे पर खड़ी उसका मजा ले रही थी तभी निधि आई और बोली– "डर के अंदर क्यों खड़ी हो, जल्दी बाहर निकलो, मिलकर नहाएँ।" नेहा ने कहा– "ठीक है.....।" नेहा ने भी खुले आँगन की ओर कदम बढ़ाया, वे दोनों जी भरकर नहाईं। फिर घर आकर तौलिए से बदन पोंछा और नई फ्रॉकें पहन लीं। "चलो, हम जाकर पेड़ों के नीचे जामुनें चुनते हैं...." निधि ने कहा।

"हाँ-हाँ, बड़ा मजा आएगा।" नेहा बोली और गाँव में एक चौड़े रास्ते पर चलने लगी। खेतों में हरी-भरी फसलें लहरा रही थीं। आगे जामुन, आम आदि के पेड़ लगे थे। पेड़ों के नीचे गिरे हुए जामुनों को नेहा व निधि चुनने लगी। उन्होंने अपनी फ्रॉक में जामुन इकट्ठा किए, उन्हें पास ही लगे हैंडपंप पर धोया और खाने लगीं। "मजा आ रहा है न!" नेहा ने पूछा।

"हाँ बहुत ज्यादा," निधि ने कहा। "हाय राम, पर मैंने ध्यान ही नहीं दिया जामुन के नीले-नीले दाग हमारी फ्रॉकों पर पड़ गए हैं।"

"हाँ, अब माँ डाँटेंगी।" सचमुच अब उन्हें चिंता हो रही थी। फिर भी दोनों सहेलियाँ हाथों में हाथ डाले चलती रहीं। ठंडी-ठंडी हवा बड़ी सुहानी लग रही थी। तभी उनके कान में आवाज़ आई– "केकू"। "तुमने सुना नेहा, यह मोर की आवाज है।" निधि बोली। "हाँ वह देखो पूरे पंख

फैलाए मोर उस पेड़ के नीचे खड़ा है। कितने रंगीन व सुंदर पंख हैं इसके।'' नेहा ने कहा। ''हाँ, तभी तो इसे राष्ट्रीय पक्षी भी घोषित किया गया है।''

''निधि, ऊपर देखो आकाश में सात रंगों की यह पट्टी.....''

''ये तो इंद्रधनुष है, जी करता है, इसे देखते ही रहें।'' नेहा बोली।

''बिल्कुल ठीक कहा तुमने। हर मौसम अपनी खूबसूरती लिए होता है।''

''ठीक कहा, सर्दियों में भी तो कितना मजा आता है। सभी भाई-बहन मिलकर रजाई में बैठकर खूब बातें करते हैं। मूँगफली-गज्जक खाते हैं और गप्पे मारते-मारते ही सो जाते हैं।''

''हाँ, पर कपड़े ज्यादा पहनने पड़ते हैं, पैरों में मोजें, सिर पर टोपी, बदन पर स्वेटर न हो तो फौरन ठंड लग जाती है।''

'पर अगर थोड़ा ध्यान रख लो तो सर्दियों बड़ी अच्छी लगती हैं। सर्दियों में धूप सेंकने में भी बड़ा आनंद आता है।''

''हमारे घर तो खूब धूप आती है जो शाम ढले तक रहती है पर तुम्हारे घर तो दोपहर के बाद ही धूप आती है न!'' नेहा ने पूछा। ''हाँ, माँ को इससे बड़ी परेशानी होती है, तुम्हारे घर तो आस-पड़ोस से भी लोग धूप सेंकने आ जाते हैं।''

''अच्छा ही तो है काफ़ी चहल-पहल और रौनक हो जाती है। स्त्रियाँ ऊन के गोले और सलाइयाँ हाथों में लेकर स्वेटर आदि भी बुनती रहती हैं और नए-नए किस्से भी सुनाती रहती हैं।'

शब्द-अर्थ

मजा - आनंद; चिंता - फिक्र; हैंडपंप - हाथ से चलने वाला नल।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) निधि ने नेहा को कहा–

(i) चलो नहाएँ ( ) (ii) चलो गाएँ ( )

(ख) निधि व नेहा ने जामुनें इकट्ठा कीं–

(i) अपनी फ्रॉक में ( ) (ii) एक गिलास में ( )

(ग) पेड़ के नीचे पंख फैलाए खड़ा था–

(i) मुर्गा ( ) (ii) मोर ( )

(घ) सर्दियों में लोग रजाई में बैठकर–

(i) घर के काम करते हैं ( ) (ii) मूँगफली-गज्जक खाते हैं ( )

2. किसने कहा–

(क) "चलो, हम जाकर पेड़ों के के नीचे जामुनें चुनते हैं।" .....

(ख) "कितने सुंदर व रंगीन पंख हैं इसके।" .....

(ग) "ऊपर देखो, आकाश में यह सात रंग की पट्टी।" .....

3. सत्य कथनों के आगे ✓ तथा असत्य कथनों के आगे ✗ लगाओ–

(क) नेहा बारिश में भीग रही थी। ( )

(ख) नेहा तथा निधि जामुनें इकट्ठा करने लगी। ( )

(ग) दोनों की फ्रॉकों पर हरे रंग के धब्बे पड़ गए। ( )

(घ) मोर एक सुंदर पक्षी है। ( )

(ङ) सर्दियों में लोग मूँगफली और गज्जक खाते हैं। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) नेहा व निधि क्या चुनने पेड़ों के नीचे गईं?

.....

.....

(ख) नेहा तथा निधि की फ्रॉकों पर कैसे दाग लग गए थे?

.....

.....

(ग) घूमते हुए उन्हें कैसी आवाज सुनाई दी?

.....

.....

(घ) सर्दियों में धूप में बैठकर स्त्रियाँ क्या करती थीं?

.....

.....

भाषा की बात

1. बहुवचन लिखो–

(क) गोला – ..... (ख) चिंता – .....

(ग) स्त्री – ..... (घ) आवाज – .....

(ङ) जामुन – ..... (च) गप्प – .....

(छ) सलाई – ..... (ज) मूँगफली – .....

2. सही स्थान पर लिखो–

पेड़, नदी, इंद्रधनुष, गोला, ऊन, धूप, सलाई, रौनक, पड़ोस

स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

3. जिस क्रिया से यह ज्ञात हो कि कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं, जैसे 'पढ़ना' क्रिया है व 'पढ़वाना' प्रेरणार्थक क्रिया है। इसी प्रकार लिखो–

(क) देना ..... देना ..... (ख) काटना .....

(ग) कहना ..... (घ) माँगना .....

कुछ करने के लिए

- 'मेरी पसंद का मौसम' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो—

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- दी गई तालिका की चीजों को मौसम के अनुसार सही स्थान पर लिखिए—

छाता स्वेटर लस्सी शर्बत हीटर गीजर रेनकोट

मफलर बर्फ पंखा कूलर रजाई केबल ए-सी

सर्दी	गर्मी	बरसात
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

एक पत्र

(पत्र) पठन हेतु

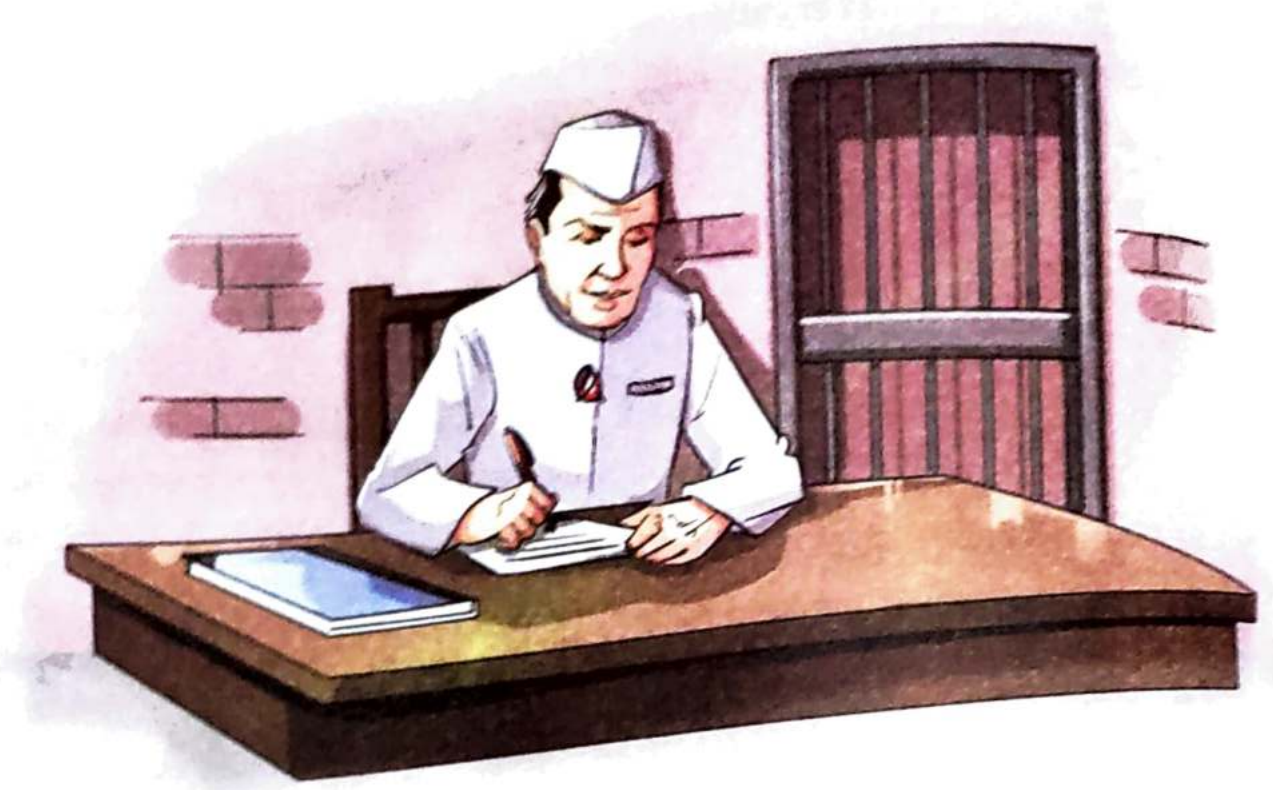

बेटी इंदिरा,

मैं आज तुम्हें प्राचीन काल की सभ्यता का कुछ हाल बताता हूँ। लेकिन इसके पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सभ्यता का अर्थ क्या है। कोश में तो इसका अर्थ है अच्छा करना, सुधारना, जंगली आदतों की जगह अच्छी आदतें पैदा करना और इसका व्यवहार किसी समाज या जाति के लिए ही किया जाता है। आदमी की जंगली दशा को, जब वह बिल्कुल जानवरों का-सा होता है, बर्बरता कहते हैं। सभ्यता बिल्कुल उसकी उल्टी चीज है। हम बर्बरता से जितना ही दूर जाते हैं, उतना ही सभ्य होते जाते हैं।

लेकिन हमें यह कैसे मालूम हो कि कोई समाज जंगली है या सभ्य? यूरोप के बहुत-से आदमी समझते हैं कि हम सभ्य हैं और एशिया वाले जंगली हैं। क्या इसका यह अर्थ है कि यूरोप वाले एशिया और अफ्रीका वालों से ज्यादा कपड़े पहनते हैं? लेकिन कपड़े तो जलवायु पर निर्भर हैं। ठंडे देश में लोग गर्म देशवालों से ज्यादा कपड़े पहनते हैं तो क्या इसका यह अर्थ है कि जिसके पास बंदूक है, वह निहत्थे आदमी से ज्यादा मजबूत है और इसलिए ज्यादा

सभ्य है? चाहे वह ज्यादा सभ्य हो या न हो, कमजोर आदमी उससे यह नहीं कह सकता कि आप सभ्य नहीं हैं। कहीं मजबूत आदमी झल्लाकर उसे गोली मार दे तो बेचारा क्या करेगा?

तुम्हें मालूम है कि कई साल पहले एक बड़ी लड़ाई हुई थी। दुनिया में बहुत-से देश उसमें सम्मिलित थे और हर एक आदमी दूसरी ओर के ज्यादा से ज्यादा आदमियों को मार डालने की कोशिश कर रहा था। अंग्रेज जर्मनी वालों के खून के प्यासे थे और जर्मन अंग्रेजों के खून के। इस लड़ाई में लाखों आदमी मारे गए और हजारों के अंग-भंग हो गए- कोई अंधा हो गया, कोई लूला, कोई लंगड़ा। तुमने फ्रांस और दूसरी जगह भी ऐसे बहुत-से लड़ाई के जख्मी देखे होंगे।

पेरिस की सुरंगवाली गाड़ी में, जिसे मेट्रो कहते हैं, उनके लिए खास जगहें हैं। क्या तुम समझती हो कि इस तरह अपने भाइयों को मारना सभ्यता और समझदारी की बात है? दो आदमी गलियों में लड़ने लगते हैं, तो पुलिस वाले उनमें बीच-बचाव करवा देते हैं और लोग समझते हैं कि ये दोनों कितने बेवकूफ हैं। जब दो बड़े-बड़े देश आपस में लड़ने लगें और हजारों लाखों आदमियों को मार डालें, तो वह कितनी बड़ी बेवकूफी या पागलपन है। ठीक वैसे ही जैसे दो जंगली जंगल में लड़ रहे हों। अगर असभ्य आदमी जंगली कहे जा सकते हैं तो वे मूर्ख कितने जंगली हैं जो इस तरह लड़ते हैं।

अगर इस दृष्टि से तुम मामले को देखो तो तुरंत कहोगी कि इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली और बहुत-से दूसरे देश जिन्होंने इतनी मार-काट की, जरा भी सभ्य नहीं हैं। फिर भी तुम जानती हो कि इन देशों में कितनी अच्छी-अच्छी चीजें हैं और वहाँ कितने अच्छे-अच्छे आदमी रहते हैं।

अब तुम कहोगी कि सभ्यता का अर्थ समझना आसान नहीं हैं। यह बहुत ही मुश्किल मामला है। अच्छी-अच्छी इमारतें, अच्छी-अच्छी तस्वीरें और किताबें और तरह-तरह की दूसरी और सुंदर वस्तुएँ अवश्य ही सभ्यता की पहचान हैं। भला आदमी जो स्वार्थी नहीं है और सबकी भलाई के लिए दूसरों के साथ मिलकर काम करता है, सभ्यता की इससे भी बड़ी पहचान हैं। मिलकर काम करना अकेले काम करने से अच्छा है, और सबकी भलाई के लिए एक साथ मिलकर काम करना सबसे अच्छी बात है।

तुम्हारे पिता

—जवाहरलाल नेहरू

9 मैंने हँसना सीखा है

जीवन में आशा रखना ही सच्ची प्रसन्नता का कारण बनता है।

अध्यापन संकेत

- कविता के माध्यम से बच्चों को आशावादिता का गुण अपनाने की प्रेरणा दें।

(कविता)

- हम सभी को जीवन मिला है. इसमें भले ही कष्ट भी आते हैं किंतु फिर भी यदि इसे हँसकर जिया जाए तो यह अर्थपूर्ण बन सकता है। यही इस कविता में बताया गया है।

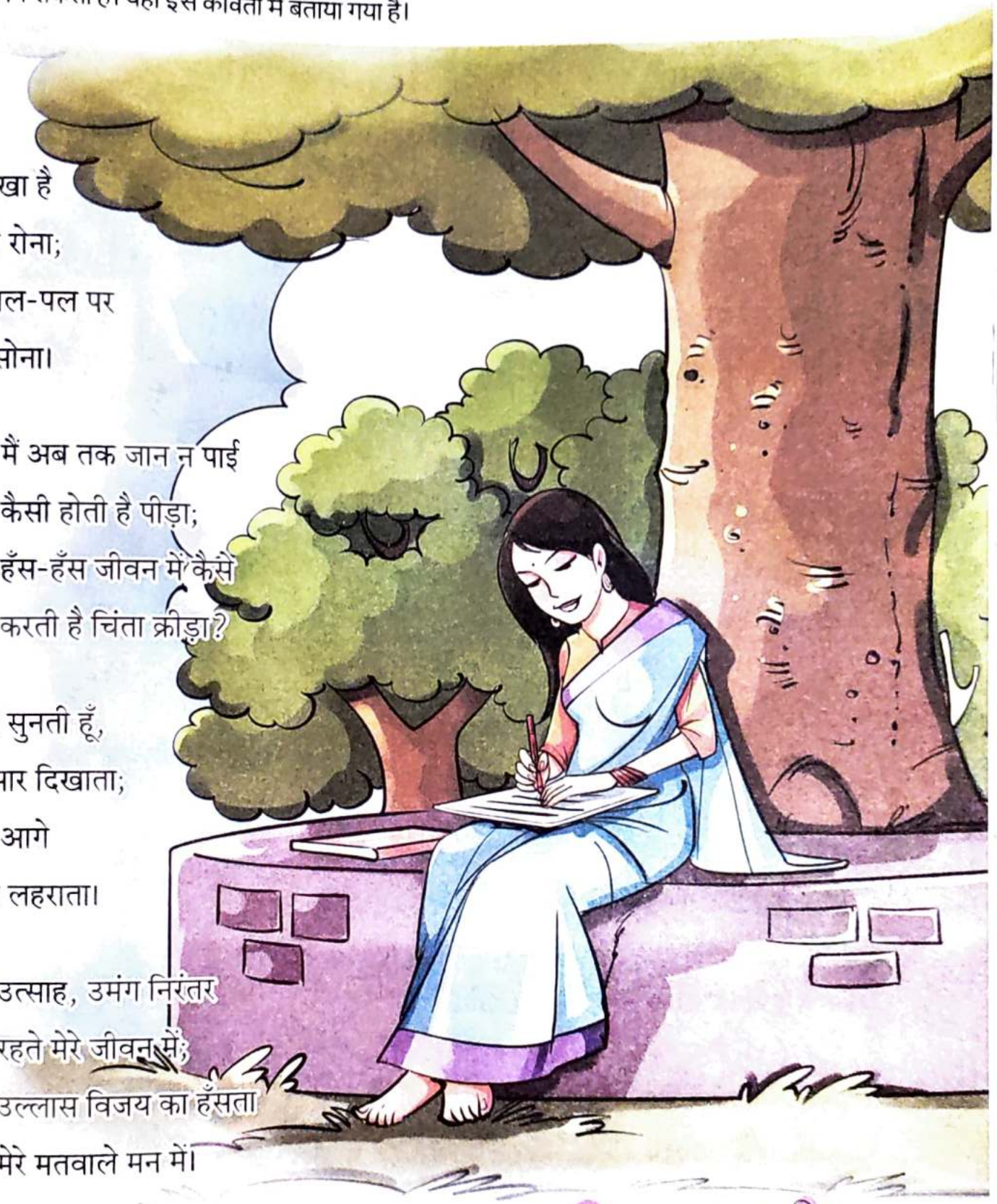

मैंने हँसना सीखा है
मैं नहीं जानती रोना;
बरसा करता पल-पल पर
मेरे जीवन में सोना।

मैं अब तक जान न पाई
कैसी होती है पीड़ा;
हँस-हँस जीवन में कैसे
करती है चिंता क्रीड़ा?

जग है, असार सुनती हूँ,
मुझको सुख-सार दिखाता;
मेरी आँखों के आगे
सुख का सागर लहराता।

उत्साह, उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में;
उल्लास विजय का हँसता
मेरे मतवाले मन में।

आशा आलोकित करती
मेरे जीवन को प्रतिक्षण;
हैं स्वर्ण-सूत्र से वलयित
मेरी असफलता के धन।

सुख-भरे सुनहले बादल
रहते हैं मुझको घेरे;
विश्वास, प्रेम, साहस हैं
जीवन के साथी मेरे।

—सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्द–अर्थ

पीड़ा - दर्द; असार - सार रहित, तथ्य रहित; निरंतर - लगातार; आलोकित - प्रकाश से भरा; स्वर्ण-सूत्र - सोने का तार, धागा; क्रीड़ा - खेल; सुख-सार - सुख का निचोड़; उल्लास - खुशी; वलयित - गोलाई में मुड़ा हुआ

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) कवयित्री नहीं जानती

(i) सोना ( ) (ii) रोना ( )

(ख) कवयित्री को नहीं पता कि क्या होती है–

(i) पीड़ा ( ) (ii) रौनक ( )

(ग) कवयित्री के साथ हमेशा रहते हैं–

(i) अंगरक्षक ( ) (ii) उत्साह-उमंग ( )

(घ) कवयित्री के साथी हैं

(i) उसके रिश्तेदार ( ) (ii) विश्वास, प्रेम व साहस ( )

2. कविता पढ़कर रिक्त स्थान भरो–

(क) आशा आलोकित ....
.... प्रतिक्षण।
हैं स्वर्ण सूत्र ....
.... धन।

(ख) जग है ....,
.... दिखाता;
मेरी ....
.... लहराता।

3. सत्य कथनों के आगे ✓ तथा असत्य कथनों के आगे ✗ लगाओ–

(क) कवयित्री ने केवल हँसना सीखा है रोना नहीं। ( )

(ख) कवयित्री के आगे दुख का सागर लहराता है। ( )

(ग) कवयित्री के जीवन में उत्साह तथा उमंग निरंतर रहते हैं। ( )

(घ) कवयित्री के जीवन को हर क्षण आशा आलोकित करती है। ( )

(ङ) कवयित्री के साथी हैं– अविश्वास, घृणा तथा कायरता। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कवयित्री संसार के विषय में क्या सुनती है?

....

....

(ख) कवयित्री के मतवाले मन में कौन हँसता है?

....

....

(ग) पल-पल कवयित्री के जीवन में क्या बरसता है?

....

....

(घ) असफलता के बादलों में भी कवयित्री को क्या दिखाई देता है?

....

....

भाषा की बात

1. उदाहरण की तरह शब्दों के लिए एक-एक समानार्थक और एक-एक विलोम शब्द लिखो–

(क) आशा – उम्मीद , निराशा

(ख) विजय – ..... , ...

(ग) जीवन – ..... , ...

(घ) हँसना – ..... , ...

(ङ) विश्वास – ..... , ...

2. दिए गए संयुक्त व्यंजनों वाले दो-दो शब्द लिखो–

(क) क्त – वक्त , भक्त

(ख) श्व – ..... , ...

(ग) क्य – ..... , ...

(घ) च्छ – ..... , ...

(ङ) स्त – ..... , ...

3. शब्दों की वर्तनी शुद्ध करो–

(क) सवरण – ..... (ख) वीजय – .....

(ग) हनसता – ..... (घ) उमनग – .....

(ङ) उललास – .....

4. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) जीवन – .....

(ख) सुख – .....

(ग) उत्साह – .....

(घ) उल्लास – .....

(ङ) आशा – .....

5. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) जग – ....

(ख) सागर = ...

(ग) बादल = ...

(घ) साथी = ...

(रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- कविता में आशा के भाव प्रकट किए गए हैं। ऐसी भावना रखने वाला आशावादी कहलाता है। आपको अपना जीवन कैसा लगता है? क्या आप हमेशा उमंग-उत्साह से भरे रहते हैं या कभी-कभी निराश भी हो जाते हैं? बताओ।
- आशा व उत्साह जगाने वाली कोई अन्य कविता या गीत ढूँढ़कर लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आओ झूलें

(चित्रकथा)

भई जब झूला
नीचे आता है
तो पेट में गुदगुदी
होती है पर ऊपर
जाता है तो मजा
भी आता है।

तुम्हें पता है झूलना
सबको पसंद है तभी
तो जन्माष्टमी पर
कृष्ण कन्हैया को भी
झूला झुलाते हैं।
हाँ,
हम भी जाते हैं।

है-हैया

लौकी दीदी तुम भी झूलो,
मैं तो झूल रहा हूँ।

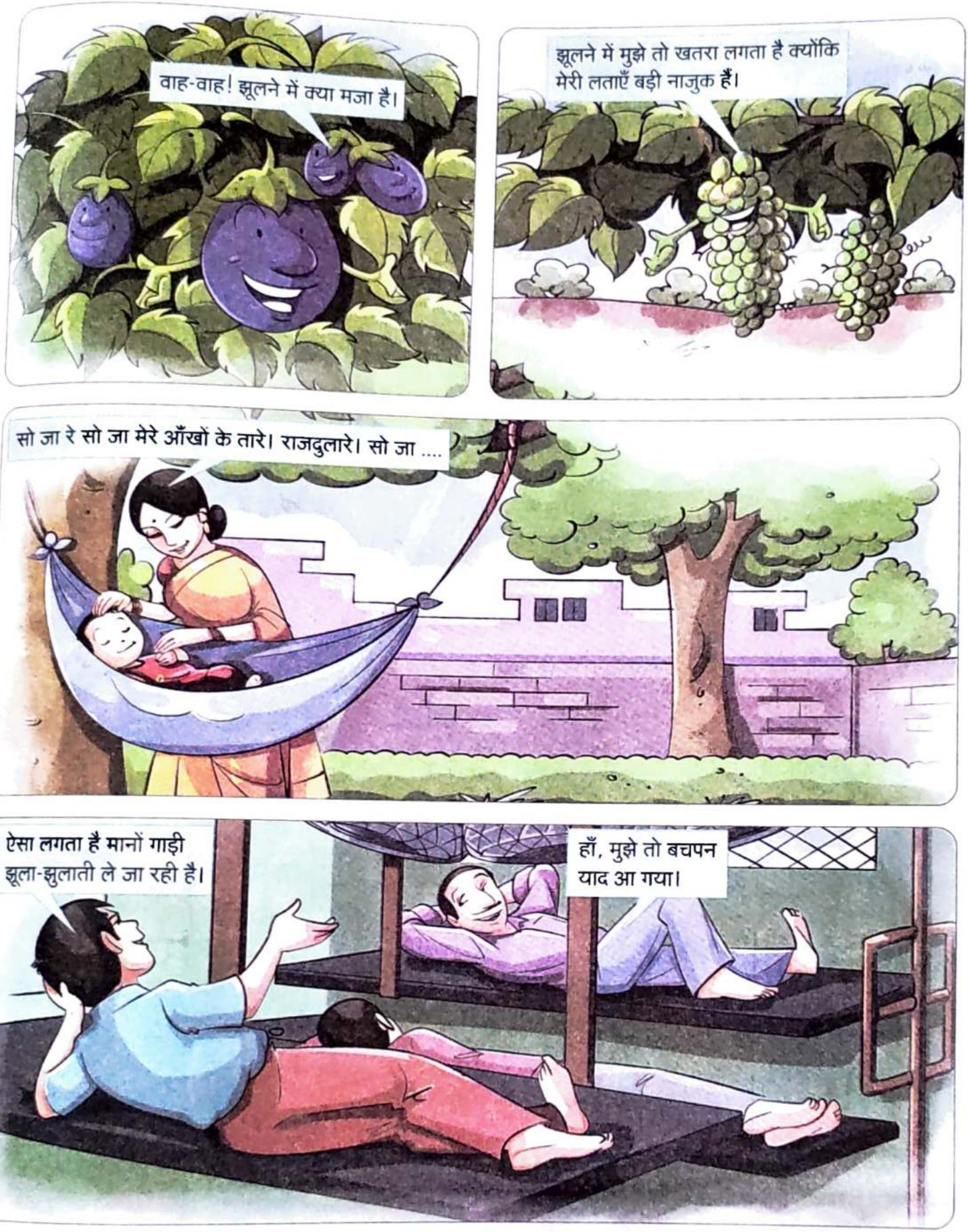
वाह-वाह! झूलने में क्या मजा है।
झूलने में मुझे तो खतरा लगता है क्योंकि मेरी लताएँ बड़ी नाजुक हैं।
सो जा रे सो जा मेरे आँखों के तारे। राजदुलारे। सो जा ....
ऐसा लगता है मानों गाड़ी झूला-झुलाती ले जा रही है।
हाँ, मुझे तो बचपन याद आ गया।

10 इस हाथ ले, उस हाथ दे!

सबको सुखपूर्वक जीने का अधिकार मिले तभी मानवता की शोभा होती है।

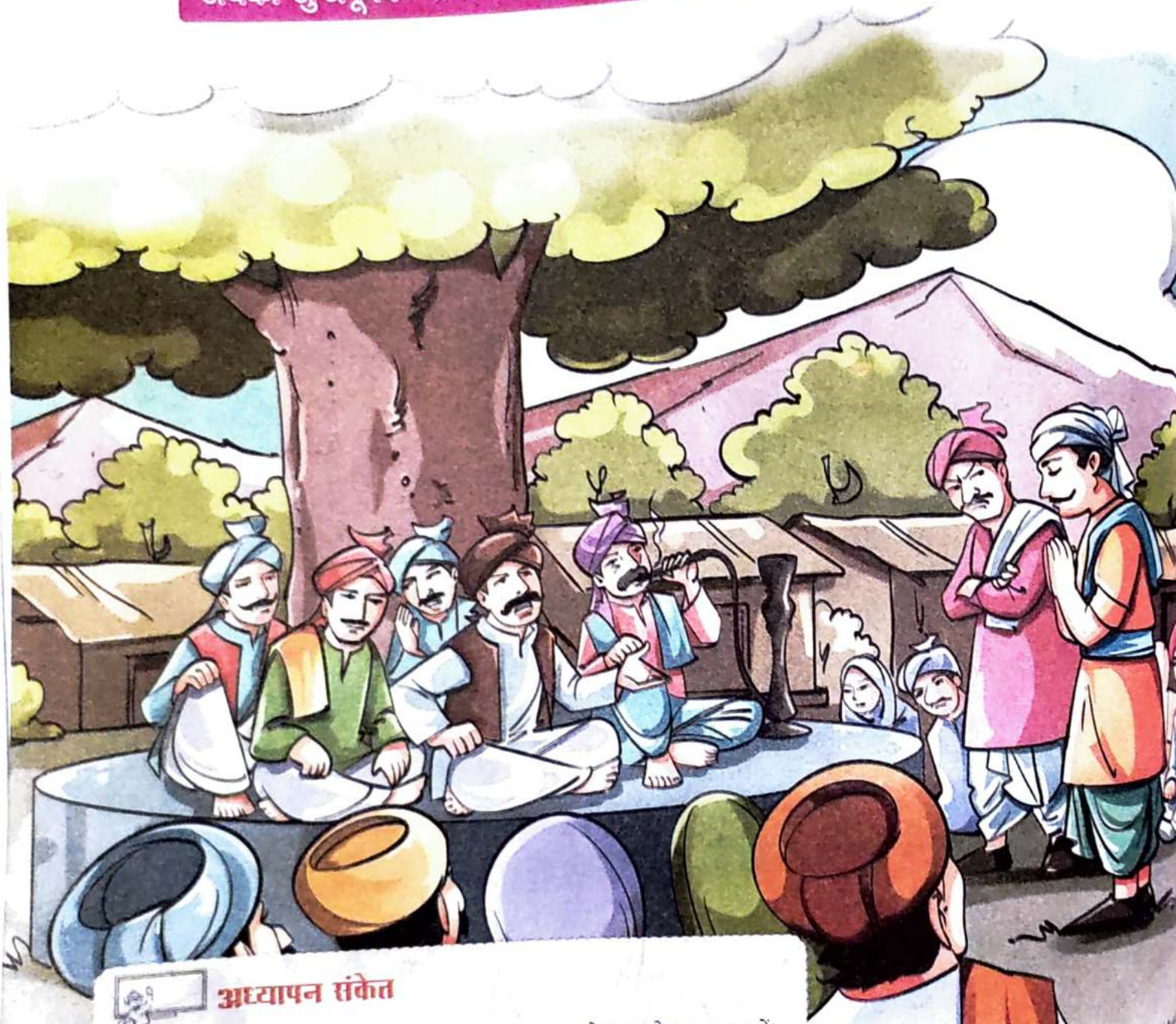

अध्यापन संकेत

- कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों को न्याय भाव के महत्व को समझाने का प्रयास करें।

(कहानी)

- न्याय की पुकार करने का अधिकार मनुष्य को ही नहीं प्राणी मात्र को भी है, यही इस कहानी का सारतत्व है।

फ़कीर ने ऐसा मनहूस गाँव कभी न देखा था जैसा बीहड़ गाँव था। वह सुबह से दोपहर तक वहाँ घूमा। घर-घर जाकर उसने अलख जगाई। मुहल्ले-मुहल्ले में उसने भिक्षा माँगी, पर किसी ने एक दाना भी उसकी झोली में न डाला। ''हरि इच्छा'' कहकर वह गाँव से विदा हुआ।

अगला गाँव दो कोस की दूरी पर था। टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता था। फ़कीर ने पगडंडी के रास्ते उसी ओर को मुँह कर लिया। अभी वह गाँव से निकला ही था कि सामने दो राहें दिखाई दीं। वह किधर जाए, किधर न जाए, यह कौन बताए? एक ओर कीचड़ थी और दूसरी ओर एक कुत्ता बैठा था।

फ़कीर ने अनुमान से कुत्ते वाली पगडंडी की ओर कदम बढ़ाया।

कुत्ता गुर्राया, ''गुर्र र्र र्र।''

फ़कीर झल्लाया हुआ तो था ही, उसने एक चिमटा कुत्ते की पीठ पर जमाया–पटाक!

कुत्ता टाँय-टाँय करता हुआ उठा और दूसरी ओर भागने लगा। तब तक फ़कीर ने दुबारा उस पर चिमटे से वार किया–इस बार पहले से भी दुगुने ज़ोर से कुत्ता टाँय-टाँय चिल्लाता हुआ सीधा पंचायत घर की ओर भागा।

आगे गाँव की पंचायत लगी हुई थी। कुत्ते की आवाज़ सुनकर पंच लोगों के फ़ैसले में विघ्न पड़ा। वे अभी बाहर झाँक ही रहे थे कि कुत्ता स्वयं भरी पंचायत में आ पहुँचा।

चौधरी ने कहा – ''ज़रूर इस कुत्ते के साथ किसी ने अन्याय किया है। इसीलिए यह फ़रियाद लेकर पंचायत में आया है।''

एक पंच बोला– " इसकी शिकायत अवश्य सुननी चाहिए और जो भी इसे सताने का दोषी पाया जाए उसे अवश्य दंड देना चाहिए।"

दूसरे पंच ने अपना मत प्रकट किया– "लेकिन कुत्ते की तरफ़ से बयान कौन देगा? न वह हमारी बात समझ सकता है और न हम उसकी भाषा जानते हैं। जब तक असली बात का पता नहीं चलता तब तक न्याय कैसे किया जाए?"

तीसरा पंच बोल उठा– "इसका मतलब यह नहीं कि एक बेजुबान जंतु पर अन्याय हो और पंचायत कानों में तेल डालकर बैठी रहे। आखिर पंचायत बनी किसलिए है– दूसरों की कठिनाइयाँ सुलझाने के लिए ही न। बस, कुत्ते का जो कर्तव्य था वह उसने पूरा कर दिया। वह ठीक समय पर पंचायत में पहुँच गया और उसने चिल्लाकर आपको अच्छी तरह बता दिया कि वह सताया हुआ प्राणी है और वह आपकी सहायता चाहता है। इसके बाद यह हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम यह पता लगाएँ कि इसे किसने, कब, कहाँ और क्यों मारा?"

चौथे पंच ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा– "बात तो भाई ठीक है। जब पशु होते हुए भी इसे इतनी समझ है कि किसी के साथ अन्याय हो तो उसे पंचायत में जाना चाहिए तो हम मनुष्यों में तो उससे अधिक बुद्धि होनी ही चाहिए। चाहे कुछ भी क्यों न हो, हमें यह पता लगाना ही होगा कि कुत्ते को किससे क्या शिकायत है? यदि हम अपने आपको ऊँचा प्राणी समझकर और इसे एक तुच्छ-सा कुत्ता समझकर इसकी बात पर ध्यान नहीं देते तो हमारा पंच बनना ही बेकार हो जाता है। हमें ऊँच-नीच का तनिक भी विचार किए बिना न्याय की व्यवस्था करनी चाहिए।"

पाँचों पंचों ने बहुत सोच-विचार के बाद यह निर्णय किया कि इस कुत्ते की मदद से ही दोषी का पता लगाना चाहिए। जब एक कुत्ता मालिक के घर में हुई चोरी का पता अपने इशारों से बता देता है तो वह

अपने साथ हुए अन्याय का पता क्यों न बता सकेगा? हमें उसके संकेतों को समझने का यत्न करना चाहिए और तब तक उसके पीछे-पीछे चलते जाना चाहिए जब तक कि असली दोषी का पता न लग जाए।

बस, फिर क्या था? पंच उठे तो उनकी देखा-देखी कुत्ता भी उठ खड़ा हुआ। वे बाहर निकले तो कुत्ता भी उनके साथ चलने लगा। कुत्ता आगे-आगे चला और पंच उसके पीछे-पीछे। थोड़ी देर में ही वे गाँव की घुमावदार गलियों से निकलकर खुले खेतों के पास आ गए। शीघ्र ही पगडंडी-पगडंडी चलते हुए वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ दो रास्ते फूटते थे। वहाँ जाकर कुत्ता खड़ा हो गया। यह देखकर पंच समझ गए कि हो न हो यहीं पर कुत्ते के साथ कोई घटना घटी है। अत: वे बड़े ध्यान से उस स्थान का निरीक्षण करने लगे।

उन्होंने देखा कि एक रास्ते की ओर तो कीचड़ है किंतु दूर तक न किसी पशु के पंजों के निशान दिखाई देते हैं और न किसी मनुष्य के पैरों के पदचिह्न। अत: उस रास्ते से इस घटना का कोई संबंध नहीं। नि:संदेह घटना दूसरे रास्ते की ओर घटी होगी।

यह सोचकर उन्होंने उस स्थान का निरीक्षण किया तो वहाँ उन्हें कुत्ते के और किसी मनुष्य के, दोनों के पदचिह्न साफ़ दिखाई दिए। तुलना करने पर पता चला कि पंजों के पहले निशान भी उसी कुत्ते के हैं जो अब उनके साथ है किंतु यह मनुष्य कौन हो सकता है? वह वहाँ से चलकर कहाँ और किधर गया–यह पता लगाना भी ज़रूरी था। अत: उन्होंने इस दूसरे सूखे रास्ते पर खड़े होकर दूर तक नज़र दौड़ाई। दूर बहुत दूर उन्हें कोई मनुष्य जाता हुआ दिखाई दिया।

एक ने कहा– "वह कोई मनुष्य जा रहा है। लगता है हमें उसी की तलाश है।"

दूसरा बोला– "हाँ-हाँ, वही होगा क्योंकि उसकी दूरी को देखकर यही अनुमान लगता है कि जितनी देर

में यह कुत्ता हमारे पास आया है और हम लोग पंचायत से यहाँ तक पहुँचे हैं उतनी देर में वह मनुष्य कहीं से वहाँ तक चला गया होगा।''

तीसरे ने पहचानते हुए कहा– ''अरे, यह तो वही फ़कीर लगता है जो सुबह यहाँ भिक्षा माँगता फिर रहा था।''

चौथे ने कहा– ''उसके हाथ में एक बड़ा चिमटा था न! इसके हाथ में भी कुछ चीज़ चमक रही है। मेरे ख्याल से यह सुबह वाला फ़कीर ही है।''

चौधरी ने कुछ याद करते हुए कहा– ''अरे, इसे तो गाँव-भर में कहीं से भी भिक्षा नहीं मिली। इसलिए वह झल्लाया तो खूब होगा। कोई बड़ी बात नहीं, अगर गाँव वालों के प्रति जो उसे गुस्सा था, वह गुस्सा उसने इस बेज़ुबान कुत्ते पर निकाला हो। हो न हो, वही हमारा अपराधी है। उसे शीघ्र ही दौड़कर पकड़ना चाहिए।''

चौधरी की बात का समर्थन कुत्ते ने भी कर दिया क्योंकि जब पाँचों पंच फ़कीर को पहचान रहे थे तो कुत्ता उसी ओर चल पड़ा था। उन्होंने जो कदम तेज़ किए तो पंद्रह-बीस मिनटों में ही फ़कीर की बगल में जा पहुँचे। कुत्ता फ़कीर को देखकर भौंकने लगा मानो पंचों को समझाकर कह रहा हो– यही है वह आदमी जिसने मुझे चिमटे से मारा है। यही है अपराधी! इसे पकड़ लो।

कुत्ते का भौंकना सुनकर फ़कीर चौंका और इसके साथ ही उसने मारने को अपना चिमटा ऊपर उठा लिया किंतु इस बार चार-पाँच ग्रामीणों को उसके साथ आया देखकर उसे कुत्ते को डाँटने तक की हिम्मत न हुई। उसने ज़रा तेज़ आवाज़ में इतना अवश्य पूछ लिया–''क्या यह कुत्ता आपका है?''

चौधरी– ''यह कुत्ता हमारा तो नहीं किंतु इस समय हमारे साथ अवश्य है। ठीक उसी तरह जैसे आप हमारे सामने हैं।''

फ़कीर– ''क्या आप कुत्ते और आदमी को एक समान समझते हैं?''

एक पंच– ''हाँ, न्याय की दृष्टि में दोनों एक समान हैं।''

फ़कीर– ''मैं समझा नहीं कि न्याय की दृष्टि से आपका क्या मतलब है?''

दूसरा पंच– ''बस, यह है कि इस समय हम साधारण गाँववालों के रूप में आपके पास नहीं आए हैं पंचों के रूप में आपके पास उपस्थित हुए हैं।''

फ़कीर– ''तो क्या मैं अपराधी हूँ?''

तीसरा पंच– ''यह तो पंचायत का निर्णय ही बताएगा किंतु अभी हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि आपके विरुद्ध एक शिकायत है जिसकी जाँच करने के लिए पंचायत यहाँ उपस्थित हुई है।''

फ़कीर– ''किसकी शिकायत? क्या शिकायत? मैं तो आपके गाँव में किसी को नहीं जानता। न मेरा किसी से लेन-देन है, न कोई लड़ाई-झगड़ा? हम फ़कीर लोग हैं। आज यहाँ हैं कल वहाँ? समझ में नहीं आता मेरे विरुद्ध किसे शिकायत है?''

चौथा पंच– '' आप इस कुत्ते को तो जानते हैं?''

फ़कीर– ''जानता तो नहीं, हाँ इसे पिछले दोराहे पर मैंने देखा ज़रूर था।''

चौधरी– ''क्या आपने इसे मारा था?''

फ़कीर– ''हाँ, इसकी पीठ पर दो चिमटे जमाए थे।''

पहला पंच– ''क्या हम जान सकते हैं कि क्यों? क्या इसने आपका कुछ बिगाड़ा था?''

फ़कीर– ''हाँ, यह मुझे देखकर भौंका क्यों था?''

दूसरा पंच– ''यह भौंका इसलिए था क्योंकि कुत्ते का काम ही भौंकना है। यह जिसका अन्न खाता है उसके जान-माल की रक्षा के लिए भौंकता भी है और समय पड़ने पर काटता भी है।''

तीसरा पंच– ''क्या आप बता सकते हैं कि यह आपको कहाँ गुर्राया था?''

फ़कीर– ''जहाँ पगडंडी के दो रास्ते फूटते हैं वहाँ सूखे रास्ते पर यह बैठा हुआ था। मैं वहाँ से गुजरने लगा तो यह मुझ पर बहुत बुरी तरह गुर्राया।''

चौथा पंच– ''अजी, वहीं तो इसके मालिक के खेत हैं। यह अपने मालिक की अनुपस्थिति में उसके खेतों की रखवाली कर रहा था तो इसमें भला इसका क्या दोष?''

फ़कीर– ''कोई दोष नहीं।''

चौधरी– ''उसके खेतों में आप बिना किसी जान-पहचान के यूँ ही चले गए और आपने उसकी चौकीदारी में विघ्न डाला क्या यह आपका दोष नहीं?''

फ़कीर– ''हो सकता है।''

पहला पंच– ''हो सकता है–नहीं–कहिए, यह आपका दोष है! ऐसी स्थिति में यदि यह कुत्ता आप पर गुर्राया है, तो उसने गलत बात क्या की?''

फ़कीर से इस प्रश्न का कोई उत्तर देते न बना और वह धरती की ओर देखने लगा।

दूसरा पंच– ''आपको यह मानना पड़ेगा कि आपने इसे चिमटे की मार देकर इसके प्रति अन्याय किया है।''

फ़कीर अब भी चुप था।

तीसरा पंच– ''क्या आप अपना अपराध स्वीकार करते हैं?''

फ़कीर– ''आज तक मैंने कभी कुत्ते के साथ आदमी की तुलना नहीं देखी जैसे कि आप कर रहे हैं!''

चौथा पंच– ''आप नहीं, पंचायत कहिए। पंचायत यह नहीं देखती कि अपराधी किस जाति, किस धर्म या किस कुल का है। वह तो न्याय करती है और न्याय की दृष्टि में कुत्ता और आदमी एक समान हैं।''

चौधरी– ''एक समान ही नहीं, कुत्ता आदमी से श्रेष्ठ भी हो सकता है, क्योंकि वह जिसका अन्न खाता है, बदले में उसके लिए चौकीदारी भी करता है और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण तक बलिदान कर देता है। किंतु आप फ़कीर हैं और समाज के अन्न पर पलते हैं! मैं पूछता हूँ कि अन्न के बदले में आप समाज को क्या देते हैं?''

फ़कीर चुप था। अबकी बार उसकी आँखें लज्जा से धरती पर गड़ गई थीं।

पाँचों पंचों ने एक साथ निर्णय दिया– ''जो कुत्ता रोटी का एक टुकड़ा खाकर अपने स्वामी के लिए प्राण तक देने को तैयार रहता है, वह उस फ़कीर से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, जो दिन-रात समाज के अन्न पर पलता है, पर बदले में समाज का कुछ उपकार नहीं करता।''

पंचायत का यह फ़ैसला फ़कीर के केवल कानों में ही नहीं सुनाई दिया अपितु उसके हृदय में भी य हज़ार आवाज़ों में गूँज गया। वह उल्टे पाँव उसी गाँव में लौट आया और उसने अपना शेष जीव समाज-सेवा में बिता दिया।

—धर्मपाल शास

शब्द-अर्थ

अन्याय - नाइंसाफी; फरियाद - विनती, पुकार; उपकार - भलाई; अपराधी - दोषी; विघ्न - रुकावट; विरुद्ध - खिलाफ।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) चिमटे से वार खाकर कुत्ता गया–

(i) बाजार में ( ) (ii) पंचायत में ( )

(ख) पंचों ने कुत्ते की फरियाद पर–

(i) ध्यान दिया ( ) (ii) ध्यान नहीं दिया ( )

(ग) पंचायत का काम है–

(i) उपदेश देना ( ) (ii) न्याय करना ( )

(घ) चौधरी के अनुसार कुत्ता–

(i) आदमी के बराबर नहीं हो सकता ( ) (ii) आदमी से श्रेष्ठ भी हो सकता है ( )

2. किसने कहा–

(क) "आज तक मैंने कभी कुत्ते के साथ आदमी की तुलना नहीं देखी।" .....

(ख) "यह कुत्ता हमारा तो नहीं किंतु इस समय हमारे साथ अवश्य है।" .....

(ग) "लेकिन कुत्ते की तरफ से बयान कौन देगा?" .....

(घ) "यह मुझे भौंका क्यों था?" .....

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य कथनों के सामने ✗ लगाओ–

(क) फ़कीर को गाँव में किसी भी घर से भिक्षा नहीं मिली। ( )

(ख) कुत्ता फकीर को देखकर पूँछ हिलाने लगा। ( )

(ग) कुत्ता भागकर पुलिस के पास गया। ( )

(घ) पंचों ने कुत्ते के साथ सही न्याय किया। ( )

(ङ) फ़कीर अपनी गलती पर बहुत लज्जित हुआ। ( )

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) कुत्ते को पंचायत में आया देखकर चौधरी ने क्या कहा?

.....

.....

(ख) फ़कीर ने कुत्ते को चिमटा क्यों मारा था?

.....

.....

(ग) पंचायत किस दृष्टिकोण से न्याय करती है? क्या उसकी नज़र में मनुष्य और कुत्ते में अंतर माना जाता है?

.....

.....

(घ) फ़कीर ने अपना शेष जीवन कैसे बिताया?

.....

.....

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–**

(क) रास्ता – .....

(ख) फरियाद – .....

(ग) भाषा – .....

(घ) कठिनाई – .....

(ङ) आँख – .....

(च) पगडंडी – .....

2. **दिए गए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) लज्जा से गड़ना – .....

.....

(ख) नजर नीची होना – .....

.....

(ग) लाल-पीला होना – .....

.....

(घ) दाँत पीसना – .....

.....

3. **उचित कारक चिह्न भरकर वाक्य पूरे करो–**

(का, ने, को, से, ने, के लिए)

(क) फ़कीर ..... चिमटे ..... वार किया।

(ख) कुत्ते ..... पंचों ..... अपनी पीड़ा से अवगत कराया।

(ग) पंचायत ..... फैसला सबको मानना ही पड़ता है।

(घ) न्याय करने ..... सबके प्रति समान भाव रखना आवश्यक है।

4. **'गरीब' एक विशेषण है, इससे बना शब्द 'गरीबी' एक भाव प्रकट कर रहा है। किसी गुण या भाव को प्रकट करने वाले शब्द को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।**

भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर लिखो–

(क) क्रूर – .....

(ख) मूर्ख – .....

(ग) दुष्ट – .....

(घ) जड़ – .....

(ङ) सज्जन – .....

(च) चेतन – .....

कुछ करने के लिए

- 'सत्यमेव जयते' इस स्लोगन को बड़े-बड़े दोहरे अक्षरों में लिखकर कक्षा में टाँगिए।
- आपने विक्रमादित्य के न्याय की चर्चा तो सुनी ही होगी। उसकी न्याय की शैली अनोखी और सटीक थी। यदि आपने उसकी कोई कहानी सुनी है तो उसे कक्षा में सुनाइए।
- 'पशु-पक्षियों के प्रति हमारा कर्तव्य' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो। साथ ही दिए गए पशु-पक्षियों के बारे में बताइए कि ये हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं।

.....

.....

.....

.....

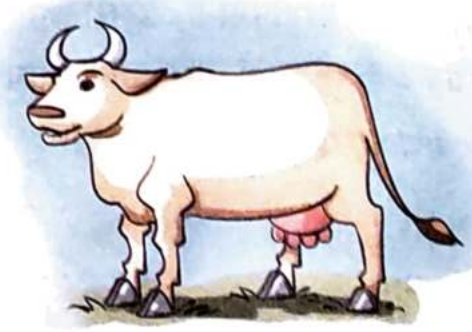

11 न्यूटन की गाथा

हमें हमेशा कठिनाइयों का सामना साहसपूर्वक करना चाहिए।
तभी हमारा नाम इतिहास के पन्नों में शामिल होगा।

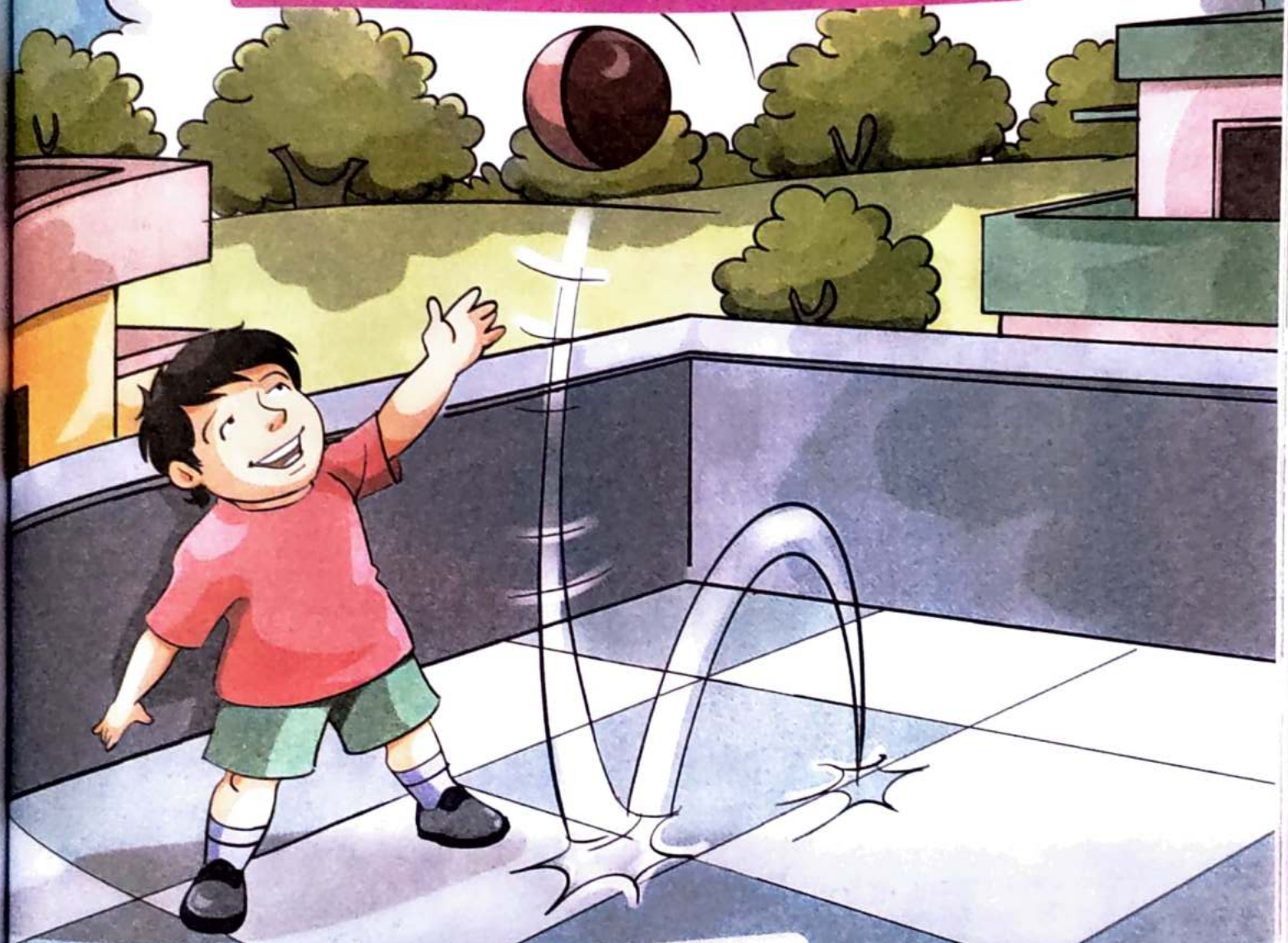

अध्यापन संकेत

- अध्यापक बच्चों को महान बनने की प्रेरणा दें तथा उन्हें महान लोगों की जीवनी पढ़कर सुनाएँ।

(कविता)

- न्यूटन का नाम विज्ञान जगत में बहुत आदर से लिया जाता है। इस कविता में उनके जीवन की कहानी बताई गई है।

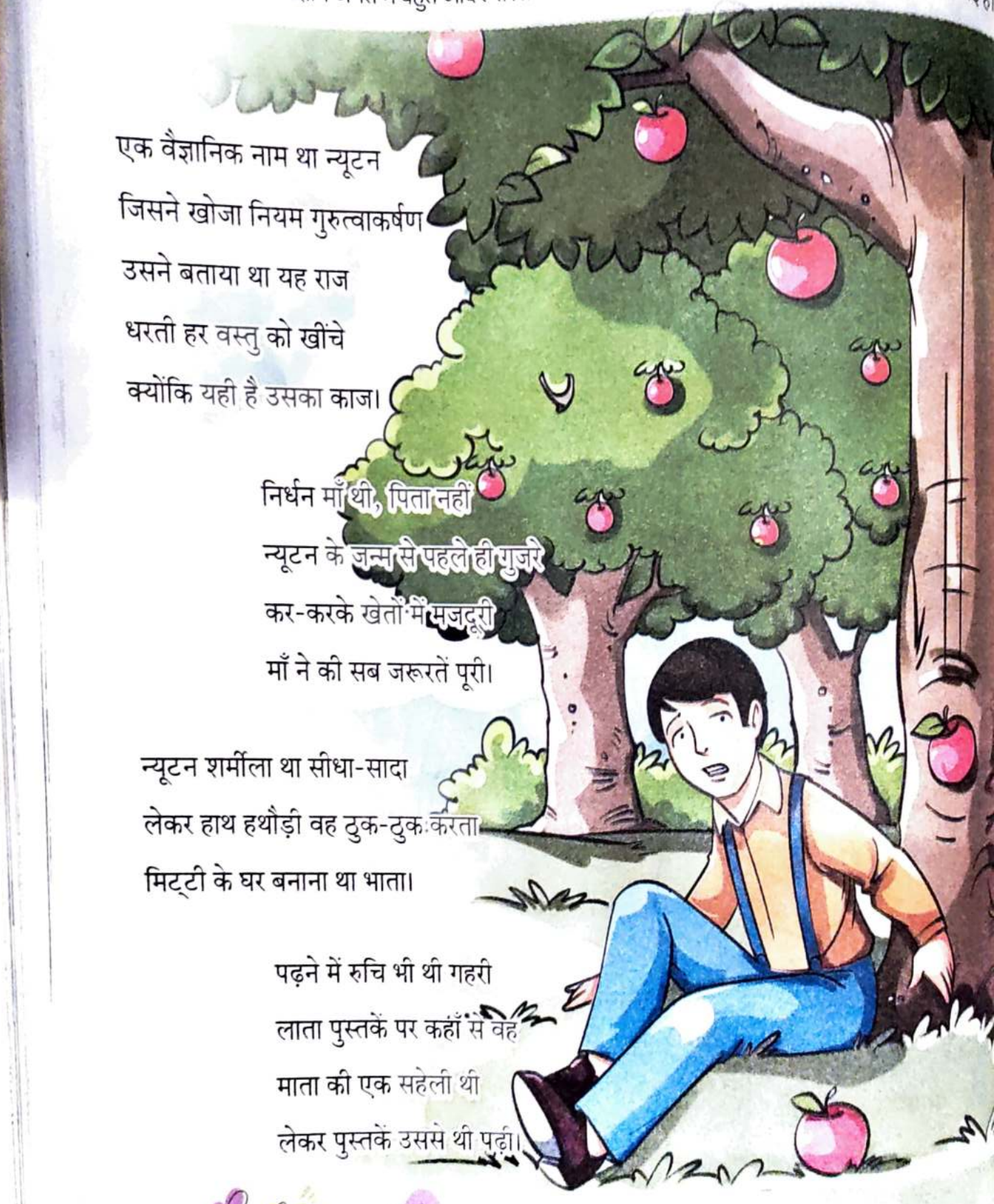

एक वैज्ञानिक नाम था न्यूटन
जिसने खोजा नियम गुरुत्वाकर्षण
उसने बताया था यह राज
धरती हर वस्तु को खींचे
क्योंकि यही है उसका काज।

निर्धन माँ थी, पिता नहीं
न्यूटन के जन्म से पहले ही गुजरे
कर-करके खेतों में मजदूरी
माँ ने की सब जरूरतें पूरी।

न्यूटन शर्मीला था सीधा-सादा
लेकर हाथ हथौड़ी वह ठुक-ठुक करता
मिट्टी के घर बनाना था भाता।

पढ़ने में रुचि भी थी गहरी
लाता पुस्तकें पर कहाँ से वह
माता की एक सहेली थी
लेकर पुस्तकें उससे थी पढ़ी।

करता था प्रश्न वह बहुत खुद से
करनी उसे खोज जरूरी थी।
अत: केवल बारह वर्ष का था
जब बनाई उसने हवाई चक्की थी।

पानी से चलने वाली घड़ी
न्यूटन ने मापी प्रकाश गति।
सुलझाई पेचीदा गुत्थी
विज्ञान की और गणित की भी।

वे विज्ञान-जगत के पिता बने
उनका आदर सब ही करते
आओ हम भी उनसे प्रेरणा लें
और अपना नाम उज्ज्वल कर दें।

—डॉ० गीता रानी

नियम - सिद्धांत; राज - रहस्य; पेचीदा - जटिल; गुत्थी - उलझन; उज्ज्वल - प्रकाशित।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) न्यूटन ने खोजा था नियम–

(i) गुरुत्वाकर्षण का ( ) (ii) मनोविज्ञान का ( )

(ख) न्यूटन की माँ–

(i) धनवान थी ( ) (ii) निर्धन थी ( )

(ग) न्यूटन का स्वभाव था–

(i) गुस्सैल ( ) (ii) शर्मीला ( )

(घ) न्यूटन विज्ञान जगत के–

(i) पिता कहलाते है ( ) (ii) पुत्र कहलाते है ( )

2. कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो–

(क) निर्धन माँ .....

..... पहले ही गुजरे

कर-करके .....

..... जरूरतें पूरी।

(ख) वे विज्ञान-जगत .....

..... ही करते

आओ हम .....

..... उज्ज्वल कर दें।

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य के सामने ✗ लगाओ–

(क) न्यूटन की माँ अध्यापिका थी। ( )

(ख) न्यूटन की रुचि खेल-कूद में थी। ( )

(ग) प्रकाश की गति मापने का कार्य न्यूटन ने किया। ( )

(घ) न्यूटन ने हवाई चक्की बनाई थी। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) न्यूटन कौन थे?

.....

.....

(ख) गुरुत्वाकर्षण का क्या नियम है?

.....

.....

(ग) न्यूटन ने अपने पढ़ने का शौक कैसे पूरा किया?

.....

.....

(घ) विज्ञान जगत में ..... का क्या स्थान है?

.....

.....

1. वाक्य बनाओ–

(क) पेचीदा – .....

(ख) गुत्थी – .....

(ग) उज्ज्वल – .....

(घ) प्रेरणा – .....

2. 'अ' उपसर्ग लगाकर नया शब्द लिखो–

(क) ज्ञात – .....अज्ञात..... (ख) बोध – .....

(ग) ज्ञान – ..... (घ) धर्म – .....

(ङ) परिचित – ..... (च) लभ्य – .....

3. 'इक' प्रत्यय लगाकर नया शब्द लिखो–

(क) विज्ञान – .....इक..... .....वैज्ञानिक.....

(ख) नीति – ....

(ग) समाज – ....

(घ) दिन – ....

(ङ) वेद – ....

4. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों के क्रम को सही करके लिखिए–

(क) नियम / खोजा / न्यूटन / गुरुत्वाकर्षण / ने / को / के / था

.....

(ख) थी / निर्धन / की / माँ / न्यूटन

.....

(ग) प्रश्न / था / वह / करता / से / खुद

.....

(घ) गति / थी / ने / की / प्रकाश / न्यूटन / मापी

.....

(रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- क्या आपकी भी विज्ञान में रुचि है? क्या आप भी नए-नए आविष्कार करना चाहते हैं? बताओ।
- सोचो और लिखो–

  यदि विद्युत का आविष्कार न होता–

  .....

  .....

  .....

  .....

- यदि टेलीविजन और फोन का आविष्कार न होता–

  .....

  .....

  .....

  .....

- पाँच वैज्ञानिकों के नाम, उनके द्वारा की गई खोज का विवरण देते हुए लिखो–

  (i) .....

  (ii) .....

  (iii) .....

  (iv) .....

  (v) .....

मूँगफली

(लेख) पठन हेतु

अमेरिका के डॉक्टर श्री एच० ब्रूस बिस्तर में पड़े हुए थे। उनके घुटने से खून बह रहा था। लाख कोशिश करने पर भी खून बंद नहीं हुआ था। उन्हें भय था कि यदि इसी तरह खून का बहना जारी रहा तो थोड़ी ही देर में उनकी मृत्यु हो जाएगी।

रात धीरे-धीरे उतर रही थी। उसके साथ ही डॉ० ब्रूस के मन में भी अंधकार बढ़ रहा था। वे शून्य में देख रहे थे। सामने मेज पर कुछ भुनी हुई मूँगफली पड़ी हुई थी। उन्होंने उसमें से मुट्ठीभर फलियाँ उठाईं और उन्हें छीलकर खाना शुरू कर दिया। मूँगफली खाते-खाते वे अपनी कुर्सी पर ही सो गए। सुबह जब उनकी नींद खुली तो उन्होंने देखा कि घुटने से खून बहना बंद हो गया है। एक ही रात में इतना बड़ा चमत्कार! उन्होंने मूँगफलियों के सिवा कुछ नहीं खाया था। तो क्या मूँगफली का ही यह प्रभाव था? डॉ० ब्रूस आश्चर्यचकित थे।

डॉ० ब्रूस वैज्ञानिक थे। उन्होंने बहुत जल्दी जान लिया कि निरंतर बहते हुए खून को रोकने में मूँगफली ने ही उनकी सहायता की है। अब तो उन्होंने उस पर विभिन्न प्रयोग आरंभ किए।

एक रोगी के गुर्दों में दस दिन से दर्द था। पेशाब के साथ बराबर खून आता था। डॉक्टर उसके शरीर में बराबर रक्त चढ़ाते थे, किंतु खून का आना बंद नहीं हो रहा था। डॉक्टर ब्रूस ने खून चढ़वाना बंद करवा दिया और रोगी को हर छह घंटे के बाद पाँच ग्राम मूँगफली का आटा खिलवाया। अगले दिन पेशाब में खून नहीं आया। तीन दिन बाद वह रोगी बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

शारीरिक शक्ति बढ़ाने में मूँगफली बेजोड़ है। मूँगफली में भोजन के अनेक तत्व जैसे कैल्शियम, लोहा, विटामिन, रिबोफ्लोबिन, फास्फोरस आदि पाए जाते हैं। मूँगफली प्रोटीन-प्रधान खाद्य है। प्रोटीन से शरीर बनता है। इसमें मांस की अपेक्षा अधिक प्रोटीन होता है और यह मांस से अच्छा तथा सस्ता भी है।

मूँगफली का तेल घी के स्थान पर काम में लाया जाता है। दुबले-पतले को मोटा बनाने में मूँगफली का तेल बड़ा उपयोगी है।

भारत में मूँगफली की उपज बहुत अधिक होती है किंतु इसका उचित उपयोग नहीं किया जाता। अधिकांशत: मूँगफली का तेल निकालकर इसकी खली पशुओं को खिला दी जाती है। इस प्रकार सारी प्रोटीन खली में चली जाती है। यदि मूँगफली का सही उपयोग किया जाए तो हमारे देश में भोजन में प्रोटीन की जो भारी कमी है, उसकी सहज ही पूर्ति की जा सकती है।

निर्धन लोगों के लिए यह विशेष लाभ की वस्तु है। गरीब लोग प्रोटीन की पूर्ति के लिए मांस, मछली, दूध, दही तथा मेवे आदि का व्यवहार नहीं कर सकते। यदि मूँगफली को भोजन में स्थान दिया जाए तो वे बहुत ही सस्ते में प्रोटीन प्राप्त कर सकते हैं।

मूँगफली का मक्खन भी बनाया जाता है। इसे लोग रोटी या बिस्कुट पर लगाकर बड़े मजे से खाते हैं। यह मक्खन घर पर भी बनाया जा सकता है। इसके लिए एक छोटी-सी मशीन होती है जिसमें मूँगफली का तेल डालकर घुमाने से मक्खन बन जाता है। इसे सलाद के साथ भी खा सकते हैं।

मूँगफली पीसकर अनेक व्यंजन बनाए जा सकते हैं। सब्जियों में इसका पिसा हुआ चूरा डालने से सब्जी बहुत स्वादिष्ट बनती है।

नाश्ते या भोजन के रूप में मूँगफली का प्रयोग बड़ी सरलता से किया जाता है। ऐसे में मुट्ठी-दो मुट्ठी मूँगफली, थोड़ा -सा गुड़, पाव-डेढ़ पाव टमाटर या गाजर या किसी मौसमी फल की आवश्यकता होती है। इस सस्ते भोजन के द्वारा खूब स्वस्थ रहा जा सकता है।

कुछ लोगों का विचार है कि मूँगफली गर्म होती है, अत: इसे गर्मियों में नहीं खाना चाहिए। यह एक भ्रम है। भोजन का काम ही शरीर को गर्मी देना है। यदि मूँगफली गर्मी देती है तो वह भोजन का ही काम करती है। अत: गर्मी से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। आप इसे हर मौसम में बिना किसी भय के खा सकते हैं।

—विट्ठलदास मोदी

12 विश्व गुरु - भारत

ज्ञान का प्रकाश जीवन को प्रसन्नता से भर देता है।

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि किस प्रकार भारत की संस्कृति गौरवशाली व महान है, हमें उसे जानना चाहिए तथा उसमें दिए आदर्शों को अपनाना चाहिए।

(कहानी)

- कभी भारत विश्व गुरु कहलाता था किंतु अब हम अपने आदर्शों को भूलते जा रहे हैं। इससे हमारी संस्कृति की जड़ें कमजोर हो रही हैं, हमें इसे रोकना चाहिए।

भारत एक ऐसा देश है जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान के लिए विश्व प्रसिद्ध है। सारे विश्व से लोग शांति की खोज में भारत आते हैं, यहाँ पर ऋषि-मुनियों ने जीवन और उसके रहस्यों की गहन खोज करने के लिए कठोर साधनाएँ की। साधना के फलस्वरूप उन्हें जो ज्ञान हुआ, उन्होंने वह अपने शिष्यों को दिया। शिष्यों ने उन्हें ग्रंथों में लिखा। वे ग्रंथ आज भी सारे विश्व का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं।

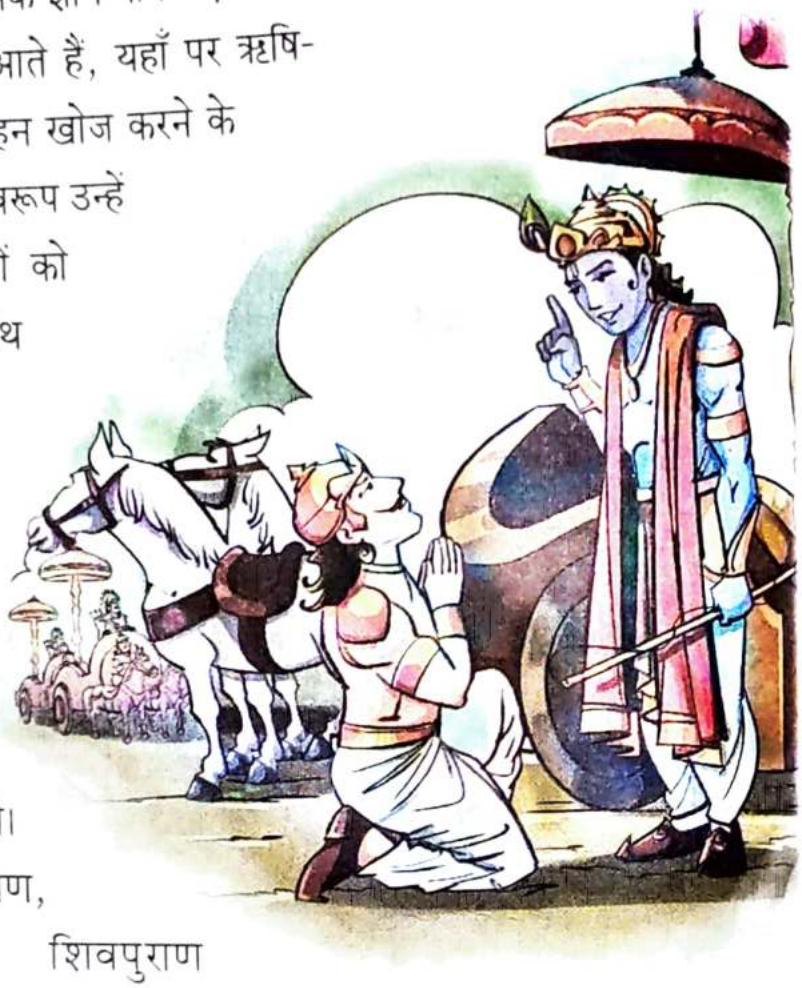

ऋषि वेदव्यास ने 'महाभारत' लिखी। श्रीकृष्ण के उपदेशों पर 'श्री भगवत् गीता' लिखी गई। पतंजलि ऋषि ने योग व आयुर्वेद पर ग्रंथ लिखा। चार वेदों की रचना भी ऋषि-मुनियों ने की। अठारह पुराण रचे गए जैसे– अग्नि पुराण, शिवपुराण, गरुड़पुराण आदि। तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' की रचना की। योग-ध्यान पर भी असंख्य ग्रंथों की रचना हुई।

इनमें मुख्य रूप से अच्छे कर्मों पर बल दिया गया जिसमें प्रेम, सेवा, परोपकार, दान आदि सद्गुणों पर बल दिया गया और बताया गया कि सभी जीवों में अमर आत्मा है। आत्मा अर्थात ऐसी शक्ति

जो कभी नष्ट नहीं होती, भले ही शरीर बूढ़ा हो जाए या मृत्यु हो जाए किंतु वास्तव में कोई नहीं मरता। व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है।

हमारे देश के महापुरुषों का विश्व में लोहा माना जाता है। महात्मा गांधी ने जो अहिंसा का सिद्धांत दिया था सारा विश्व उसे देखकर दंग रह गया और भारत के प्रति सबको श्रद्धाभाव हुआ।

पर खेद की बात है कि आज हम अपने पूर्वजों के ज्ञान और नैतिक आदर्शों को भूलकर केवल पश्चिमी देशों की तरह धन जुटाने में ही लग गए हैं, भले ही दूसरों के प्रति कितनी ही कठोरता बरतें पर किसी भी तरह स्वयं सुखी होना चाहते हैं। ऐसा होना संभव नहीं। दूसरे हम स्वच्छता की ओर भी ध्यान नहीं दे रहे हैं, जिससे हमारे गली, मुहल्ले और शहर निरंतर गंदगी से भर रहे हैं। लोगों का स्वास्थ्य भी खराब हो रहा है। अपने देश की अवहेलना करके भारत के कुछ लोग विदेशों में रहना गौरव की बात मानते हैं। जबकि अपने देश के प्रति हर नागरिक का कर्तव्य बनता है कि वह उसे सुंदर और स्वच्छ बनाए।

हमें अपनी महान संस्कृति का आदर करना चाहिए तथा अपना कार्य पूरी ईमानदारी और निष्ठा से करना चाहिए।

अपना समय व्यर्थ बातों या लड़ाई-झगड़ों में नहीं खोना चाहिए। परिश्रम व सच्चाई द्वारा ही उच्च लक्ष्य की प्राप्ति होना संभव है।

शब्द-अर्थ

आध्यात्मिक - आत्मा संबंधी; कर्तव्य - फर्ज; अवहेलना - अनदेखी; कठोरता - सख्ती; खेद - दुख; आदर्श - उत्तम उदाहरण; पथ प्रदर्शन - राह दिखाना।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) भारत प्रसिद्ध है–

(i) विज्ञान के लिए ( ) (ii) आध्यात्मिक ज्ञान के लिए ( )

(ख) आत्मा ऐसी शक्ति है–

(i) जो कभी नष्ट नहीं होती ( ) (ii) नष्ट हो सकती है ( )

(ग) पुराणों की संख्या मानी जाती है–

(i) आठ ( ) (ii) अठारह ( )

(घ) हम ध्यान नहीं दे रहे हैं

(i) धन कमाने पर ( ) (ii) स्वच्छता पर ( )

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

(क) सारे विश्व से लोग शांति की खोज में ..... आते हैं।

(ख) ..... ने महाभारत लिखी।

(ग) हमारे देश के ..... का विश्व में लोहा माना जाता रहा है।

(घ) हम ..... की ओर भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

(ङ) हमें अपनी महान ..... का आदर करना चाहिए।

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य के सामने ✗ लगाओ–

(क) देश को स्वच्छ और सुंदर बनाना केवल सरकार का काम है। ( )

(ख) भारत में वेदव्यास जी ने उद्योग धंधों का विस्तार किया। ( )

(ग) हमारे ऋषि-मुनियों के पुराने ग्रंथ आज भी सारे विश्व का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। ( )

(घ) हमें अपनी महान संस्कृति का आदर करना चाहिए। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) हमारे ऋषि-मुनियों ने किसलिए कठोर साधनाएँ की थी?

.....

.....

(ख) कुछ पुराणों के नाम लिखो।

.....

.....

(ग) आत्मा के विषय में हमारे शास्त्रों में क्या बताया गया है?

.....

.....

(घ) आजकल कुछ भारतीय किस बात में गौरव अनुभव करने लगे हैं?

.....

.....

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) ज्ञान	–	.....	(ख) शांति	–	.....
(ग) जीवन	–	.....	(घ) कठोर	–	.....
(ङ) शिष्य	–	.....	(च) मृत्यु	–	.....
(छ) अहिंसा	–	.....	(ज) पश्चिमी	–	.....
(झ) सुखी	–	.....	(ञ) संभव	–	.....

2. शब्दों के अंत में 'ओं' या 'यों' लगाकर बहुवचन बनाओ–

(क) ऋषि	–	.....ऋषियों.....	(ख) नागरिक	–	.....
(ग) गाँव	–	.....	(घ) विदेशी	–	.....
(ङ) ग्रंथ	–	.....	(च) शासक	–	.....
(छ) पुराण	–	.....	(ज) मुनि	–	.....

3. दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) लोहा-मानना – .....

.....

(ख) जमीन-आसमान एक करना – .....

.....

(ग) दाँतों तले उँगली दबाना – .....

.....

(घ) छक्के छुड़ाना – .....

.....

चर्चा आधारित

कुछ करने के लिए

- **आपके घर पर कौन-कौन से पुराने ग्रंथ हैं। उनका नाम लिखो–**

  ....

  ....

  ....

  ....

- **'देश को स्वच्छ बनाने के लिए कुछ सुझाव' इस विषय पर कक्षा में चर्चा करो–**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

काश! समझते मम्मी-पापा

(कविता) पठन हेतु

ये हिदायतें-ये शिकायतें
हे भगवान बंद करा दो।
मम्मी आती वो समझाती
पढ़ना बहुत जरूरी है,
पर क्यों वे नहीं समझती
मेरी भी मजबूरी है।
हरदम कोई पढ़ नहीं सकता
पर मम्मी से लड़ नहीं सकता।
इसीलिए चुपचाप पकड़कर
बैठ जाता हूँ पुस्तक लेकर।
काश समझते मम्मी-पापा
मुझको क्या करना है भाता।
थोड़ा-पढ़ना, थोड़ा-लिखना
थोड़ा सजना-सुंदर दिखना।
सुंदर चित्र बना सकता हूँ
गीत मधुर मैं गा सकता हूँ।
कभी नहीं शाबाशी देते
जितने भी ले आऊँ नंबर
ये तो कम है ये ही कहते!
उस पर चाहते चिढ़ूँ नहीं मैं।

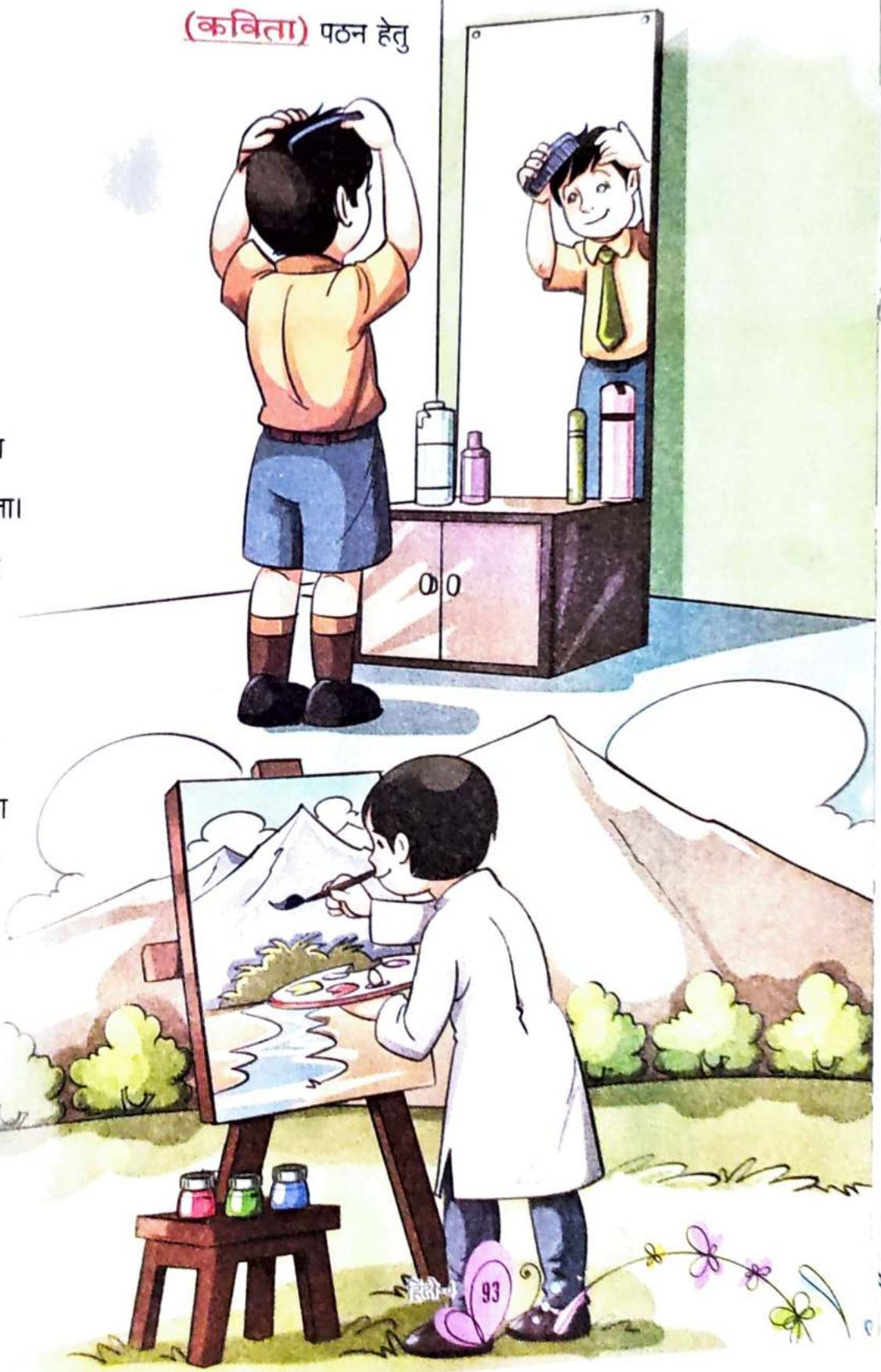

आए गुस्सा तो भिड़ूँ नहीं मैं।
ले आओ फिर एक कमंडल
सिर पर जटा बाँध लेता हूँ।
चला जाता हूँ सीधा जंगल।
सच मानो, मैं आदर करता
उनका मै आभारी भी हूँ।
पर हरदम यह टोका-टाकी
इतना तो नाकारा नहीं हूँ।
न दो महँगे कपड़े जूते
पर बगिया में तितली के पीछे
जरा भाग लेने दो मुझको
बचपन मेरा बीत न जाए
मेरा सब्र न आप आजमाएँ।
थोड़ा मुझ पर कर लीजिए भरोसा
नहीं आपको होगा धोखा।
प्यार मिले तो चढ़ूँ हिमालय
डाँटो तो चादर तान के सोता।
कृपया थोड़ा ध्यान दीजिए
मुझ पर यह एहसान कीजिए।

–डॉ गीता रानी

13 दोहे व पद

जीवन को सहज व श्रेष्ठ बनाने के लिए महान विचारकों ने समय-समय पर सुंदर वचन कहे हैं।

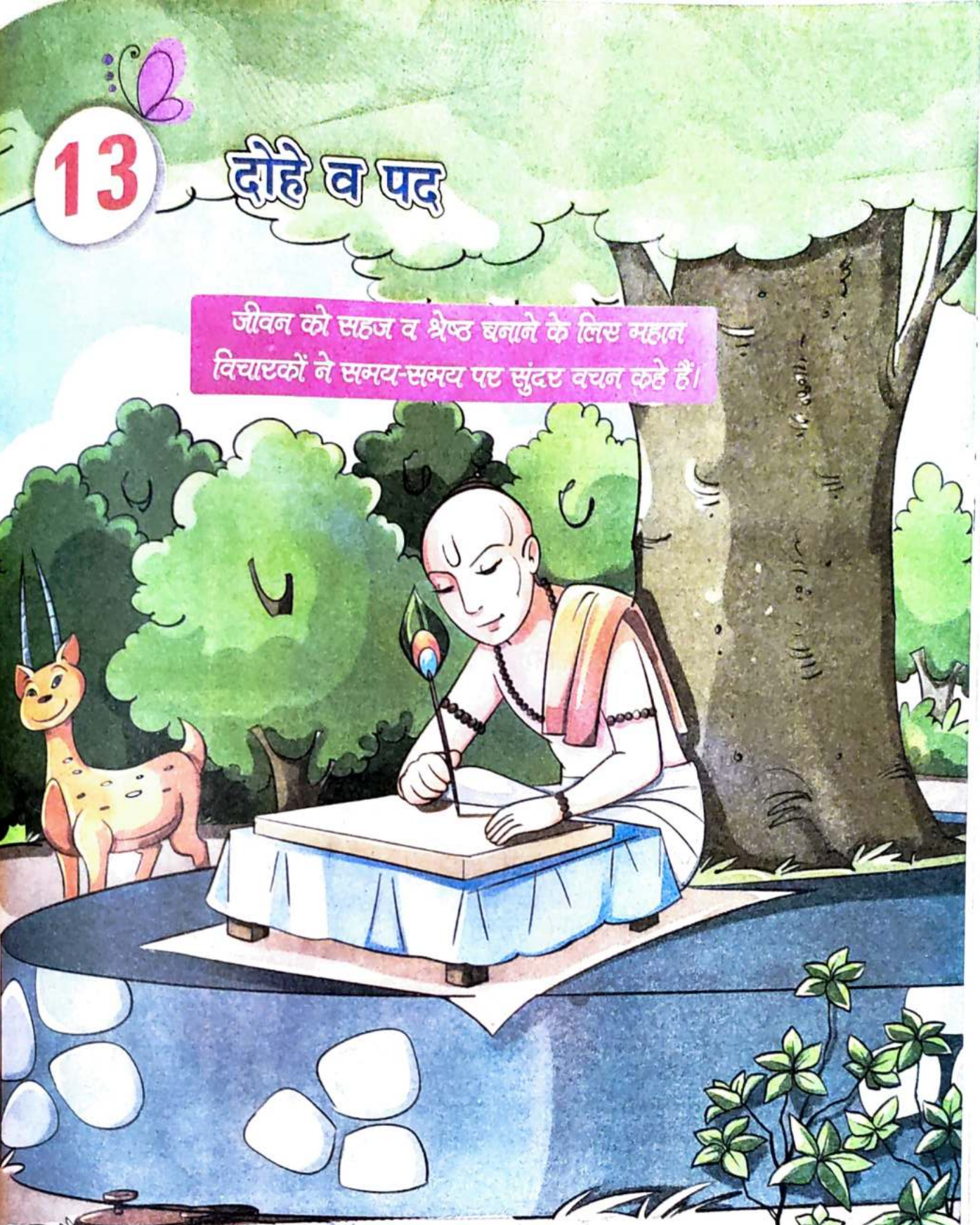

अध्यापन संकेत

- विद्यार्थियों को समझाएँ कि नीति वचन जीवन के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं।

(दैनिक प्रसंग)

- जीवन की नीति के विषय में कुछ कवियों ने बड़े, अच्छे दोहे व पद लिखे हैं। यहाँ रहीमदास व सूरदास के पद दिए जा रहे है।

रहीम (दोहे)

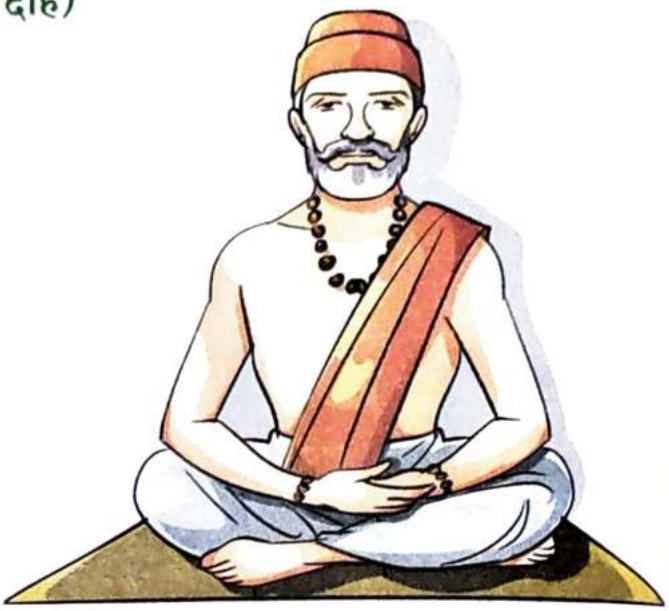

रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहें, बनत न लगी है बेर।।
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।
करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

सूरदास (पद)

कहन लगे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सों बाबा-बाबा, अरु हलधर सों भैया।
ऊँचे चढ़ि-चढ़ि कहत जसोदा, लै लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहुँ लला रे, मारेगी काहू की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजत बधैया।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस को, चरननि की बली जैया।

शब्द-अर्थ

बेर - देर; कुसंग - बुरी संगत; व्यापत - प्रभाव; भुजंग - साँप; जड़मति - मूर्ख; सुजान - ज्ञानवान; रसरी - रस्सी; सिल - शिला, पत्थर,; सों - को; कौतूहल - कुछ नया जानने व देखने की इच्छा।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) अच्छे व्यक्ति को नहीं बिगाड़ सकता–

(i) सत्संग ( ) (ii) कुसंग ( )

(ख) अभ्यास करते रहने से मूर्ख

(i) भी विद्वान बन जाते हैं ( ) (ii) सुधरते नहीं ( )

(ग) मोहन नंद जी को कहते थे–

(i) बाबा-बाबा ( ) (ii) पिता जी ( )

(घ) यशोदा डरती थी कि कृष्ण को–

(i) कोई थप्पड़ न मार दे ( ) (ii) कोई गाय न मार दे ( )

2. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–

(क) रहिमन चुप ह्वै ..... फेर,

..... बनत न लगी है बेर।

(ख) करत-करत अभ्यास .....

..... निसान।

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य के सामने ✗ लगाओ–

(क) चंदन के पेड़ पर साँप लिपटे रहते हैं। ( )

(ख) लगातार अभ्यास करने से भी मूर्ख बुद्धिमान नहीं बनता। ( )

(ग) चुप होकर दिनों के फेर को देखना चाहिए। ( )

(घ) मोहन नंद को बापू कहते हैं। ( )

(ङ) यशोदा कृष्ण से दूर जाकर खेलने के लिए मना करती हैं। ( )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) काम बनने में कब देर नहीं लगती?

.....

.....

(ख) चंदन पर साँप लिपटने का क्या प्रभाव पड़ता है?

.....

.....

(ग) रस्सी को लगातार रगड़ लगने से पत्थर पर क्या पड़ जाता है?

.....

.....

(घ) यशोदा कन्हैया को ऊपर चढ़कर क्या कहती है?

.....

.....

भाषा की बात

1. तुक मिलाओ–

(क) फेर ..... (ख) मैया .....

(ग) कुसंग ..... (घ) कन्हैया .....

(ङ) सुजान ..... (च) बधैया .....

2. समानार्थी शब्द लिखो–

(क) खेल – ....

(ख) सर्प – ....

(ग) उत्तम – ....

(घ) चरण – ....

3. विलोम शब्दों को मिलाओ–

(क) कुसंग	(i) बुरे
(ख) भले	(ii) अमृत
(ग) विष	(iii) अनीति
(घ) सहज	(iv) सत्संग
(ङ) नीति	(v) दुर्लभ

कुछ करने के लिए

- दिए गए दोहों को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाओ।
- सूरदास, रहीमदास व कबीरदास के कुछ अन्य पद ढूँढ़कर लिखो।

14 बहादुर योद्धा : भीम

बलवानों की शोभा निर्बल की रक्षा करने में है उन्हें सताने में नहीं।

अध्यापन संकेत

- कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों में दुर्बलों की रक्षा करने का भाव उत्पन्न करें।

(कहानी)

- सभी पांडव बहुत वीर थे। वे हमेशा जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए तैयार रहते थे। यहाँ पर इसी प्रकार का एक वर्णन दिया गया है—

राजा पांडु के पाँच बेटे थे– युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। पाँचों भाइयों में भीम सबसे अधिक बहादुर और बलवान था।

एक बार वन में घूमते-घूमते पाँचों पांडव अपनी माता कुंती के साथ एक गाँव में पहुँचे। वे एक ब्राह्मण के घर में ठहरे।

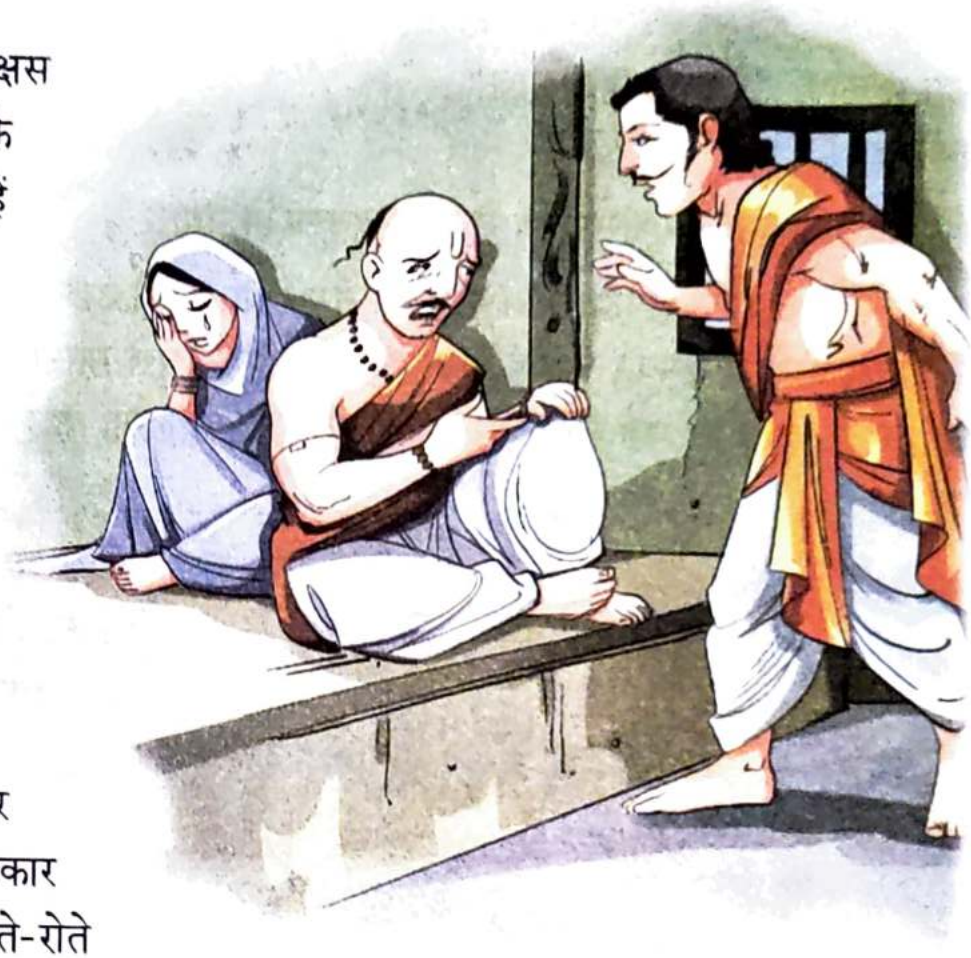

गाँव के पास ही वन में एक राक्षस रहता था। गाँववाले उस राक्षस के अत्याचारों से बहुत परेशान थे। उन्हें प्रतिदिन ढेर सारा भोजन और एक जीवित आदमी खाने के लिए राक्षस के पास भेजना पड़ता था।

एक दिन ब्राह्मण के पुत्र की बारी आई। ब्राह्मण का केवल एक ही पुत्र था। ब्राह्मण और उसकी पत्नी विलाप कर रहे थे। रात को उनके इस प्रकार रोने की आवाज़ सुनकर भीम उनके पास गया और इस प्रकार रोने का कारण पूछा। ब्राह्मणी ने रोते-रोते सारी बातें बता दी।

भीम ने कहा, "आप रोइए मत। कल आपके पुत्र के स्थान पर राक्षस के पास मैं जाऊँगा।"

ब्राह्मणी बोली, "नहीं नहीं, मैं अपने पुत्र की जान बचाने के लिए किसी दूसरे के पुत्र की जान खतरे में नहीं डाल सकती।"

भीम बोला, "आप चिंता न करे। मुझे कुछ नहीं होगा"।

अगले दिन भीम ढेर सारा भोजन गाड़ी में लादकर राक्षस के पास पहुँचा। वह आराम से बैठकर खुद भोजन करने लगा। यह देखकर उस राक्षस को बड़ा क्रोध आया। वह बोला, "तेरी यह हिम्मत, यह क्या कर रहा है?"

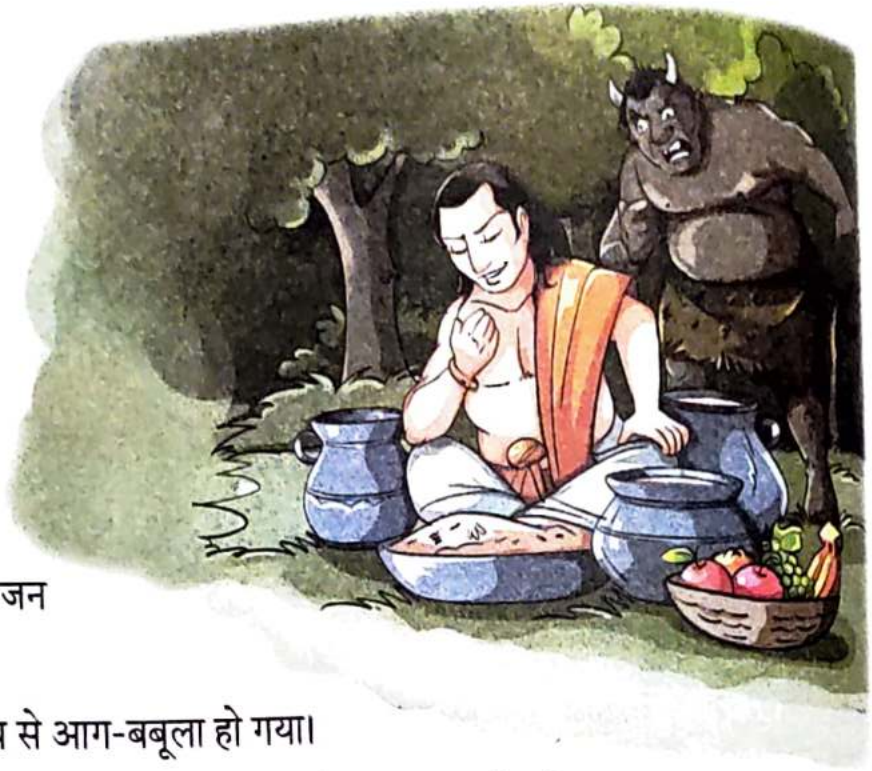

भीम ने कहा, "देखता नहीं, भोजन कर रहा हूँ।"

भीम की बात सुनकर राक्षस क्रोध से आग-बबूला हो गया।

वह भीम पर तेज़ी से झपटा। भीम पहले से तैयार था। उसने उछलकर ज़ोर से एक लात राक्षस की कमर में जमाई। दोनों में जमकर लड़ाई शुरू हो गई। भीम ने घूँसे मार-मार कर राक्षस को अधमरा कर दिया। वह उसकी छाती पर चढ़ बैठा और उसका गला दबाने लगा। कुछ ही मिनटों में राक्षस की जान निकल गई।

भीम गाड़ी लेकर वापिस आ गया। जब गाड़ी वापिस गाँव पहुँची तो भीम को जीवित देखकर गाँववालों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

राक्षस की मृत्यु की खबर सुनकर गाँववाले खुशी से नाचने लगे। ब्राह्मणी ने भीम को हृदय से लगा लिया। कुंती भी बहुत खुश थी कि उसके बहादुर पुत्र ने राक्षस को मारकर सारे गाँव का भला किया। अपने पुत्र को गले लगाते हुए कुंती ने कहा, "पुत्र, मुझे तुम पर गर्व है।" सचमुच भीम बहादुर योद्धा था।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) राजा पांडु के पुत्र थे–

(i) सात ( ) (ii) पाँच ( )

(ख) पाँचों भाइयों में सबसे बलवान था–

(i) भीम ( ) (ii) युधिष्ठिर ( )

(ग) गाँव के लोग परेशान थे–

(i) राजा से ( ) (ii) राक्षस से ( )

(घ) राक्षस को मारकर भीम ने भला किया–

(i) अपना ( ) (ii) गाँववालों का ( )

2. रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–

(क) राक्षस गाँववालों को ..... था। (सताता/जलाता)

(ख) भीम ने राक्षस से गाँववालों की ..... की। (प्रार्थना/रक्षा)

(ग) राक्षस के मरने की खबर पाकर गाँववाले ..... लगे। (लड़ने/नाचने)

(घ) कुंती भीम के कार्य से ..... हुई। (खुश/दुखी)

3. सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य के सामने ✗ लगाओ–

(क) पाँचों पांडवों में भीम सबसे कमजोर था। ( )

(ख) गाँव के पास ही वन में एक राक्षस रहता था। ( )

(ग) ब्राह्मण के केवल एक ही पुत्र था। ( )

(घ) भीम भोजन की गाड़ी छोड़कर वापस चला आया। ( )

(ङ) भीम ने राक्षस को मार डाला। ( )

4. किसने कहा–

(क) "मैं अपने पुत्र को बचाने के लिए किसी दूसरे के पुत्र की जान खतरे में नहीं डाल सकती।" .....

(ख) "आप चिंता न करे। मुझे कुछ नहीं होगा।" .....

(ग) "तेरी यह हिम्मत, यह क्या कर रहा है?" .....

(घ) "पुत्र, मुझे तुम पर गर्व है।" .....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) गाँववालों को राक्षस के पास क्या भेजना पड़ता था?

.....

.....

(ख) ब्राह्मण और ब्राह्मणी के रोने का क्या कारण था?

.....

.....

(ग) भीम ने रोते हुए ब्राह्मण और ब्राह्मणी को क्या कहकर धीरज बँधाया?

.....

.....

(घ) भीम और राक्षस की लड़ाई का वर्णन करो।

.....

.....

भाषा की बात

1. सही स्थान पर लिखो–

गाड़ी, भोजन, ब्राह्मण, लात, घूँसा, खुशी, भय, गीत, ढोल, आरती

स्त्रीलिंग	पुल्लिग
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो–**

(क) बहादुर – ..... (ख) जीवित – .....

(ग) रात – ..... (घ) खुशी – .....

(ङ) भला – ..... (च) पुत्र – .....

3. **सुमेल करो–**

(क) प्रशंसा के योग्य	(i) निंदनीय
(ख) निंदा के योग्य	(ii) अत्याचारी
(ग) अत्याचार करने वाला	(iii) विरोधी
(घ) उपकार करने वाला	(iv) प्रशंसनीय
(ङ) विरोध करने वाला	(v) उपकारी

4. **दिए गए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) आश्चर्य का ठिकाना न रहना – .....

.....

(ख) आग-बबूला होना – .....

.....

(ग) नाकों चने चबवाना – .....

.....

(घ) माथे पर बल पड़ना – .....

.....

5. **निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों के क्रम को सही करके लिखो–**

(क) घर / के / ठहरे / में / वे / ब्राह्मण / एक

.....

(ख) ब्राह्मण / एक / पुत्र / दिन / बारी / के / आई / की

.....

(ग) राक्षस / क्रोध / यह / आया / देखकर / को / बड़ा

.....

(घ) लड़ाई / दोनों / शुरू / जमकर / में / गई / हो

.....

(ङ) बहादुर / भीम / था / योद्धा / सचमुच

.....

कुछ करने के लिए

- इसी प्रकार की महाभारत की ये कथाएँ भी पढ़ो–
  (क) अर्जुन का चिड़िया को निशाना लगाना।
  (ख) भीष्म का शर शैय्या पर लेटना।
- नागरिकों की रक्षा के लिए कानून और पुलिस है। पुलिस आम आदमी की क्या-क्या सहायता कर सकती है, बताओ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

दया की देवी

(चित्रकथा)

सन् 1820 में इटली के फ्लोरेंस नामक नगर में
बधाई हो सेठानी जी, पुत्री का जन्म हुआ है
मेरी किस्मत कितनी अच्छी हैं, मेरी बिटिया महारानी बनेगी। हमारे पास भी धन की कोई कमी नहीं। यह तो बस ठाठ से रहेगी।
माँ, जब मैं किसी को उदास, दुखी या बीमार देखती हूँ तो अच्छा नहीं लगता
इसमें तुम्हारा क्या कसूर, उनकी किस्मत।
नहीं माँ, मैं उनकी सेवा करूँगी, उनको धीरज दूँगी।
तो क्या तुम नर्स बनोगी?
ये क्या बेकार की बातें सोच रही हो, खाओ पिओ, मौज करो।
हाँ, माँ जैसे भी हो मुझे उनको सुख देना है।
नहीं माँ मैं नर्स ही बनूँगी।

मैं नर्स का प्रशिक्षण लेकर अपना काम शुरू कर दूँगी।
हाय! मर गया, गोली पाँव में लगी है बहुत दर्द हो रहा है।
घबराओ नहीं, अभी मर
पट्टी करती हूँ।
हाँ, अब पीड़ा कम है। आप सचमुच दया की देवी हैं।
वह देखो लैंप लेकर दयालु देवी आ रही है।
सच कहते हो, फरिश्ते जैसी लड़की कितने प्रेम से सेवा करती है। ईश्वर इसका भला करे।
यही नर्स फ्लोरेंस नाइटिंगल के नाम से विश्व भर में दया व सेवा
लिए प्रसिद्ध हुई। आज भी लोग इन्हें श्रद्धा से याद करते हैं।

प्रश्न पत्र - I

(पाठ 1 से 7)

1. सही उत्तर पर (✓) लगाओ–

(क) हमें बढ़ते रहना चाहिए–

(i) कभी-कभी ( ) (ii) अनवरत ( )

(ख) बच्चे इंदु को कहते थे–

(i) फिसड्डी ( ) (ii) सयानी ( )

(ग) द्रोपदी ने दुर्योधन को वचन कहे–

(i) कटु ( ) (ii) मधुर ( )

(घ) इंदु ने नमिता को कहा–

(i) चालाक ( ) (ii) दयालु ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) शत्रु के प्रति हमारा क्या भाव होना चाहिए?

.....

(ख) द्रोपदी ने दुर्योधन का क्या कहकर उपहास किया?

.....

(ग) हमें जो चाहिए क्या उसे पाने के लिए हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए?

.....

(घ) झगड़ों से किस प्रकार बचा जा सकता है?

.....

3. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाओ–

(क) सांत्वना – .....

(ख) प्रयास – .....

(ग) मनोयोग – .....

(घ) व्याख्यान – .....

4. विलोम शब्दों को मिलाओ–

(आ)	(ब)
(क) अहिंसा	(i) दयालुता
(ख) क्रूरता	(ii) अशांति
(ग) मैत्री	(iii) सम्मान
(घ) शांति	(iv) शत्रुता
(ङ) अपमान	(v) हिंसा

5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो–

(क) अत्याचार करने वाला – ..... (ख) हिंसा करने वाला – .....

(ग) शांति पसंद करने वाला – ..... (घ) बैर रखने वाला – .....

6. कविता की पंक्तियाँ पूरी करो–

अपने हर दुख .....

..... पाता है।

काट गिराता .....

..... खाता है।

7. बहुवचन लिखो–

(क) गोला – ..... (ख) स्त्री – .....

(ग) जामुन – ..... (घ) सलाई – .....

(ङ) चिंता – ..... (च) आवाज – .....

8. प्रेरणार्थक क्रिया लिखो–

(क) काटना – ..... (ख) कहना – .....

(ग) माँगना – ..... (घ) मिलना – .....

9. 'मेरी पसंद का मौसम' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखो।

.....

.....

10. महात्मा बुद्ध की पाँच शिक्षाओं का वर्णन करो।

(क) ..... (ख) .....

(ग) ..... (घ) .....

(ङ) .....

प्रश्न पत्र - II

(पाठ 8 से 14)

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) राजा पांडु के पुत्र थे–

(i) पाँच ( ) (ii) सात ( )

(ख) अच्छे व्यक्ति को नहीं बिगाड़ सकता–

(i) सत्संग ( ) (ii) कुसंग ( )

(ग) यशोदा डरती थी कि कोई कृष्ण को–

(i) कोई थप्पड़ न मार दे ( ) (ii) कोई गाय न मार दे ( )

(घ) आत्मा ऐसी शक्ति है जो कभी–

(i) नष्ट नहीं होती ( ) (ii) नष्ट हो सकती है ( )

2. **रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–**

(क) रहिमन चुप ह्वै .....

..... बेर।

(ख) करत-करत अभ्यास .....

..... निसान

3. **सत्य कथनों के सामने ✓ तथा असत्य कथनों के सामने ✗ लगाओ–**

(क) देश को स्वच्छ और सुंदर बनाना केवल सरकार का काम है। ( )

(ख) भारत में वेदव्यास जी ने उद्योग धंधों का विस्तार किया। ( )

(ग) हमें अपनी महान संस्कृति का आदर करना चाहिए। ( )

(घ) हमारे ऋषि-मुनियों के पुराने ग्रंथ आज भी विश्व का पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। ( )

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) रस्सी की लगातार रगड़ पड़ने से पत्थर पर क्या पड़ जाता है?

.....

(ख) चंदन पर साँप लिपटने का क्या प्रभाव पड़ता है?

.....

(ग) कुछ पुराणों के नाम लिखो।

.....

(घ) हमारे ऋषि-मुनियों ने किसलिए कठोर साधनाएँ की थीं?

.....

5. दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) लोहा मानना – .....

.....

(ख) जमीन-आसमान एक करना – .....

.....

(ग) दाँतों तले उँगली दबाना – .....

.....

(घ) छक्के छुड़ाना – .....

.....

6. वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो–

(क) प्रशंसा के योग्य – ..... (ख) निंदा के योग्य – .....

(ग) अत्याचार करने वाला – ..... (घ) उपकार करने वाला – .....

(ङ) विरोध करने वाला – .....

7. समानार्थी शब्द लिखो

(क) खेल – ..... (ख) सर्प – .....

(ग) उत्तम – ..... (घ) चरण – .....

8. 'ओं' या 'यों' लगाकर बहुवचन बनाओ–

(क) गाँव – ..... (ख) नागरिक – .....

(ग) ग्रंथ – ..... (घ) विदेशी – .....

(ङ) पुराण – ..... (च) शासक – .....

9. 'अ' उपसर्ग लगाकर लिखो–

(क) ज्ञान – ..... (ख) बोध – .....

(ग) परिचित – ..... (घ) धर्म – .....

10. (क) 'काश! समझते मम्मी-पापा' कविता में बच्चा मम्मी-पापा को क्या समझाना चाहता है?

(ख) आपके घर पर कौन-कौन से पुराने ग्रंथ हैं? बताओ।

(ग) 'देश को स्वच्छ' रखने के लिए कुछ सुझाव लिखो।

.....

.....